जे० बी० मंघाराम के

एनर्जी फूड

बिस्कुट

J.B.MANGHARAM & CO.

GWALIOR-HYDERABAD (INDIA)

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

मई १९६७

आभार : डा. देशदीपक

www.kissekahani.com

जे० बी० मंघाराम के

एनर्जी फूड बिस्कुट

J. B. MANGHARAM & CO.

GWALIOR-HYDERABAD (INDIA)

पराग

मई १९६७
१११ वां अंक

फोटो : देवदास 'कुसुम'

www.kissekahani.com

अनुक्रमणिका

मुखपृष्ठका चित्र—

ममताकी गोदीमें : विद्याव्रत १

मजेदार कहानियां—

जंगलकी राजकुमारी : अशोक अग्रवाल १२
मामाके घर जाएंगे : सईद २४
रेल-यात्रामें : अवतारसिंह २८
अठन्नी : स्वतंत्र ३६
वक्तकी बात : वीरकुमार 'अधीर' ४०

चटपटी कविताएं—

गरमीके दिन : सीताराम गुप्त ४
हरियल तोता : कल्याणकुमार जैन 'शशि' ५
नई ोड़की तैयारी : जगदीशचंद्र शर्मा ३१
खेल और रेल : भीष्मसिंह चौहान ५६
पढ़ूं भला क्या? : विष्णुकांत पांडेय ५६
बेसूंड़ हाथी : रघुवीर सहाय ५७
अनोखा घोड़ा : सुधाकर दीक्षित ५७

हास्य एकांकी—

शरारत : मिर्जा अदीब ८

धारावाही उपन्यास—

शेरका पंजा–२ : अवध अनुपम १६

मनोहर कार्टून-कथाएं—

छोटू और लंबू : शेहाब २०
हप्पूका हुड़दंग : पांडे ३२

अन्य रोचक सामग्री—

जासूस बिल्ली (फोटो कथा) : देवीदास कसबेकर २२
बताओ तो जानें : आर. के. सी. ३०
वैज्ञानिक खेल : अवधेश ३९
इक्वेडोरके डाक-टिकट (लेख) : गुरुचरण वोहरा ४४
सर आइजक न्यूटन (लेख) : शीला इन्द्र ४६

स्थायी स्तंभ—

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
छोटी छोटी बातें : सिम्स १५
जीनेकी कला–८ : अलकारानी जैन ३४
कहो कैसी रही : अर्चना ४८
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ५२
रंग भरो प्रतियोगिता-६१ : 'पराग' कला विभाग ५९

शुल्क तालिका :

अवधि	स्थानीय	देशमें डाकसे	विदेशमें समुद्री डाकसे
१२ महीने	रु. ६.००	रु. ६.२५	पौंड ०.१०.१०
६ महीने	रु. ३.००	रु. ३.१५	" ०. ५. ४
३ महीने	. १.५०	रु. १.६०	" ०. २. ८

एक प्रति : ५० पैसे; विदेशमें पौंड ०.०.१०

गरमी के दिन

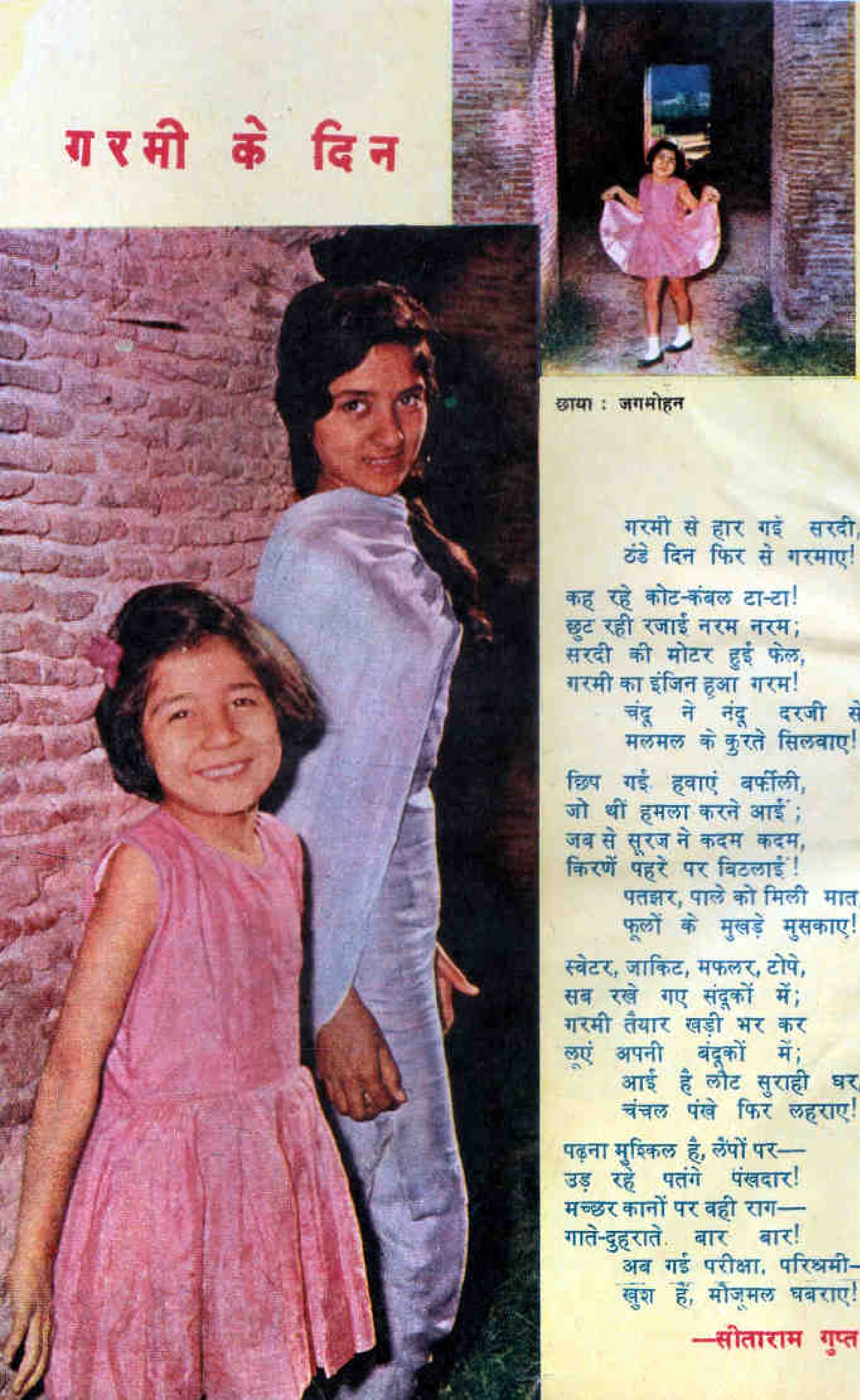

छाया : जगमोहन

गरमी से हार गई सरदी,
ठंडे दिन फिर से गरमाए!

कह रहे कोट-कंबल टा-टा!
छुट रही रजाई नरम नरम;
सरदी की मोटर हुई फेल,
गरमी का इंजिन हुआ गरम!
चंदू ने नंदू दरजी से
मलमल के कुरते सिलवाए!

छिप गईं हवाएं बर्फीली,
जो थीं हमला करने आईं;
जब से सूरज ने कदम कदम,
किरणें पहरे पर बिठलाईं!
पतझर, पाले को मिली मात,
फूलों के मुखड़े मुसकाए!

स्वेटर, जाकिट, मफलर, टोपे,
सब रखे गए संदूकों में;
गरमी तैयार खड़ी भर कर
लूएं अपनी बंदूकों में;
आई है लौट सुराही घर,
चंचल पंखे फिर लहराए!

पढ़ना मुश्किल है, लैंपों पर—
उड़ रहे पतंगे पंखदार!
मच्छर कानों पर वही राग—
गाते-दुहराते बार बार!
अब गई परीक्षा, परिश्रमी—
खुश हैं, मौजूमल घबराए!

—सीताराम गुप्त

छाया : 'पराग' कला विभाग

हरियल तोता

दादी ने तोता पाला था,
राम नाम रटने वाला था,
उसका एक पंख काला था,
यह है उस तोते का पोता!
हरियल तोता, हरियल तोता!

मेरी दादी है अक्लमंद,
है मुझे खिलाती कलाकंद,
तोते को है यह नापसंद,
दादी की बातों पर रोता!
हरियल तोता, हरियल तोता!

इसको भाषण की धुन लगती,
टें-टें की रट कभी न थमती,
पर बिल्ली से फ़ंक सरकती!
उसके डर से हिम्मत खोता!
हरियल तोता, हरियल तोता!

गरमी-सरदी सब सहता है,
सबसे राम राम कहता है,
हरदम चौकन्ना रहता है,
दोनों नेत्र खोलकर सोता!
हरियल तोता, हरियल तोता!

चूनू जो इसको देता है,
चोंच बढ़ा कर ले लेता है,
नन्हे-मुन्नों का नेता है!
सबसे कर लेता समझौता!
हरियल तोता, हरियल तोता!

—कल्याणकुमार 'शशि'

कुछ अटपटे चटपटे

देवप्रकाश जोशी, कटनी :

टेलीफोनका आविष्कारक तो एडीसन था, पर आपकी दाढ़ीका?

'पराग'!

प्रदीपकुमार शर्मा, उज्जैन :

राजनीतिक पार्टी और भोजन पार्टीमें क्या अंतर है?

पहले किस्मकी पार्टीमें बोलने वाले मैदान मार ले जाते हैं, जबकि दूसरीमें चुप रहने वाले!

सुनीलकुमार वर्मा, मंदसौर :

दुश्मनकी मदद कैसे करें?

पुलिसको अपने इरादेकी सूचना देकर!

बृजकिशोर शर्मा, डिबाई :

किसी सख्त बीमारके लिए दवाका महत्व अधिक है या दुआका?

डाक्टरके बिलका!

नानकराम रामनानी, पुरानी इटारसी :

अमेरिकासे मंगाए गए लाल गेहूंको खानेसे क्या हम भी लाल हो सकते हैं?

इससे भी ज्यादा हो सकते हैं—लालची!

विजयकुमार अग्रवाल, बाराद्वार :

यदि आप जीवन भर प्रश्नोंके उत्तर देते देते पागल हो गए, तो?

यह तभी संभव हो सकता है जब हम पागलोंके प्रश्नोंका उत्तर देते रहें!

चंद्रशेखर आनंद, नई दिल्ली–५ :

मूर्ख परिणाम नहीं देखता— कारण?

क्योंकि इससे उसकी ही मूर्खताका दीवाला पिट जाएगा!

सलीमअहमद, मुजफ्फरनगर :

दुनियामें सबसे खूबसूरत चीज कौनसी है?

बचपन!

सुनीलकुमार सक्सेना, कानपुर :

बालहठ और त्रियाहठमें क्या अंतर है?

पहलेमें ललक होती है, दूसरेमें कलक!

चन्दनकुमार, आरा :

हम सभी बच्चे मिलकर अगर 'बाल प्रांत' बनानेके लिए अनशन शुरू कर दें, तो सरकार क्या करेगी?

चाट, चाकलेट, आइसक्रीम बेचने वालोंको तुम्हारे विरुद्ध मोर्चेपर तैनात कर देगी!

रोबिनसन, कुचामन रोड :

मैं चांद तक पहुंचना चाहता हूं, क्या करूं?

पूर्णमासीकी रातको थालीमें पानी भरो, खुली छत-पर रखो और एक छलांग पानीमें लगाओ!

एस. आनंद, रायगढ़ :

संसारी और संन्यासीमें श्रेष्ठ कौन है?

जिसके दोनों पैर एक ही नावमें हों!

विजय दवे, रांची :

लोग खासकर स्नान-घरमें क्यों गाते हैं?

ताकि पड़ोसी पड़ोस छोड़कर न भाग खड़े हों!

भारतभूषण, मेरठ कैंट :

जब हम रबरसे कागजपर कोई अनुचित वाक्य मिटाते हैं, तो रबर घिसता है या कागज?

क्रिकेट टैस्ट मैचका कोई रबर जीतकर स्वयं देख लो!

राजेन्द्र राय, जगदलपुर :

कैंची बाल काटते समय क्या बोलती है?

'सवा रुपया देना पड़ेगा!'

विमलकुमार, पटना :

मनुष्यको इस दुनियामें क्या कर दिखलाना चाहिए?

कि उसने अपनी मनुष्यता कभी नहीं खोई!

अजयकुमार द्विवेदी, लखनऊ :

जब मनुष्य अपनी खोपड़ी घुटाता है, तो दूसरे मनुष्य उसकी तुलना चांदसे करते हैं, सूरजसे क्यों नहीं?

इसलिए कि कहीं उसपर हाथ पड़नेसे जल न जाए!

जयन्त चौहान, मेरठ :

आजकल मनुष्यकी अपेक्षा रुपयेको अधिक प्रधानता क्यों दी जाती है?

सौ बेटोंका बाप होनेके कारण!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा न भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

राजकुमार, गड़हरा (मुंगेर) :

मनुष्य आरामकी तलाशमें अपने आपको थका क्यों डालता है?

जिससे कि आरामसे आराम कर सके!

तोलेटी रामप्रसाद राव, कटंगी :

छोटोंपर हाथ उठाना कायरता है, किंतु हमारे अध्यापक जो कि हमसे बड़े हैं, वे हम जैसे छोटे विद्यार्थियोंपर हाथ क्यों उठाते हैं?

अगले वर्ष भी तुम्हें अपनी कक्षामें देखनेके भयसे!

कृष्णकुमारी, कलिम्पोंग :

अक्लकी शक्ल कैसी होती है?

जैसी हर रोज हर कोई शीशेमें देखता है!

पत्नीको पतिकी बायीं ओर क्यों बिठाया जाता है?

इसलिए कि कमसे कम दायां हाथ तो स्वाधीन रहे!

विजयकुमार सिंह, पटना–६ :

दुनियाकी सबसे बदसूरत चीज क्या है?

इस दुनियामें कोई चीज इतनी बदसूरत नहीं कि उसकी तुलना न हो सके!

कृष्णगोपाल, गोरखपुर :

यदि आपको देशके लिए सोना और खूनमेंसे एकको ही देना हो, तो आप क्या देना उचित समझेंगे?

सोना—खून तो अस्पतालवाले हंसते हंसते निकाल ले जाते हैं!

मोनिस मलिक, कलकत्ता – १ :

हर काम बिगड़ बहुत जल्दी जाता है, परंतु सुधरता बहुत देरमें है, ऐसा क्यों होता है?

क्योंकि सुधारनेका काम हमेशा सिलसिलेवार करना होता है, बिगाड़नेका कभी कभी!

पवन टण्डन, फैजाबाद :

यह सरकार व्रतके त्योहार और क्यों नहीं बढ़ा देती, जिससे देशका अन्न बच सके?

क्योंकि देशमें अन्नके साथ साथ मिठाईकी भी कमी है, जिसे बच्चा लोग व्रत रख रखकर चट करनेकी फिकरमें रहते हैं!

शंकरलाल खेतान, सुरिया :

मगरमच्छके आंसू कब निकलते हैं?

जब वह अपने पेटमें पहुंचे प्राणियोंके दुःखसे द्रवित हो उठता है!

भगवान शाह कुमावत, चित्तौड़गढ़ :

नेताओंके भाषणमें तालियां क्यों बजती हैं?

जिससे गालियोंकी आवाज दब जाए!

गणेशमल जैन, देऊलगाव राजा :

हमारे प्रश्नोंके उत्तर आप कौनसी कुंजी (गाइड) मेंसे देते हैं?

खेद है अभी हमें तीसरी श्रेणीमें पास होनेकी आवश्यकता नहीं पड़ी!

सुरेशचंद्र गंभीर, आगरा :

किसीके हृदयमें आग लगी हो, तो उसे किस प्रकार बुझाएं?

आगको अविलंब कंबलसे ढांककर लाठियां बजाना शुरू कर दो!

मुमताज मुहम्मद, किशनगढ़ :

हमारे देशका नाम किस व्यक्तिने रखा?

पहले यह बताओ क्या पुरस्कार देना चाहते हो, फिर हम बताएंगे हमने रखा कि नहीं!

कुमारी कौसर जहां, फतेहगढ़ :

क्या लड़कियां भी बेवकूफ होती हैं?

अब प्रश्नकर्ताका नाम देखनेके बाद मुंहपर जवाब देते नहीं बनता!

★ प्रकाशचंद्र पुरोहित, नागझिरी पुलिस लाइन, क्वार्टर नं. ए–१३, उज्जैन :

एक रुपयेकी कीमत पहले ६४ पैसे थी, अब १०० पैसे हो गई। परंतु फिर भी लोग यह क्यों कहते हैं कि 'रुपयेकी कीमत पहलेसे कम हो गई है?'

पाईने अपना नाम 'पैसा' रख लिया—इसी लिए!

★ गोपालचंद्र तिवारी, फतुहा ब्लाक, क्वार्टर नं. २२, जिला–पटना :

लोग प्रायः दूसरोंके अवगुण ही क्यों देखते हैं?

जो देखनेसे रह जाते हैं उन्हें बतानेके लिए!

(कमरेके बीचमें एक गोल मेजके इर्द-गिर्द कुर्सियों-पर दो बच्चे बैठे हैं। एक अजरा है और दूसरा अमजद है। अजराकी आयु दस वर्ष है। चेहरेसे वह बड़ी चंचल दिखाई पड़ती है। अमजद उससे काफी छोटा और बड़ा भोला-भाला दिखाई दे रहा है। दोपहरका वक्त है।)

अजरा : हाय, कितना प्यारा है वह!

अमजद : कौन?

अजरा : वही. . .मेरा तोता।

अमजद : बड़ा प्यारा है?

बाल एकांकी

शरारत

www.kissekahani.com

अजरा : ऊंह! जैसे मैं झूठ कह रही हूं।

अमजद : नहीं।

अजरा : तुम्हें क्या बताऊं, कितना प्यारा है वह तोता! यदि मैं कवयित्री होती तो उसकी प्रशंसामें एक लंबी-सी कविता लिख डालती। फिर भी एक छंद लिखा है।

अमजद (उत्सुकतासे) : सुनाओ न।

अजरा : छंद है. . .याद नहीं आ रहा। देखो. . तोता प्यारा है. . .नहीं. . .यह नहीं, कुछ और था।

अमजद : क्या छंद बना—तोता प्यारा ह. . .!

अजरा : हां, याद आ गया. . .मेरा तोता बहुत ही प्यारा है. . .!

अमजद : आगे?

अजरा : अभी तक केवल यही बनाया है। अच्छा बना है न?

अमजद : यह तो एक पंक्ति है। छंदमें कमसे कम दो पंक्तियां तो होती ही हैं।

अजरा : दूसरी पंक्ति तुम कहो। हां, सुनो तो. . . इसमें आम तोतों जैसी एक बात भी नहीं. . .

अमजद : वह कैसे?

अजरा : तोतोंका रंग कैसा होता है?

अमजद : हरा, और कैसा?

अजरा : पर मरे तोतेका रंग एक नहीं है। यों समझो जितने इंद्रधनुषके रंग होते हैं न, उतने ही उसके पंखोंके रंग हैं।

अमजद : सचमुच?

अजरा : बिलकुल सच. . .मैं झूठ क्यों बोलूंगी भला?

अमजद : अच्छा, बहन, अपना वह अब दिखाओ न सीता?

अजरा : मामाजी कहते थे कि यह तोता इस देशका

नहीं, यूरोपके किसी देशसे लाया गया है। चिड़िया-घरमें कभी गए हो?

अमजद : कई बार।

अजरा : वहां तुमने अफ्रीकाका तोता देखा होगा। उसीसे कुछ मिलता-जुलता है!

अमजद : मुझे याद नहीं, अफ्रीकाका तोता कैसा होता है।

अजरा : खैर, आज देख लोगे।

अमजद : है कहां? बताती क्यों नहीं तुम?

अजरा : कह जो दिया हमारी कोठीमें है।

अमजद : अभी जाकर देख लेता हूं।

अजरा : यों नहीं देख सकते. . .और सुनो, वह जो हमारे मुहल्लेमें रहते हैं न अखबारवाले, कल उसके फोटो ले गए हैं। कहते हैं अखबारमें छापेंगे।

अमजद : बड़ा अजीब तोता है!

अजरा : और क्या! इतना अजीब और इतना सुंदर कि क्या बताऊं। कई बातें साफ साफ कह देता है।

अमजद : उदाहरणके लिए।

अजरा : उदाहरणके लिए, 'आओ बैठो'।

अमजद : अच्छा!

अजरा : और कहता है—'चाकलेट लाओ, मुझे खिलाओ'।

अमजद : यह भी कह लेता है!

अजरा : हां!

अमजद (उठता है) : अभी जाकर देखता हूं।

अजरा (जल्दीसे उसका हाथ पकड़कर) : अभी देखना चाहते हो?

अमजद : और क्या?

अजरा : तो. . .तो. . .हां,सुना है तुमने बहुतसे चाकलेट जमा कर रखे हैं।

अमजद : वे ले आऊं?

—मिर्जा अदीब

अजरा (बेपरवाही से) : ले ही आओ।

अमजद : यह टिकट है तोता देखनेका (हंसता है)!

अजरा : टिकट-विकट बिलकुल नहीं। इस समय चाकलेट खानेको जी चाहता है।

अमजद : वह तोता भी खाता है न?

अजरा : उसीके लिए तो मांगती हूं। मैं क्या करूं... कभी कभी एकाध खा लेती हूं, शौक नहीं है मुझे।

अमजद : तो लाऊं जाकर?

अजरा : ले आओ। मैं तोता लेकर आती हूं।

अमजद : अपने घर भी ले जाऊंगा।!

अजरा : ले जाना, पर देखना पिंजरेका दरवाजा न खोलना, उड़ जाएगा फुर्रसे!

अमजद : पागल थोड़ा ही हूं जो पिंजरेका दरवाजा खोल दूंगा!

अजरा : तो जाओ फिर।

(अमजद दौड़ता हुआ दरवाजेसे बाहर चला जाता है। अजरा दरवाजे तक आती है। सैयद आता है।)

सैयद : अमजद भागा जा रहा था!

अजरा (मुसकराती है) : जाने दो। तमाशा देखेंगे।

सैयद : कैसा तमाशा?

अजरा : अमजदको बुरी तरह उल्लू बनाया है मैंने।

स्वभाव

अपना अपना

एक दिन एक बैल खामोश बैठा जुगाली कर रहा था। अध-खुली-सी आंखें—कभी खोल देता, कभी बंद कर लेता। एक कुत्ता बैलके मुंहके सामने खड़ा बड़ी मेहनतसे बराबर भौंके जा रहा था—कभी आगे बढ़ बढ़कर, कभी पीछे हट हटकर। जब बैल कुछ न बोला, तो वह उसके बहुत करीब पहुंच गया। बैलने जोरसे एक 'सूं' की और सिर हिला दिया। मारे डरके कुत्ता उल्टे पांव दौड़ा और पछाड़ खाकर पीछे जा गिरा। गिरते गिरते पीछे सिरपर टोकरा रखे जा रही एक स्त्रीसे जा टकराया। स्त्रीने कहा—'हाय' और टोकरा जमीनपर गिर गया। कुत्तेने 'पीं' की और दूर भाग गया। बैल खामोश बैठा जुगाली करता रहा।

—हमीदुल्लाखां

सैयद : कैसे?

अजरा : मैंने उससे कहा, हमारे घरमें बड़ा अजीब और सुंदर तोता आया है। चाकलेट लेकर आओ, तो दिखाऊंगी तुम्हें। वह चाकलेट लेने गया है अपने घर।

सैयद : तोता...कहां है तोता?

अजरा : तुम भी निरे तोते ही हो!

सैयद : अभी वह वापस आएगा, तो क्या कहोगी?

अजरा : पहले तो मजेसे चाकलेट खाऊंगी और जब खा लूंगी, तो फिर मैं अंदर जाऊंगी और बाहर आकर कह दूंगी—हाय! तोता तो उड़ भी गया... और मैं रो भी पड़ूंगी...क्या है, आंखोंपर पानी लगा लूंगी।

सैयद : क्या बात सोची है!

अजरा : देखना कितना मजा आएगा.. शायद वह आ रहा है।

(हमीद आता है।)

हमीद : वाह वाह! क्या शानदार तजवीज है!

अजरा : तुमने हमारी बातें सुन ली हैं?

हमीद : हां, दरवाजेपर रुककर सब कुछ सुन लिया है। पुस्तक ढूंढ़ रहा था कि इधर आ निकला।

अजरा : तुम भी चाकलेट खाना।

हमीद : अजरा बहन, तुम हो बड़ी ही चालाक! पर तुम्हारे पास तो इतने सारे चाकलेट हैं!

अजरा : मैं अपने चाकलेट किसीको क्यों दूं?

हमीद : पुस्तक ढूंढ़कर अभी आता हूं। देखना मुझे भी मेरा हिस्सा देना।

अजरा : जरूर जरूर...जल्दी आना!

(हमीद बाहर निकल जाता है।)

सैयद : अजरा बहन, यदि अमजदने समझ लिया कि तुमने धोखा दिया है, तो फिर...?

अजरा : बिलकुल नहीं समझ सकेगा...मैं रो जो पड़ूंगी।

सैयद : अभी चाकलेटोंका डिब्बा लेकर आएगा।

अजरा : और क्या?

(अमजद आता है। हाथमें एक लिफाफा है चाकलेटोंसे भरा हुआ।)

अमजद (मेजपर देखकर) : कहां है तोता?

अजरा : यहीं है...अभी लाती हूं...एक मिनिटमें... बहनकी एक सहेली आ गई है...वह देख रही है।

अमजद : अब देख लिया होगा उन्होंने।

अजरा : कह तो दिया, अभी जाती हूं। दिखाओ तो चाकलेट।

(इतनेमें हमीद आता है। अजरा अमजदके हाथसे चाकलेट लेकर मेजपर उलट देती है। हमीद बहुत-से चाकलेट उठाकर जेबमें डाल लेता है। अजरा, सैयद और अमजद चाकलेट खाते हैं।)

हमीद : बहुत मजेदार हैं!

सैयद : बहुत ही मजेदार!

अमजद : तोतेके लिए रखो न, सबके सब खुद ही खा लेंगे?

अजरा : मैंने रख लिये हैं जेबमें थोड़ेसे।

'पराग' वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता

२००० रु. के पुरस्कार

★ प्रथम पुरस्कार १००० रु. ★ द्वितीय पुरस्कार ६०० रु. ★ तृतीय पुरस्कार ४०० रु.

'पराग' मौलिक हिन्दी बाल एकांकियोंके लिए ५००–५०० रु. पुरस्कारकी दो प्रतियोगिताएं सफलताके साथ आयोजित कर चुका है।

हिन्दी बाल-साहित्यमें एक और विधाकी कमी अनुभव की जाती रही है—वैज्ञानिक कहानी। अंग्रेजीका साहित्य इससे समृद्ध है, किंतु हिन्दीके प्रौढ़ साहित्यमें भी इसकी भारी कमी है। विज्ञान और उसकी संभावनाओंके प्रति भारतीय बच्चोंमें कुतूहल उत्पन्न करनेके लिए यह वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता घोषित की जा रही है। प्रतियोगितामें भेजी जाने वाली कहानियां सर्वथा मौलिक होनी चाहिएं। उसका आधार, वातावरण, कथानक किसी भी विदेशी भाषासे लिया हुआ नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिक तथ्योंपर मुक्त कल्पना वांछित है, किंतु बाल-सुलभ मनोरंजन चुनी हुई कहानियोंका प्रधान गुण माना जाएगा। हमें आशा है कि हिन्दीके जिन कथाकारोंने वैज्ञानिक कथा-साहित्यका अनुशीलन किया है वे इस बड़े अनुष्ठानमें हमारा हाथ बंटाएंगे।

नियम

१– कहानी कमसे कम १०,००० से १५,००० (लगभग २५ से ३५ फुलस्केप टाइप पृष्ठ) शब्दोंके बीच होनी चाहिए।

२–मुख्य पात्रोंकी वेशभूषाओं, विशेषताओं आदिका क्रमबद्ध परिचय अलग कागजपर आना चाहिए, जिसके आधारपर उनके चित्र बन सकें।

३–लिफाफेके ऊपर बायें कोनेपर 'पराग वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए।

४– कहानी अनिवार्यतः अप्रकाशित, अप्रसारित तथा मौलिक होनी चाहिए। अनूदित, रूपांतरित या अन्य भाषाओंके आधारपर लिखित कहानियोंपर विचार नहीं होगा।

५–प्रत्येक कहानीकी पांडुलिपिके ऊपर एक ओर कोरा कागज अलगसे लगा होना चाहिए, जिसपर लेखकका पूरा पता, कहानीका शीर्षक, भेजनेकी तिथि आदि दर्ज हों। पांडुलिपिके अंतमें भी लेखक-लेखिकाका पूरा पता होना चाहिए।

६– अस्वीकृत कहानियोंको उसी दशामें वापस किया जाएगा, जब कि प्रेषकका पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा संलग्न होगा।

७– पांडुलिपि कागजकी एक ओर स्पष्ट, सुपाठ्य व स्वच्छ अक्षरोंमें लिखी अथवा टाइप की हुई होनी चाहिए। कृपया टाइपकी मूल प्रति ही भेजनेका कष्ट करें।

८– समस्त पांडुलिपियां हमें अधिकसे अधिक १५ अगस्त १९६७ तक मिल जानी चाहिएं। पुरस्कार विजेताओंके नाम 'पराग'के नवंबर १९६७ के अंकमें प्रकाशित होंगे। इस प्रतियोगिताके संबंधमें किसी प्रकारका पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा। अतः पांडुलिपिके साथ कोई पत्रादि न रखें।

९–पुरस्कृत व स्वीकृत कहानियोंका प्रथम प्रकाशनाधिकार 'पराग' का होगा। इसके बाद कापीराइट लेखकका रहेगा।

१०– कहानियां इस पतेपर भेजी जाएं — संपादक, 'पराग' (वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

११–यदि इस प्रतियोगितामें उपयुक्त तथा वांछित स्तरकी कहानियां प्राप्त न हुईं, तो संपादक 'पराग' को एक, दो या तीनों पुरस्कार रोक लेनेका अधिकार होगा।

अमजद : अजरा, जाओ न अब।

अजरा : अच्छा।

(सैयद, हमीद और अजरा बड़ी तेजीसे चाकलेट खा रहे हैं।)

अमजद : तो जाओ न?

अजरा : अच्छा, बाबा!

(अजरा चली जाती है। सैयद और हमीद चाकलेट खाते रहते हैं। क्षण भरके बाद अजरा आती है। गाल गीले हैं।)

अमजद : क्यों, क्या हुआ?

अजरा (जैसे रो रही हो) : हाय! मैं मर जाऊं!

अमजद : क्यों...क्या हो गया?

अजरा : वह जो...वह जो...**(सिसकती है)**।

हमीद : वह जो ... क्या?

अजरा : मेरा प्यारा तोता था...उड़ गया!

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

कहानी

उसका नाम था सोनू। उसके चलनेसे हवा थिरकने लगती थी और जब वह गाती, तो रंग-बिरंगे फूल झूमने लगते थे। सोनूको यह पता नहीं था कि वह जंगलमें कब और कैसे आई और उसे जंगलमें रहते कितना समय हो गया है। जबसे उसने होश संभाला, तभीसे उसने अपने आपको तरह तरहके जानवरोंके बीच पाया। भूख लगनेपर बंदर उसे केले लाकर खिलाते और रीछ ताजा शहद लाते। जब उसे नींद आती, तो लोमड़ी नरम नरम पत्तोंको बिछाकर उसके लिए बिस्तरा तैयार कर देती और कोयल मधुर संगीत तब तक सुनाती रहती, जब तक उसे नींद नहीं आ जाती। दो भेड़िए उसकी देखभाल करते और तब तक वहीं पहरा देते, जब तक सोनू जाग नहीं जाती थी। सोनू भी उनके इस प्यारके बदले उन्हें खूब प्यार करती थी। जब कभी दो जानवरों-के बीच लड़ाई हो जाती, तो वह उन्हें समझाती और चतुराईसे उन्हें फिर आपसमें मिला देती। कभी कभी जानवरोंके चोट आ जाती, तो सोनू ही उनके घावको साफ करके जंगली पत्तियोंका रस निकालकर उनके घावपर लगाती और घाव एकदम अच्छा हो जाता। एक बार बंदरके पैरमें बहुत नोकीला कांटा चुभ गया था, तो उसको सोनूने ही बाहर निकाला था।

सोनू कभी कभी उदास हो जाती थी। ऐसा तब होता, जब उसे अपने घरकी याद आती। उसको उदास देखकर सारे जानवर भी उदास हो जाते थे। लेकिन सोनू यह नहीं चाहती थी कि उसके उदास होनेसे सारा जंगल ही उदास हो जाए। इसलिए वह तुरंत ही हंसने और गीत गाने लगती थी। उसके गाते ही रंग-बिरंगे फूल झूमने लगते और पूरा जंगल हंसने लगता।

एक दिन सोनू झीलके किनारे बैठी पानीकी लहरोंका नाचना देख रही थी। उसे यह बहुत अच्छा लग रहा था। वह बहुत खुश थी और पानी-के साथ खेलनेके अलावा गा भी रही थी। तभी तेजीसे उछलता हुआ बंदर वहां आया और सोनूको देखते ही एकदम बोला :

"दीदी, शहरसे कुछ शिकारी आए हैं। उनके साथ बहुत सारा सामान है। ऐसी लकड़ी है जो आग उगलती है। मैं अभी अभी अपने कानोंसे सुनकर आ रहा हूं कि एक शिकारी दूसरेसे कह

रहा था कि इस बार सरकसके लिए बहुत सारे जानवरोंको पकड़ना है। तब उनमेंसे एकने कहा कि हमने जंगलकी राजकुमारीकी बहुत चर्चा सुनी है और इस बार तो उसे भी पकड़कर ले जाएगे। उसे बेचकर हमें बहुत सारा धन मिलेगा।"

सोनू यह सुनते ही घबड़ा गई। वह सोचने लगी कि इस मुसीबतसे कैसे बचा जाए। तभी लोमड़ी दौड़ी दौड़ी वहां आई और हांफते हुए कहने लगी—"सोनू दीदी, बहुत बुरा हुआ। उन शिकारियोंने नीकी और मीकी दोनोंको पकड़ लिया," और लोमड़ी रोने लगी।

सोनूने लोमड़ीको चुप कराया। नीकी और मीकी लोमड़ीके बच्चे थे। वे बहुत ही नटखट और सुंदर थे। सोनू भी उन्हें बहुत प्यार करती थी। उसे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। तभी उसे एक तरकीब सूझी। वह लोमड़ी और बंदरको अपने साथ लकर रीछ मामाके घरकी ओर चल दी।

सोनू जब रीछ मामाके घर पहुंची, तो वह शहद खा रहा था। सोनूको देख रीछ बहुत खुश हुआ। वह सोनूको बहुत प्यार करता था और सोनू भी उसे मामा कहती थी। रीछने लोमड़ी, बंदर और सोनूको भी शहद खाने-को दिया। सोनूके मुंहसे सारी बात सुनकर रीछ गुस्सेमें भर गया और लाल-पीली आंख निकालता हुआ बोला, "सोनू बेटी, मैं अभी जाता हूं और उन सभी शिकारियोंको मारकर नीकी-मीकी-को छुड़ाकर ले लाता हूं।"

सोनूने बड़ी मुश्किलसे रीछको समझाया और उसे बताया कि उनके पास ऐसी लकड़ियां हैं, जो आग उगलती हैं और जिसपर वह आग गिरती है वह तुरंत मर जाता है। तब उसने रीछको अपनी योजना समझाई और उससे कहा, "रात-के समय जब सभी शिकारी थक कर सो रहे होंगे उस समय तुम धीमेसे उनकी झोंपड़ी तक जाना। आजकी रात भी अंधेरी है और तुम्हारा रंग भी काला है। इसलिए तुम्हें कोई भी नहीं

अशोक अग्रवाल

पहचान पाएगा। उनकी झोंपड़ीके पास एक बहुत ऊंचा पेड़ है, तुम उसपर चढ़ जाना। वहां बंदर तुम्हें आग दे आएगा और तुम उसे उनकी झोंपड़ीपर गिरा देना। झोंपड़ी जल जाएगी और वे घबड़ा जाएंगे। सभी शिकारियों-का ध्यान उसी तरफ हो जाएगा तब बंदर होशि-

www.kissekahani.com

जंगल की राजकुमारी

यारीसे उस स्थानपर जहां उन्होंने नीकी-मीकीको रस्सीसे बांध रखा है पहुंच जाएगा और रस्सी-को काटकर नीकी-मीकीको अपने साथ भगा लाएगा।" लोमड़ी और बंदरके साथ साथ रीछ भी यह योजना सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने ऐसा करनेका वादा किया और सोनू बंदरको रीछके पास ही छोड़कर लोमड़ीके साथ लौट पड़ी।

सोनू लोमड़ीके साथ बात करनेमें व्यस्त थी। उसे अपने चारों तरफका कुछ पता न था। तभी एक शिकारीने उसे देख लिया। वह अपने साथियों-से अलग होकर शिकार करनेको निकला था। यह वही शिकारी था, जो जंगलकी राजकुमारीको पकड़ना और शहर ले जाकर बेचना चाहता था। वह सोनूको लोमड़ीके साथ देखकर बहुत खुश हुआ और बंदूकका निशाना सोनूकी ओर लगाने लगा। ठीक शिकारीके ऊपर एक गोरिल्ला बैठा हुआ नारियल खा रहा था। वह शिकारीकी चालबाजी समझ गया। शिकारी सोनूको मारना चाहता है यह सोचते ही वह गुस्से-में भर गया। तभी उसे एक तरकीब सूझी; जैसे ही शिकारी अपनी बंदूक चलाने जा रहा था कि गोरिल्लेने निशाना ताककर अपनी पूरी शक्ति-से नारियल उसके हाथपर दे मारा। शिकारीका निशाना चूक गया और वह दर्दसे चीखने लगा, क्योंकि उसकी कलाईकी हड्डी टूट गई थी। सोनू यह देखकर चौंक पड़ी और उसने मुड़-कर देखा, तो पाया कि शिकारी डर और दर्दके मारे चीखता हुआ उल्टे पांव भागा जा रहा है और एक गोरिल्ला दांत किचकिचाता हुआ उसका पीछा कर रहा है। सोनूको शिकारीपर दया आ गई और उसने गोरिल्लेको वापस बुला लिया।

उसी रातको बंदर और रीछने मिलकर नीकी और मीकीको भी शिकारियोंके फंदेसे छुड़ा लिया। शिकारियोंकी झोंपड़ी जलकर राख हो चुकी थी। उनका बहुत सारा सामान भी जल गया था और बचा हुआ सामान बाहर खुले मैदानमें पड़ा था, जिसकी चारों ओर वे बैठे हुए आपसमें सलाह कर रहे थे। उनके पासके पेड़-पर बंदर बैठा था, जो उनकी बातको बड़े ध्यानसे सुन रहा था।

शिकारी समझ गए थे कि यह सब जंगलकी राजकुमारीके कहनेपर ही हुआ है और उन्होंने पहले जंगलकी राजकुमारीको ही अपने रास्तेसे हटाना चाहा। इसके लिए वे आपसमें सलाह कर रहे थे। एक शिकारी जो काना था बाकी शिकारियोंको अपनी योजना समझा रहा था—"हम रातके समय चुपकेसे जंगलकी राजकुमारीके घर जाएंगे। उसकी रखवाली सिर्फ दो भेड़िये करते हैं जिनके गलेमें हम धोखेसे फंदा डाल देंगे। और उन्हें बगैर आवाज किए ही मार डालेंगे। तब राजकुमारी कब्जेमें आ जाएगी, जिसे बेचकर हमें बहुत सारा सोना मिलेगा।" और वह इतना कहकर जोरसे हंसने लगा और उसके साथ साथ अन्य शिकारी भी हंसने लगे।

'हमारी पसंद प्रतियोगिता' नं. ३ का परिणाम

'हमारी पसंद प्रतियोगिता' के अंतर्गत 'पराग' में प्रकाशित कहानियोंके बारेमें हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। सर्वशुद्ध हल किसी भी प्रतियोगीका नहीं निकला। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम श्रेष्ठ कहा-नियोंके बहुमतसे मेल खाता हुआ निकला उनकी संख्या दो है। इसीलिए पुरस्कारके अधिकारी दो बच्चोंके नाम और पते इस प्रकार हैं:

- **राकेशकमल जौहरी, २१ नई बस्ती, खुरजा (उ. प्र.)**
- **सुलक्षणा देवी, द्वारा— चरणदास कोहली, दमाणी क्वार्टर नं. २३, रानी बाजार, बीकानेर (राजस्थान)।**

सही हल वाली कहानियोंका क्रम इस प्रकार है:

१– महा. . . सम्मेलन,
२– आलू-कचौरी
३– चतुर कुतुर और पंजासिंह
४– बोलने वाला बुत
५– भंगेड़ी चाचा
६– एक छटांक कम
७– नारदजी पर पिचकारी
८– दो शहसवार
९– महंगा बैल

बंदरने शिकारियोंकी सारी बातें सोनूको जा सुनाईं। सोनू अब जरा भी नहीं डर रही थी। उसने शिकारियोंको मजा चखानेकी सोची।

रातके समय जब शिकारी हाथमें रस्सीके फंदे लेकर सोनूके सोनेकी जगह पहुंचे, तो उन्हें यह देखकर बहुत खुशी हुई कि वहां भेड़िये थे ही नहीं। उन्होंने सोचा कि भेड़िये शिकार करने जंगलमें चले गए होंगे। वे बेखटके उस तरफ बढ़ने लगे जहां सोनू सोती थी। किंतु यह क्या? सभी शिकारी बुरी तरह चीखने लगे। मधुमक्खियोंके एक बहुत बड़े झुंडने उनपर हमला कर दिया था और असंख्य जंगली बिच्छुओंने उनके पैरोंमें काटना शुरू कर दिया था। सभी शिकारी उछल-कूद मचाने लगे। वे दर्दसे चीखते हुए भागने लगे। अब वे भेड़ियोंके वहां न होनेका राज समझ चुके थे।

सोनू लोमड़ीके साथ एक झाड़ीके पीछे छिपी हुई यह सब देख रही थी। वह शिकारियोंको उनकी करतूतका पूरा मजा चखाना चाहती थी। वह उन्हें जंगलसे बाहर खदेड़ना चाहती थी।

अगले दिन शिकारी खाना खाने बैठे ही थे कि उनपर पत्थरोंकी भयंकर बौछार होने लगी। असंख्य बंदरोंने उनकी चारों ओर घेरा डाल लिया था और वे पत्थरों और पेड़ोंकी टहनियोंकी वर्षा कर रहे थे। बेचारे शिकारी इस मुसीबतका सामना न कर पाए और जंगलकी राजकुमारीको दयाके लिए पुकारने लगे।

तब सोनूने बंदरोंको पत्थर मारनेसे रोक दिया और हाथीकी पीठपर सवार होकर उन शिकारियोंके सामने पहुंची और गर्वसे मुसकराते हुए बोली, "अब तुम मेरी शक्तिको अच्छी तरह देख चुके हो। अब बताओ, तुम हमारी मित्रता चाहते हो या दुश्मनी? यदि मित्रता चाहते हो, तो अपने इन लकड़ीके खिलौनोंको उस तरफ फेंक दो और आज ही यहांसे वापस चले जाओ।"

शिकारी अब हताश हो चुके थे। उन्हें जंगलकी राजकुमारीकी आज्ञाका पालन करना पड़ा। उन्होंने अपनी सारी बंदूकोंको एक तरफ रख दिया जिन्हें बंदर उठाकर झीलमें फेंक आया।

सोनूकी आज्ञा पाकर बंदर बहुत सारे केले और भालू बहुत सारा शहद लाये। सोनूने शिकारियोंसे उन्हें खानेको कहा। शिकारी भी सोनूका यह सुंदर व्यवहार देख बहुत लज्जित हुए। उन्होंने सोनूसे अपने अपराधोंकी क्षमा मांगी और उसी दिन जंगल छोड़कर चले गए। ●

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"यार, दिनपर दिन महंगाई बढ़ती जा रही है, नाइयोंने भी बाल काटनेकी दर बढ़ा दी है!"

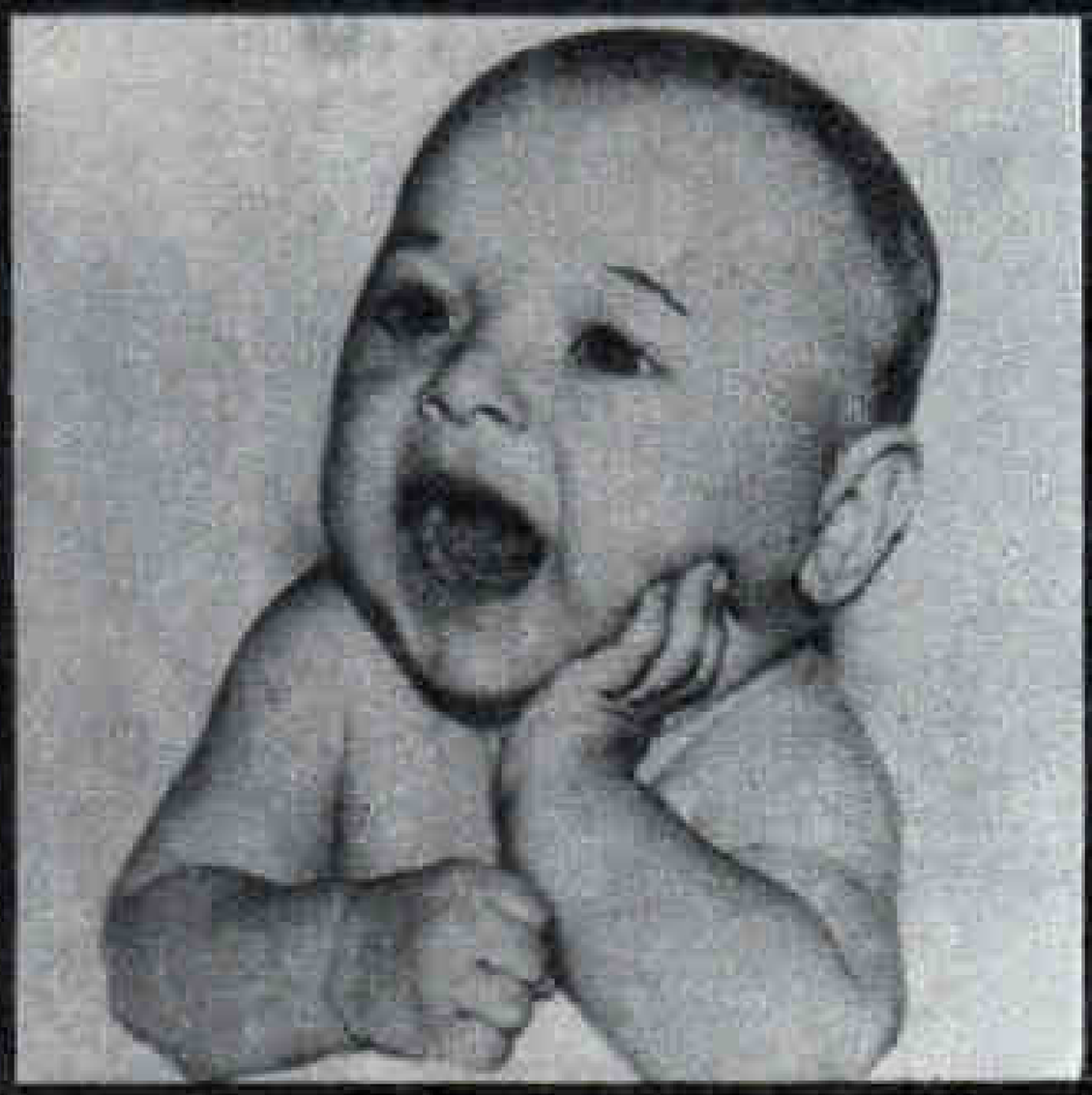

"परमात्मा का लाख लाख धन्यवाद कि मैं तो अभी इस खर्चसे बचा हूं!"

अब तक तुमने पढ़ा था :

गिरीश एक होनहार लड़का था लेकिन चाट-पकौड़ी-की लत और घूमने फिरनेके शौकने उसे कहींका न छोड़ा। मौका हाथ आते ही वह अपने पिताके रुपये उड़ाकर बम्बाई जा पहुंचा जहां उसकी मौसी रहती थी और लड़कोंको उड़ाने वाले एक दलके सरदार केहरके हाथ पड़ गया। वह उसे बहकाकर अपने घर ले गया। वहां वह चफाहारा गहरी नींदमें सो गया। आंख खुलनेपर उसने केहरको किसीके साथ खुसरपुसर करते सुना, तो उसके होश उड़ गए।

अब इससे आगे पढ़ो।

(२)

गिरीशने केहर और उसके उस्तादकी बातोंसे समझ लिया कि ये लोग उसे फंसा चुके हैं। एकाएक उसकी तबीयत हुई कि वह बड़ी जोरसे चीख पड़े और बता दे कि उसने सारी बातें सुन ली हैं। वह उनकी एक नहीं चलने देगा और अपने बल-बूते मौसीका पता ढूंढ़ निकालेगा।

लेकिन उसने अपनेको रोक लिया। इस तरह-से काम नहीं चलेगा। ये दो हैं, वह अकेला है। ताकतमें इनसे जीत नहीं पाएगा।

वह चुपचाप सुनता रहा बातें करने वाले यह नहीं जान पाए कि छोकरा जाग उठा है। वे तो यही समझते रहे कि खानेमें जो नींदकी दवा मिलाई गई है उसीके नशेमें सोया हुआ है।

थोड़ी देर बाद केहरका साथी चला गया। उसने एक नजर सोते रहनेका बहाना किए गिरीशपर डाली और खुद भी बाहर निकल गया।

केहरके जाते ही गिरीश उठ खड़ा हुआ। कमीज खूंटीसे उतारकर पहन ली। जूते कहीं दिखाई नहीं पड़े, सो नंगे पैरों ही भाग निकलनेकी ठानी। दरवाजा खोलनेकी कोशिश की। लेकिन दरवाजा बाहरसे बंद था। वह हताश होकर चारपाईपर जा बैठा। फिर इधर-उधर नजर डाली। कोई दूसरा रास्ता नहीं था। बहुत ऊंचाईपर एक खिड़की थी। उसे घबड़ाहट जरूर थी, लेकिन यहांसे निकल भागनेकी धुन भी कम नहीं थी। उसने चारपाई खड़ी की। उसपर चढ़ा। हां, अब काम बन गया, उसे आशा बंधी। खिड़कीका पल्ला हटाया। वह निराश हो गया। निकलनेका रास्ता नहीं था। पल्लेके पीछे लोहेके सरिये लगे थे। वह वापस उतर आया। नहीं, ऐसे काम नहीं बननेका।

वह चारपाई सीधी करके उसपर बैठ गया। कमरेमें हल्की-सी रोशनी थी। उसने पता पढ़नेके लिए पोस्टकार्ड निकालनेको जेबमें हाथ डाला। हाय, पोस्टकार्ड और नोट बंधा रूमाल दोनों गायब थे।

उसकी आंखों तले अंधेरा छा गया। अब क्या करेगा वह? यहांसे कैसे निकलेगा और फिर अगर निकल भी जाए, तो बिना पतेके और पैसेके काम कैसे चलेगा। दर-दरकी ठोकरें खानी पड़ेंगी। अब घर भी किसी तरहसे वापस नहीं लौट पाएगा।

जिनके गुस्सेसे घबराकर वह बम्बई आया था, अब उन्हीं मां-बापके लाड़ उसे याद आने लगे। गुस्सा वे कितना ही क्यों न करते थे, पर अगर घर लौटनेको एक घड़ीकी भी देर हो जाती थी, तो परेशान होकर खोजने निकल पड़ते थे। पिताजी उसे खिलानेके लिए अच्छे अच्छे फल लाया करते थे, मिठाइयां लाया करते थे। तबीयत खराब हो जाती थी, तो डाक्टर बुलाया जाता था। इलाजमें कोई चूक वह नहीं आने देते थे।

– अवध अनुपम

धारावाही उपन्यास

www.kissekahani.com

शेर का पंजा

इस समय मुसीबतमें पड़ जानेपर उसे बड़े जोरसे घरकी याद सताने लगी। अब उसे पछतावा हो रहा था कि नाहक ही वह अपने मां-बापको गलत समझ रहा था। अब उसका दिल चाह रहा था कि एक बार जोरसे अपनी मांको पुकारे। लेकिन अब पुकारनेसे क्या होगा। उन्हें सुनाई भी तो नहीं पड़ेगी उसकी पुकार।

अब उनसे मिलना कैसे होगा। वह मन ही मन पछता रहा था। आंखोंसे आंसू बह रहे थे। तभी द्वारपर कुछ खटका हुआ, तो वह सिहर उठा और झटपट अपने आंसू पोंछ लिए।

केहर आया। गिरीशको बैठे देखकर बड़े प्यारसे पूछा, "तुम जाग गए?"

"हां!"

"भूख लगी है क्या?"

"लगी तो है," गिरीशने झूठमूठ कहा। भूख उसे घबड़ाहटके मारे बिल्कुल नहीं लगी थी। वह चाहता था कि केहर उसके सामनेसे ज्यादासे ज्यादा दूर रहे।

"खाना लाता हूं," कहकर केहर बाहर जाकर दरवाजा बंद करने लगा।

गिरीश बोला, "दरवाजा बंद मत कीजिए, मुझे घुटन लगती है।"

केहर फिर अंदर चला आया। प्रेम जताते हुए बोला, "गिरीश बेटा, यह बम्बई है। दरवाजा बंद रखना ही ठीक होता है। बस दो मिनिट लगेंगे, चुटकी बजाते आऊंगा।"

गिरीशका जवाब सुने बिना वह तेजीसे बाहर निकल गया। बाहरसे ताला लगानेकी आवाज सुनाई पड़ी।

गिरीश उठ खड़ा हुआ। वह एक पल भी बेकार नहीं जाने देना चाहता था। उसने अंदरसे चटखनी लगा ली। फिर कमरेके सामानकी तलाशी लेने लगा। उसे मौसीवाले पोस्टकार्ड और अपने रुपयोंकी तलाश थी। कहीं कुछ नहीं मिला। कोनेका कनस्तर खोलकर देखा, थोड़ा-सा आटा पड़ा था, पेटी खोलकर देखी, चार-पांच कपड़े थे। पोस्टकार्ड और रूमाल कहां रखा है, यह पता वह नहीं लगा पाया और निराश होकर थककर बैठ गया।

तभी उसे दीवारमें काफी ऊंचाईपर एक छोटी-सी अलमारी लगी दिखाई दी। अलमारी बहुत छोटी थी। एक बार वह फिर उठा और अलमारीवाली दीवारके पास आया। हाथ वहां तक कैसे पहुंचे? एक तरकीब ध्यानमें आई। टीनके पतरेकी बनी पेटी खींचकर अलमारीके नीचे लाया। उसपर कनस्तर रखा। फिर उसपर वह चढ़ा, अलमारी खोलकर देखी, सिर्फ कुछ कपड़े पड़े थे। कपड़े खिसकाकर देखे। कांप उठा वह। एक गंदी-सी बदबू आ रही थी। कपड़ोंमें खूनके दाग लगे थे जो सूख गए थे, लेकिन बदबू छोड़ने लगे थे। उसके पैर थर-थर कांपने लगे।

उसका रोआं-रोआं खड़ा हो गया। कैसे विकट आदमीसे पाला पड़ा है। पूरा खूनी है। एक बार फिर पछतावा हुआ कैसे उसकी अकल मारी गई थी, जो यहां चला आया। एकाएक वह व्यस्त हो गया। पेटी और कनस्तर ठीकसे रख देने चाहिएं ताकि केहरको शक न हो। उसने पेटी-कनस्तर ठीक स्थान पर रख दिए, और पूरे कमरेपर एक नजर डाली, कहीं कुछ ऐसा तो नहीं हो गया, जिससे बात खुल जाए। देखा, पेटीके नीचे जो लिनोलियम बिछा था वह सिमट गया है। उसने लिनोलियम ठीक करनेको फुर्तीसे पेटी उठाई। लिनोलियमकी सलवटें मिटानेकी कोशिश की, तो चौंक उठा। दो ईंटके बराबर जमीनमें फर्श नहीं था, लकड़ीकी पट्टी रखी थी। उसे याद हो आया। उसके घरमें भी इसी तरहका जमीनमें छुपा हुआ तहखाना है। उसमें मांके आभूषण वगैरा कीमती चीजें रखी जाती हैं। उसने पट्टी हटाई। एक टीनका डिब्बा नजर पड़ा। निकालकर खोला। उसकी आंखें चौंधिया गईं। उसका रूमाल और पोस्टकार्ड वहां जरूर नहीं थे, जिनकी उसे तलाश थी, लेकिन वहां कई घड़ियां और नोट भरे थे।

पहले कुछ देर तक तो वह सोच ही नहीं पाया कि क्या करे। इतनी सारी रकम उसके सामने है। परदेशका मामला है, कहीं चोरीके मामलेमें पकड़ा न जाऊं? इसके अलावा मुसीबतमें आ पड़नेसे उसे यह बात भी अच्छी तरह मालूम हो चुकी थी कि बुरे कामों का फल बुरा होता है। इसलिए वह बुरा काम भी नहीं करना चाहता था। वह यों ही डिब्बा हाथमें लिये बैठा रहा।

उसने सोचा, एक चोरीके फलमें तो इस मुसीबतमें पड़ा हूं, अब न जाने कौनसी मुसीबत आ जाए। वह डिब्बा वापस रखनेको हुआ। अचानक उसका विचार बदल गया। चोरी तो उसके मालकी भी की गई है, फिर क्यों

लापता लड़का मिला

(कार्यालय-प्रतिनिधि द्वारा)

बम्बई—१५ दिन पहले एक १२ वर्षीय लड़का स्कूल गया था और उसके बादसे ही वह लापता हो गया। माहिम पुलिसने एक व्यक्तिको गिरफ्तार किया, जिसके साथ वह लापता लड़का माहिममें एक उत्सवमें भाग ले रहा था।

यह बताया गया है कि लड़का १९ नवंबरको स्कूल गया था और स्कूल बंद हो जानेके बाद उसे घर लौटते हुए देखा गया था। लेकिन उसके माता-पिताने यह रिपोर्ट दर्ज कराई कि लड़का घर वापस नहीं लौटा।

इस लड़केके मोहल्लेके कुछ लोग माहिममें आयोजित एक धार्मिक उत्सवमें गए थे। वहांपर उन्होंने लड़केको बशीर अहमद नामक एक २३ वर्षीय व्यक्तिके साथ देखा। उन्होंने उस व्यक्ति तथा लड़केको रोके रखा और इस बीच पुलिसको सूचना दे दी गई।

(नवभारत टा. २ दिसंबर १९६६)

"डाक्टर साहब, यह मेरा नौकर एक ट्रांजिस्टर निगल गया है!"

न इसे ले ले।

गिरीशने झट नोटोंकी गड्डी बनाई। फिर एक कपड़ेके टुकड़ेमें उन्हें ठीकसे बांधा और नेकरकी जेबमें रख लिया। अब जो होगा देखा जाएगा। कमसे कम मौका लगनेपर टिकट लेकर घर तो जा सकेगा। सब ठीकठाक करके वह चारपाई पर आ बैठा।

तभी केहर आ गया। वह साथमें खाना लाया था। आते ही बोला, "गिरीश बेटे, माफ करना, जरा देर हो गई। एक जान-पहचानवालेसे मुलाकात हो गई थी। उससे बातें करने लगा। लो खाओ, बेटा, यह देखो तुम्हारे लिए रबड़ी लाया हूं।

गिरिश आठवें दर्जेमें पढ़ता था, इसलिए वह एकदम बुद्धू नहीं था। उसने मन ही मन कहा, कोई बात नहीं, चाचा, भतीजा भी तुम्हें मजा चखाएगा। उसने रबड़ीसे पूड़िया खाना शुरू कीं। पहले कौरमें उसे रबड़ीका स्वाद कुछ अजीब लगा। दूसरा कौर फिर रबड़ीसे खाया। उसे स्वादमें पूरी गड़बड़ी लगी। समझ गया, चाचा चालाकी कर रहा है। गिरीशने अभिनय किया, "चाचा, पूड़ियां शायद अच्छे तेलकी नहीं बनी हैं। वरना रबड़ी तो बहुत अच्छी लगती है मुझे। अगर एक डबल रोटी मिल जाती, तो रबड़ीका ज्यादा मजा आ जाता। मैं रबड़ीसे डबल रोटी खाता हूं, तो अच्छा लगता है।"

शायद केहर किसी भी तरहसे गिरीशको नाखुश नहीं होने देना चाहता था, इसलिए वह तपाकसे उठा और बोला, "अभी लाया, बेटा। बस दो मिनिट लगेंगे।" वह लपककर बाहर चला गया और जाते जाते दरवाजा फिरसे बंद कर गया।

गिरीशने फुर्तीसे रबड़ी पेटीमें छिपा दी, उसे देखनेपर कहीं दूसरी जगह नहीं मिली जहां वह छिपाता। सब्जीसे चार पूड़ियां खाईं और ऐसे लेट रहा जैसे बेहोश हो गया हो।

केहर वापस लौटा। गिरीश समझ गया, उसने और भी ज्यादा मक्कारी दिखाई। केहर बुदबुदाया, गए न कामसे बेटा। रबड़ी सामने देख लालच नहीं रोक सके। चलो अच्छा हुआ। अब काम आसान हो गया। गिरीशने बेहोशीके ढोंगमें ही केहरकी बुदबुदाहट सुनी। सोचा, फंसा हुआ तो हूं ही। तीर लग गया तो ठीक, वरना जो हो सो भुगतना पड़ेगा।

केहर फिर बाहर लौट गया। उसके वापस जाते ही गिरीश उठा और बाकी बची तीन पूड़ियां भी चट कर गया। डबल रोटी नहीं छुई। उसके बाद वह सोचने बैठ गया। और काम ही क्या था जो करता। सोचना ही सोचना था, कैसे इस मुसीबतसे बचे।

सोचनेका कोई अंत नहीं। सोचते सोचते सो गया। नींदमें न जाने उसने क्या सपना देखा कि घबड़ा कर उठ बैठा। कमरेमें अंधेरा पूरी तरह भर गया। हाथको हाथ सुझाई नहीं दे रहा था। उठकर बत्ती जलाई। कमरेमें प्रकाश भर गया। उसे-प्रकाश बुरा लगा। बिजली फिर बुझा दी।

कहते हैं कभी कभी बुद्धूको भी दूरकी सूझ जाती है। उसे एक बहुत अच्छी तरकीब सूझी। केहर उसे बेहोश समझता ही है क्यों न यह तरकीब आजमा देखे। उसने चारपाई खड़ी कर बल्ब उतार लिया। कमरेमें पूरा अंधेरा

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

www.kissekahani.com

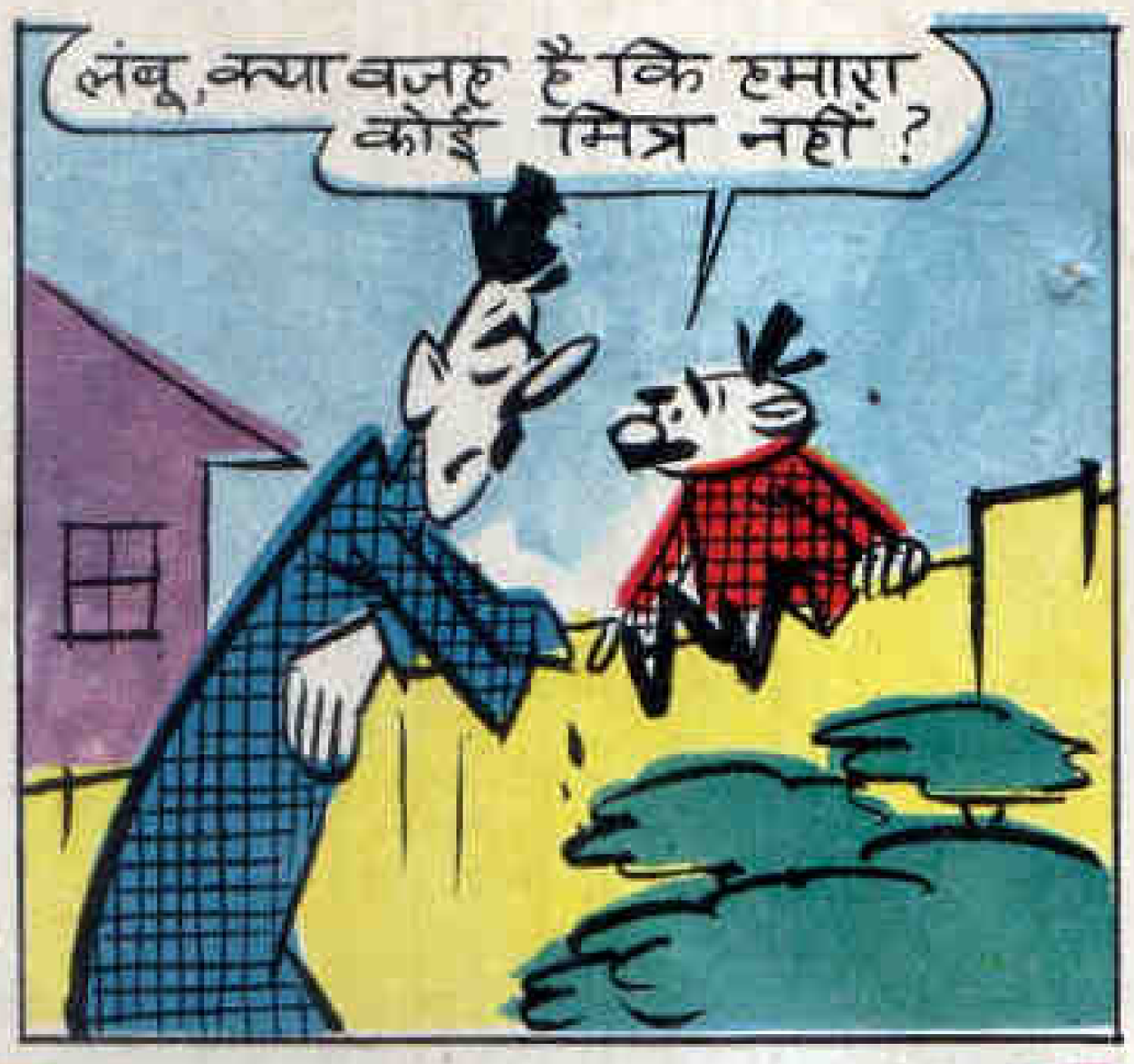

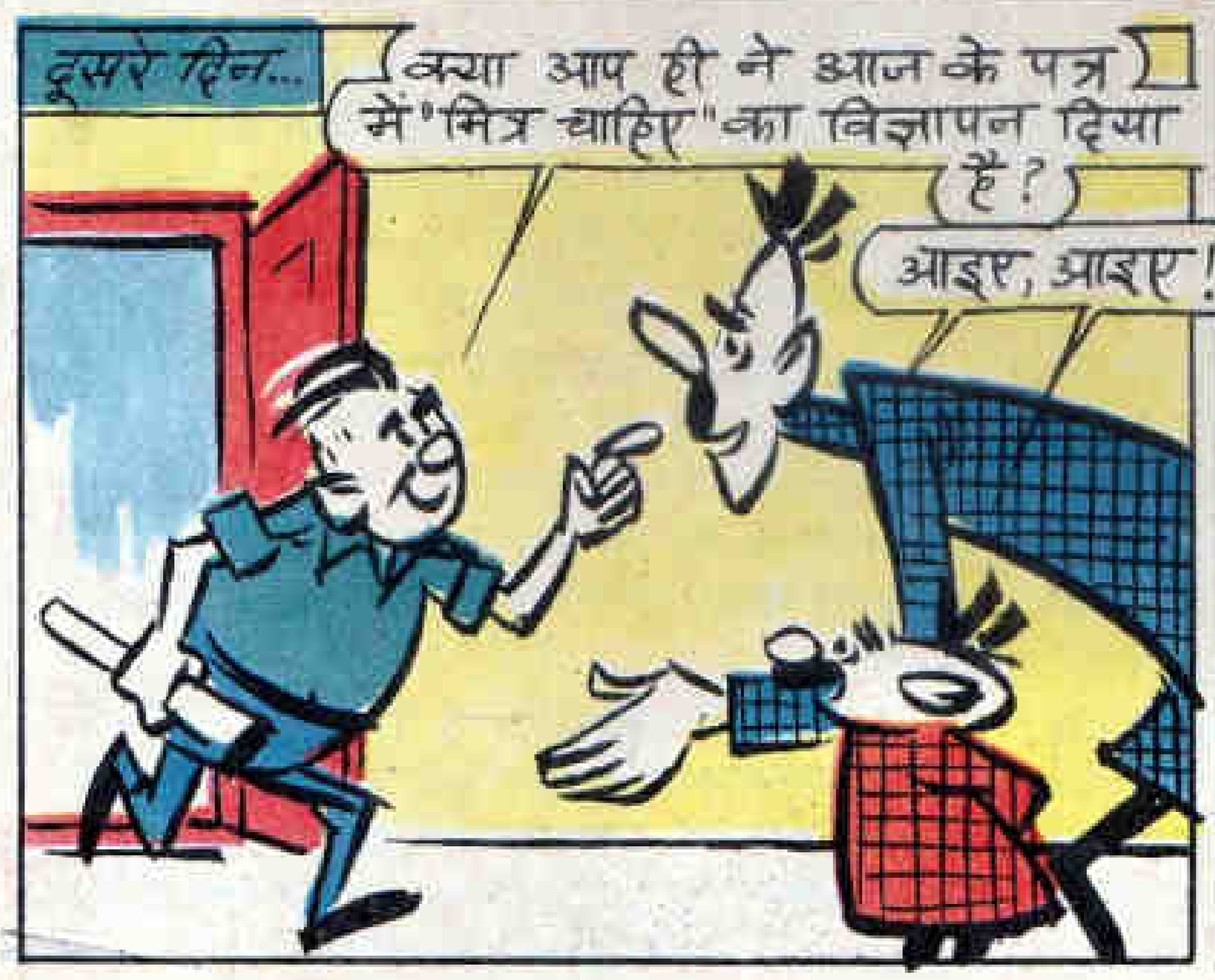

प्यारे मित्र, कुछ खाना वगैरह..?
जरूर जरूर !

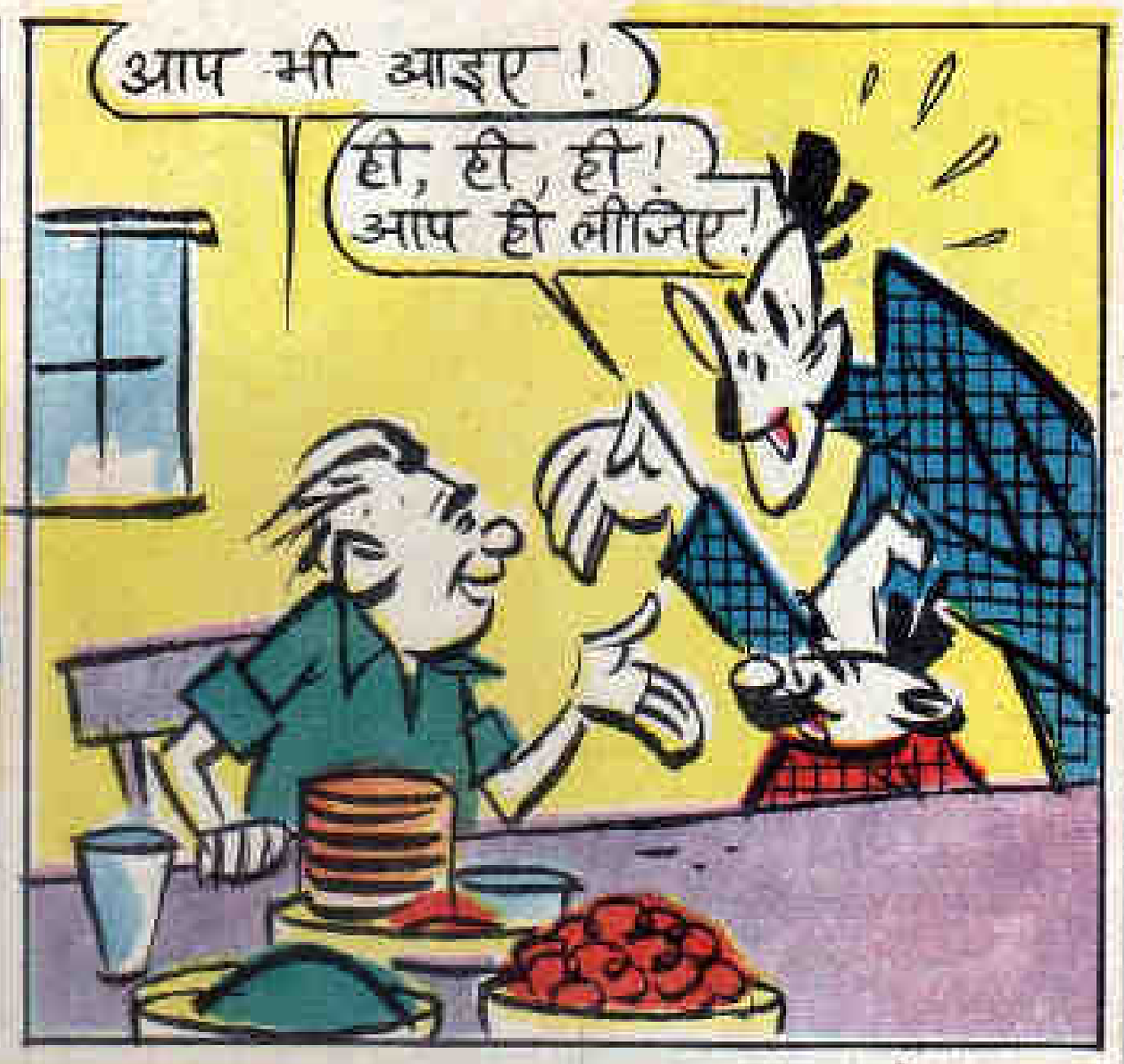
आप भी आइए !
ही, ही, ही ! आप ही लीजिए !

आप खुश हो रहे हैं, यानी भोजन आपको पसंद आया ?
थोड़ा और है ?
जरूर, जरूर !

थोड़ी देर बाद...
आज मैंने सेर भर लड्डू, एक दर्जन पूड़ी और आधा सेर हलवा ही खाया है, दूसरी बार इस से दुगना खा कर एक रेकार्ड कायम करूंगा और आपका नाम होगा !
!

चलते, चलते एक बात याद आई - क्या आप पचास रुपये उधार देंगे ? - वास्तव में आपलोग महान् हैं !
!
?

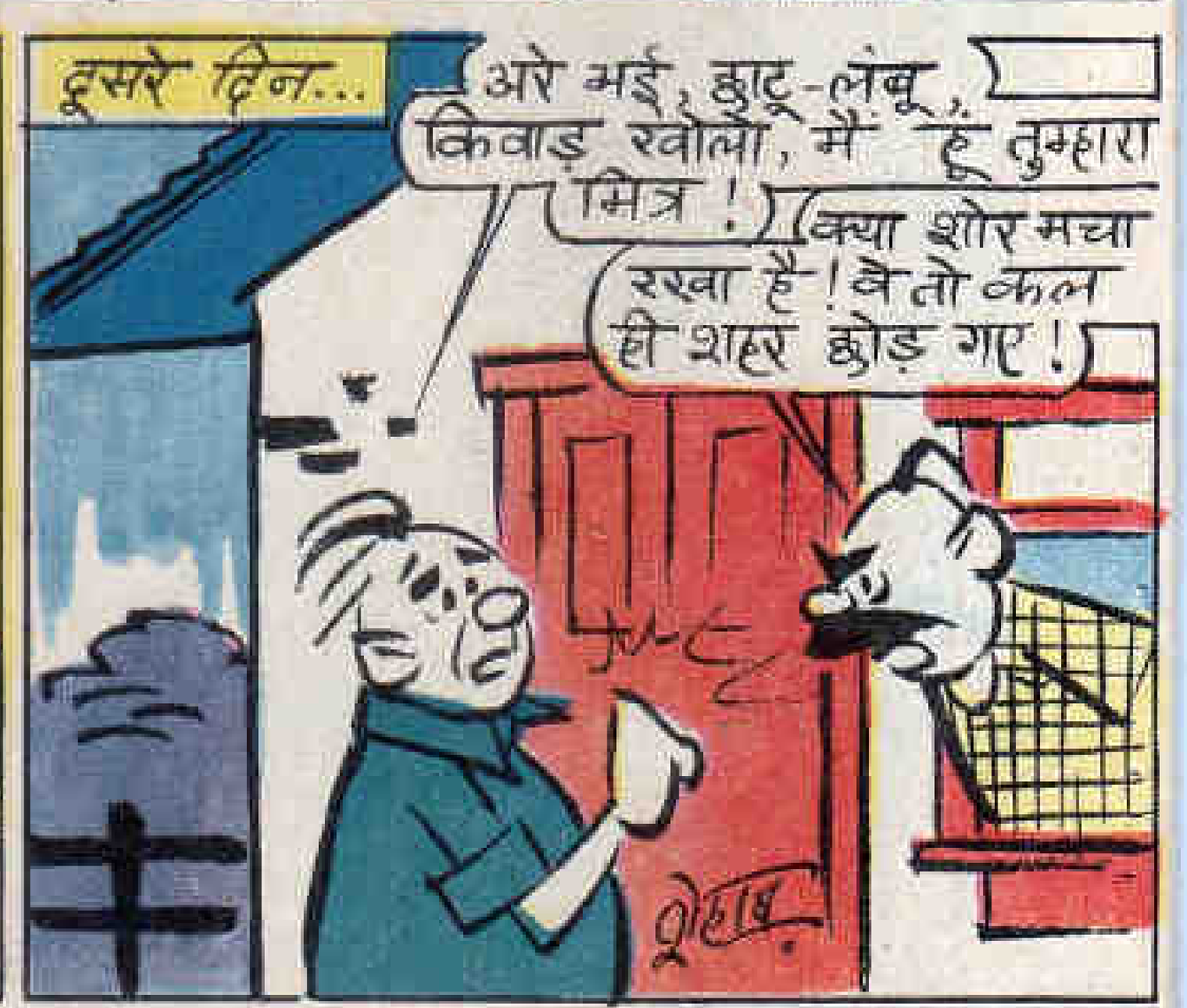
दूसरे दिन...
अरे भई, छोटू-लंबू, किवाड़ खोलो, मैं हूं तुम्हारा मित्र !
क्या शोर मचा रखा है ! वे तो कल ही शहर छोड़ गए !

फोटो-कथा

जासूस बिल्ली

छायाकार : देवीदास कसबेकर

बड़ा मुश्किल काम है। यह तो चूहेकी तरह चकमा दे रहा है!

लो, अब यहां आ पहुंचा! इसमें जरूर कोई गहरा राज है!

यहीं कहीं तो देखा था— कहां गुम हो गया?

मिला! पर मेरे उछलते ही यह फिर चकमा दे जाएगा!

(षड़यंत्रकारियोंने एक अत्यंत गुप्त भेद कागजके पुलिंदेमें लिखकर उसके ऊपर धागेकी पूरी रील लपेट दी। फिर उन्होंने उसे एक अंधेरे कमरे-में छतसे लटका दिया। जासूस पूसीको उसकी सूंघ चूहेकी गंधकी तरह लग गई। उसने उस पुलिंदे-को प्राप्त करनेके लिए क्या क्या प्रयत्न किए और कैसे एक तरबूजकी सहायतासे सफल हुई यह इन दोनों पृष्ठोंके चित्रोंमें देखो।)

कहा था न— मेहनत-का फल मीठा होता है!

दरवाजा बंद करके इसे रोक तो दिया—पर अब भी अंगूर खट्टे ही हैं!

अब जल्दीसे पुलिस-को खबर दे आऊं!

तरबूजपर चढ़कर शायद कुछ बात बने!

गर्मियोंके दिन थे । शामका समय था । सभी लोग छतपर बैठे थे । सबके साथ नन्हा रामू भी अम्मांकी गोदमें बैठा बैठा सड़कों-पर चलती गाड़ियोंको देख रहा था । यकायक अम्मां बोलीं, "वह देखो,वह देखो!" यह सुनकर रामू चौंक गया और बिना समझे-बूझे रोने लगा। उसको रोता देख मुनिया बोली, "कैसा बेवकूफ है, चंदा मामाको देखकर रोता है!"

रामूने आगे, पीछे और नीचे देखा, वहां कुछ न था । हां, ऊपर देखा, तो एक बड़ा चमकीला थाल-सा आसमानमें लटका था । उसने अम्मांकी तरफ देखा तो अम्मांने कहा, "हां, यही तो है चंदा मामा, गोल-गोल चमकीला मामा !"

तबसे रामू जब भी चंदा मामाको आसमान-में देखता फौरन पहचान लेता । जोर जोरसे पुकारता, "चंदा मामा! ओ चंदा मामा!"

कुछ दिन बाद रामू बड़ा हो गया । एक दिन उसकी नानी घरमें आई हुई थी । रामूने नानीसे कहा, "नानी नानी, तुमने चंदा मामाको देखा है?" नानी बोली, "हां रे, देखा है । तू उसे चंदा मामा तो कहता है, पर वह मामा-वामा कुछ नहीं, वह तो एक बुढ़िया है, जो एक थालमें बैठकर चर्खा कात रही है!"

नानीकी बात सुनकर रामू चक्करमें पड़

कहानी

मामा के घर जाएंगे

-सईद

www.kissekahani.com

गया। पूछने लगा, "बुढ़िया चर्खा कात रही है, तो घर्रघर्रकी आवाज क्यों नहीं सुनाई देती?"

नानी बोली, "अरे दूरी कितनी है! इतनी दूरसे भी कहीं कुछ सुनाई देता है?"

"कितना दूर है?" रामूने पूछा।

"सौ कोस," नानी बोली।

रामूको गिनती आती न थी। उसे न 'सौ' का पता था न 'कोस' का। उसने सोचा नानी कहती है, तो ठीक ही होगा।

कुछ दिन और बीते। रामू और बड़ा हो गया। वह स्कूल जाने लगा। स्कूलमें उसे बहुतसे साथी मिले। उनमें सबसे अच्छा साथी था मोहन।

एक दिन रामूने मोहनसे कहा, "तुम्हें पता है? चंदा मामा, मामा-वामा नहीं है।"

"हां हां, पता है," मोहनने कहा। "चंदा मामा तो एक खरगोश है!"

"क्या? खरगोश?" रामूने पूछा, "नानी तो कहती थीं, वहां एक बुढ़िया बैठी चर्खा कातती है।"

"अरे तेरी नानी बुढ़िया है ना। इसी लिए उसने एक बुढ़ियाको चंद्रमामें बैठा दिया होगा। मेरे भइयाकी किताबमें खरगोशकी कहानी है। वह बड़ा दानी खरगोश था। सबको दान देता था। भगवान उससे खुश हो गए थे। उन्होंने उसे आसमानमें जगह दे दी। तबसे वह मजेसे बैठा हमको देखता रहता है।"

"तुम्हें कैसे पता कि वह हमको देखता रहता

है?" रामने पूछा।

"अरे तू खुद ही देख लेना। जब पूरा गोल गोल चंदा आएगा तो देखना, उसके बीचोंबीच एक खरगोश बैठा होगा। मैंने तो उसे एक दिन कान फड़फड़ाते हुए भी देखा था।"

रामू फिर चक्करमें पड़ गया। चंदा मामासे खरगोश, खरगोशसे बुढ़िया। आखिर कौनसी बात सही है?"

इसके बाद कुछ और समय बीता। रामू खूब बड़ा हो गया। अब वह पांचवीं पासकर छठी कक्षामें पढ़ने लगा।

एक दिन कक्षामें रामूके मास्टरने दुनियाके बारेमें बताया। कहने लगे—दुनिया गोल है, सेब जैसी गोल गोल। रामने सोचा—'बाप रे! सेब जैसी गोल दुनिया!! घेरे जैसी गोल होती, तो भी ठीक था। सेब जैसी गोल दुनियामें कोई रहता कैसे होगा? उसमें तो कोई खड़ा भी न हो सके, बैठ भी न सके और लेट भी न सके!' उसने मास्टरजीसे पूछा, "मास्टरजी, ऐसी गोल दुनिया कहां है?"

उसकी बात सुनकर मास्टरजी मुसकराने लगे, लड़के हंसने लगे और रामू बेचारा सबका मुंह देखता रहा।

प्रति मास

दो नये पुरस्कार

बच्चो, इस अंककी कहानियां ध्यानसे पढ़ो और हमें १५ मई तक लिखो कि अपनी पसंदके विचारसे कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे। तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियोंपर अपनी पसंद बतानी है। इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'मजेदार कहानियां' के अंतर्गत आया है। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम बहुमतसे मिलेगा, 'पराग' में उन सबके नाम छापे जाएंगे और यदि वे दो से अधिक हुए, तो लाटरी द्वारा चुनकर दो बच्चोंको हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कारमें भेजेंगे। अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदिके कार्डों-पर नहीं। अपनी उम्र भी अवश्य लिखो। पता यह लिखो —**संपादक, 'पराग' (हमारी पसंद–५), पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बिल्डिंग, बम्बई–१।**

धीरे धीरे रामूको पता लग गया कि हमारी दुनिया सचमुच ही गोल है। दुनियाकी तरह ही चांद भी गोल है और हमारी ही दुनियाकी तरह वह भी एक छोटी-सी दुनिया जैसा है।

इसके बाद कुछ और साल बीते। रामू जवान हो गया। स्कूल छोड़कर कालेजमें भर्ती हो गया। मोटी मोटी किताबें पढ़ने लगा। बड़ी बड़ी बातें बनाने लगा। एक दिन वह कालेज जा रहा था, तो एकाएक उसे अपने उन्हीं चंदा मामाकी याद आ गई। उसने सोचा—'कैसी मजेकी बात है! चंदा मामाके बारेमें क्या सोचा था और अब क्या सोचना पड़ रहा है। चंद्रमा भी एक छोटी-सी दुनिया है, फिर भी वह हमारी दुनियाकी तरह नहीं है। हमारी दुनिया तो सूरजके चारों तरफ चक्कर लगाती है और चंद्रमा महाराज हमारी दुनियाका ही चक्कर लगानेमें मगन रहते हैं।

'सूरजके चारों तरफ चक्कर लगाने वाली दुनिया तो ग्रह कहलाती है और ग्रहोंका चक्कर लगाने वाली छोटी छोटी दुनिया उपग्रह। यानी चंदा मामा और कुछ नहीं हमारी अपनी दुनियाके उपग्रह हैं।

'हमारी दुनियामें पेड़-पौधे, जीव-जंतु और हवा-पानी सब कुछ है। पर चंद्रमामें इनका नामोनिशान भी नहीं है। वहां ऊबड़-खाबड़ नंगे पहाड़, वैसे ही बीहड़ मैदान और मैदानोंमें जहां-तहां हर तरफ छोटे छोटे गड्ढे हैं। लोगों-का खयाल है कि यह गड्ढे ज्वालामुखी पर्वतोंके मुंह हैं।

'कुछ लोगोंका खयाल है कि चांदके मैदानों-में रेत भरी पड़ी है—हजारों-लाखों वर्षोंकी अन-झाड़ी रेत। मगर मुसीबत यह है कि चांदका सिर्फ एक ही पहलू पृथ्वीकी तरफ रहता है। इसलिए जो कुछ भी दिखलाई पड़ता है वह केवल एक तरफकी चीजें हैं। हो सकता है उसके दूसरी तरफ कुछ और ही हो।

'सबसे मजेकी बात तो यह है कि इतनी सब बातोंका पता चलाने वाले लोगोंने सब कुछ घर बैठे ही पता चलाया है। उनसे पहले चांदको न जाने कितने लोगोंने देखा होगा, पर कोई उसमें बुढ़ियाको चर्खा कातते देखता रहा, तो कोई खरगोशको कान फड़फड़ाते। लेकिन कुछ लोगों-ने इतनी सावधानीसे देखा कि झूठी बातें अलग और सच्ची बातें अलग करके रख दीं। ऐसे

समझदार लोगोंको वैज्ञानिक गणित-ज्योतिषी कहते हैं।

'ऐसे ही कुछ वैज्ञानिकोंका कहना है कि चंद्रमामें और भी बहुत कुछ है, जिसे पृथ्वीपर बैठे बैठे नहीं देखा जा सकता। उसके लिए खुद चंद्रमामें ही जाना होगा। अब भला कोई सोचे कि इतनी दूर चांदमें कैसे जाया जा सकता है? बेचारी नानीका खयाल था कि चांद सौ कोस दूर होगा। नानी बेचारीको क्या पता कि वह दो लाख अड़तीस हजार मील दूर है और कभी कभी इससे भी ज्यादा दूर हो जाता है। इतनी दूर कोई जाए तो कैसे जाए? जबकि ऊपरसे मुसीबत यह कि वहां जानेके लिए न कोई सड़क, न रास्ता, न रास्तेमें कोई पड़ाव!'

रामू यों ही सोचता कालेज पहुंच गया। कालेजमें उसके साथी मिल गए। उनके साथ कुछ समय तक गपशप की। फिर पढ़ाईका घंटा शुरू हो गया और उसीके साथ रामू महाशय चंदा मामाके बारेमें सब कुछ भूल गए।

इसके कुछ ही महीने बाद अखबारोंमें ऐसी खबरें छपीं कि तहलका मच गया। पता लगा कि एक रूसी रॉकेट अंतरिक्षमें जाकर, पृथ्वीके ही गिर्द चक्कर लगाने लगा है। यानी रूसियोंने चंद्रमा जैसे असली उपग्रहकी तरह ही एक अपना बनाया हुआ नकली उपग्रह चालू कर दिया। इस खबरका नतीजा यह हुआ कि लोग ग्रहों और उपग्रहोंकी ही चर्चा करने लगे। कोई कहता रूसी अंतरिक्षमें पहुंच गए हैं, तो अब चंद्रमामें भी जाएंगे, कोई कहता मंगलमें जाएंगे, तो कोई कहता कि ग्रहोंमें जाकर मनुष्योंकी नई बस्तियां बसाएंगे।

थोड़ा समय और बीता, तो अमरीकाने भी ऐसे ही रॉकेट छोड़े। फिर तो दोनोंके बीच जैसे होड़ लग गई। यहां तक कि वह दिन भी आया जब दोनों देशोंके रॉकेट सचमुच ही चांदपर जा उतरे—पहले रूसी-रॉकेट और कुछ समय बाद अमरीकी-रॉकेट।

इन रॉकेटोंका कमाल यह था कि उन्होंने अपने आप चांदकी सतह पर पड़े पड़े फोटोपर फोटो खींचकर पृथ्वीपर भेज दिए। बेचारे चांदके पास जो दो-चार पोशीदा चीजें थीं उनका भी राज खुल गया। उसका दूसरा पहलू भी उजागर हो गया। पता लगा कि वहां रेत तो है, पर नहींके बराबर। यह भी पता लग गया कि चंदा

"बाकी तो मेरे बाप-दादाके किए हुए शिकार हैं... मेरा शिकार यह रहा!"

मामाकी छिपी सतह भी लगभग वैसी ही है जैसी खुली सतह।

सब लोगोंकी तरह रामूने भी इन खबरोंको पढ़ा। पढ़कर अपने दोस्तोंको बतलाया। दोस्तोंने कहा, "अब, चांद क्या है, कैसा है, कहना फिजूल है। अब तो बस किसी तरह चांदमें जानेकी जुगत लगानी चाहिए।"

"लेकिन," रामू बोला, "भारत भी कभी चांदपर रॉकेट भेजेगा? हमारे तो आपसी झगड़े ही खतम होने पर नहीं आते।"

"आएंगे, आएंगे," एक दोस्तने कहा, "हम भी रॉकेट बनाएंगे, अंतरिक्षकी सैर करेंगे, चांदमें टहलेंगे। फिक्र क्यों करते हो, झगड़ा करने वाले कितने दिन और रहेंगे? आगे जो कुछ होगा हमारा होगा और हम अपने भारतको जैसा चाहेंगे वैसा ही सुंदर बना लेंगे।" ●

www.kissekahani.com

हास्य कहानी

रेल-यात्रा

- अवतारसिंह

डैडीकी छुट्टी दफ्तरसे मंजूर नहीं हुई। तय हुआ कि इस बार दादाजी ही बच्चोंको गर्मीकी छुट्टियोंमें उनके मामाजीके यहां गांव ले जाएंगे।

रेलका सफर, बच्चोंका साथ। दादाजी साफ मुकर गए कि मैं तो इन शैतानोंको नहीं ले जा सकता।

पर, फिर उन्होंने सोचा कि गांवमें बच्चों-पर उनका एकमात्र अधिकार होगा। घरमें मम्मी और डैडीकी उपस्थितिका खयाल बच्चोंको झिड़कते हुए दादाजीको एक सीमामें बांधे रखता है। पर, गांवमें वह होंगे और बच्चे; आनंद आ जाएगा।

दादाजीके दिलमें यह धड़का भी समाया हुआ था कि कहीं सफरमें बच्चे बगावत न कर बैठें, इसलिए डैडीसे बोले, "भई रामलाल, ले तो इन्हें जाऊंगा, पर रेलमें जो भला-बुरा मैं कहूं, इन्हें एकदम मानना पड़ेगा फौरन। बेलाग बात कहता हूं—रेल शैतानका चर्खा है; यदि इन्होंने मन-मानी चलाई और तीनके बदले दो लौटे, तो दोष मुझे मत देना।"

बस डैडीने बच्चोंके नाम सफरमें दादाजीकी प्रत्येक आज्ञा माननेका कड़ा आर्डर जारी कर दिया।

आखिर वह शुभ दिन आया। रेल सुबह सात बजे छूटती थी। दादाजी चार बजेसे ही सफेद चिट्टा धोती-कुर्ता पहनकर सज गए और शोर मचाने लगे कि अब देर किस बातकी है; स्टेशन क्यों नहीं चलते?

सवा छह बजे डैडी टैक्सी लाए। सब स्टेशन पहुंचे।

डैडीने सैकंड क्लासके टिकट ले दिए ताकि भीड़ वगैराकी परेशानी न हो।

गाड़ी चली। बच्चोंने खिड़कीमेंसे रूमाल हिलाए। धीरे धीरे मम्मी और डैडी नजरोंसे ओझल हो गए। तीनों खिड़कीके पासवाली सीटोंपर बैठ गए।

तीन पुरुषों और दो स्त्रियोंको छोड़कर

पूरे डिब्बेमें कोई न था। दादाजीका इस समय बच्चोंपर एकच्छत्र राज था। जैसे चुनावसे पहले पार्टियां 'सब बंद' आंदोलन चलाकर अपनी शक्ति परखती हैं, उसी तरह उन्होंने सोचा कि क्यों न शुरूमें ही आजमा लिया जाए कि बच्चे उनका कितना कहना मानते हैं। वह बोले, "अरे, ओ राजू, मुन्नू, पिंकी! यह क्या कर रहे हो?"

"क्या?" तीनों चौंके। वे रेलसे बाहर पीछे-को दौड़ते पेड़-पौधे देखनेके सिवाय और कुछ नहीं कर रहे थे।

"अरे भई! तुम लोग खिड़कीके पास बैठे हो। इंजनसे कोई कोयलेका टुकड़ा आंखोंमें आ गिरेगा, तो?"

तीनों बच्चे ठगे-से सोचते रह गए। इंजन कमसे कम आधा फर्लांग दूर था। यूं भी उनकी यह पहली रेल-यात्रा न थी। हर वर्ष मम्मी और डैडीके साथ गांव जाते हैं। खिड़कीके पास बैठना वे अपना जन्म-सिद्ध अधिकार मानते हैं। बड़े तो दुनिया देख चुके हैं। खिड़कियोंके पास वाली सीटें स्पेशल बच्चोंके लिए बनाई गई हैं ताकि वे भी दुनियाकी जानकारी प्राप्त कर सकें।

"मेरा मुंह क्या देख रहे हो? बीचवाली लंबी सीटपर बैठ जाओ," दादाजी पूरे जोरसे गरजे।

बच्चे सहम गए। दो यात्री सो रहे थे, वे जग गए। जो जाग रहे थे, कांप गए। छतसे लटका बिजलीका पंखा करीब आधा चक्कर काट गया। दादाजीने स्वयं अनुभव किया कि उन्हें इतना तेज नहीं बोलना चाहिए था, पर तोपका गोला और मुंहका बोला कहीं वापस आए हैं! और बच्चे, वे बेचारे कभीके बीचवाली सीटपर आ गए थे।

तीनोंने समय बितानेका पूरा इंतजाम कर रखा था। दूरदर्शी थे। राजूने जेबसे ताश निकाले और तीन-दो-पांच शुरू हो गया।

दादाजी डिब्बेमें इधर-उधर टहलने लगे। बच्चोंका ताश खेलना उन्हें काफी अखर रहा था, पर चुप्पी लगा गए। अब वह 'यात्रियोंके लिए निर्देश' पढ़ने लगे। कम्बख्त रेलवेवालोंने कहीं नहीं लिखा था कि डिब्बेमें ताश खेलना मना है।

तभी मुन्नू और पिंकी झगड़ने लगे। मुन्नूको उससे तीन पत्ते खींचने थे। वह कहती थी मेरे हाथ दो ही कम थे। राजूके हाथ पूरे थे, सो मुन्नू-को दो पत्ते खींचने होंगे।

दादाजी तेज कदमोंसे उन तक पहुंचे और पास आकर बोले, "सुनो, ताश इधर लाओ, सारेके सारे।"

बच्चोंने चुपचाप पूरे ताश उन्हें पकड़ा दिए। अब दादाजीको यह नागवार गुजरा कि बच्चोंने कारण पूछे बिना बड़े प्रेमसे ताश उनके हवाले कर दिए। एक कोनेकी ओर इशारा करते हुए वह बोले, "तुम्हारे शोरसे वह भाई साहब जग गए हैं!"

तभी उनके 'वह भाई साहब' बोल उठे, "बच्चोंको खेलने दीजिए, साहब, हमें तो आपकी भीषण गर्जनाने पहले ही जगा दिया था। मैं तो समझा डिब्बे पर बिजली गिरी है!"

सब हंसने लगे। दादाजी लाल लाल आंखों-से उस आदमीको पी जानेकी असफल कोशिश करने लगे।

नई दिल्लीसे चलकर अभी पहला स्टेशन भी नहीं आया था। पिंकीने हिसाब लगाकर राजू

और मुन्नूको बताया कि यदि एक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन तक गाड़ी पहुंचनेके बीच दादाजी कुल दो बार भी झिड़कें, तो भी गांव पहुंचन तक वह हमें ५६ बार झिड़क चुके होंगे।

बस तीनोंने कमर कस ली।

इधर दादाजीने देखा कि बच्चे शांत बैठे एक दूसरेका मुंह देख रहे हैं, तो संतुष्ट होकर वह खिड़कीके साथवाली सीटपर बैठ गए। ठंडी-ठंडी हवा लग रही थी। गर्मियोंके दिन। खिड़की-से सिर टिकाकर वह ऊंघने लगे और फिर सो गए।

अचानक घबराए हुए राजूने उन्हें जगाया और बोला, "दादाजी, दादाजी! पिंकी स्टेशन-पर ही रह गई।"

बताओ तो जानें

बच्चो, नीचे भारतके कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियोंके नाम तथा सामने उनके नामोंके पहले लगनेवाले विशेषण दिए गए हैं। क्या तुम इन नामोंके पूर्व उनके सही विशेषण लगा सकते हो? यदि सही उत्तर बतानेमें कठिनाई महसूस हो, तो पृष्ठको उल्टा करके सही जानकारी प्राप्त कर लो।

(१) विद्यापति . . . . . .राष्ट्रकवि
(२) रवीन्द्रनाथ ठाकुर . . . . . .भारतेन्दु
(३) श्रीरामचंद्र . . . . . .सन्त शिरोमणि
(४) तेनसिंह नोर्के . . . . . देशबन्धु
(५) चित्तरंजनदास . . . . मैथिल कोकिल
(६) महात्मा बुद्ध . . . .मर्यादा पुरुषोत्तम
(७) गुरु गोविन्द सिंह . . . . .शाक्य मुनि
(८) बाबू हरिश्चन्द्र . . . . . .विश्वकवि
(९) मैथिलीशरण गुप्त . . . . .हिमसम्राट्
(१०) तुलसीदास . . . . . दशमेश

—आर. के. सी.

उत्तर

(१) मैथिल कोकिल, (२) विश्वकवि, (३) मर्यादा पुरुषोत्तम, (४) हिमसम्राट्, (५) देश-बन्धु, (६) शाक्य मुनि, (७) दशमेश, (८) भारतेन्दु, (९) राष्ट्रकवि, (१०) सन्त शिरोमणि।

"क्या?" दादाजीकी नींद हवा हो गई। पूछा, "स्टेशनपर किसलिए उतरी थी?"

"पानी पीने।"

"मुझसे बिना पूछे गई थी न! मेरे माथेपर काला टीका जो लगाना था। स्टेशन कितना पीछे छूट गया?" दादाजीका स्वर भर्रा गया।

"अभी तो गाड़ी दो-तीन फर्लांग भी नहीं चली।"

"जंजीर खींच दो।"

राजूने जंजीरकी ओर हाथ बढ़ाया। पर यूं घबराकर पीछे हटा जैसे वहां कोई बिच्छू बैठा हो। बोला, "दादाजी, यहां तो लिखा है कि केवल उस दशामें जंजीर खींची जा सकती है, जब किसीके प्राण संकटमें हों या पचास रुपयेसे अधिकका सामान गिर गया हो। पिंकीका मूल्य पचास रुपये तो क्या होगा?"

"बेवकूफ! उसके प्राण संकटमें जो हैं।"

"आप नाहक घबराते हैं, दादाजी, वह बड़ी चंट है। देख लेना, आठ बजे वाली 'डाक गाड़ी' पकड़कर हमसे पहले गांव पहुंच जाएगी।"

"नालायक, बकता जाएगा..." इस समय दादाजीके हाथ-पांव फूले हुए थे। उन्होंने स्वयं जंजीरकी ओर हाथ बढ़ाया कि राजूने उनका हाथ रोक लिया और बोला, "दादाजी, जरा सोचए तो। हो सकता है यह ट्रेन हमारे जवानोंके लिए गोला-बारूद या रसद ले जा रही हो, इसी ट्रेनसे कोई डाक्टर मरीज देखने जा रहा हो या कोई नेता किसी अकाल-पीड़ित प्रदेशका दौरा करने जा रहा हो; यदि आप केवल पिंकीके लिए जंजीर खींचेंगे, तो वे सब लेट हो जाएंगे।"

राजूका यह लच्छेदार भाषण सुनकर मुन्नू-की हंसी छूट गई। वह बड़ी सफाईसे हंसीको रोनेमें बदल गया और सुबकने लगा, "पिंकी... पिंकी!"

दादाजी मुन्नूकी हंसी सुन चुके थे। कुछ बच्चोंका हंसना और रोना एक जैसा होता है। दादाजी ऐसे कोरे बुद्धू न थे, झट किसी षड्यंत्रकी गंध पा गए। जंजीरका ध्यान छोड़कर सीटोंके नीचे, बक्सोंके पीछे पिंकीको ढूंढ़ने लगे। एक स्त्रीने सहानुभूति दिखाई, पूछा, "क्या गुम गया है, बाबाजी?"

"कुछ नहीं, बहनजी। एक छोटी-सी बच्ची थी। यहीं कहीं गिरी है," पीछेसे राजूने पूरी गंभीरतासे जवाब दिया। वह स्त्री और साथ बैठा

उसका पति हंसने लगे।

दादाजी झल्लाकर अपनी सीटपर वापस बैठ गए। राजूने बड़े प्रेमसे पूछा, "दादाजी, जंजीर खींच दूं?"

"तू पहले मेरी गर्दन खींच दे," दादाजी उसपर बरसे, फिर कुछ सोचकर बाथरूमकी ओर गए, पर पिंकी वहां भी नहीं थी।

तभी मुन्नू सुबकते हुए बोला, "ऊंऊं..... पिंकी कह रही थी.... ऊंऊं... मैं दूसरे डिब्बेमें बैठूंगी... दादाजी खिड़कीके पास बैठने नहीं देते।"

"वह दूसरे डिब्बेमें बैठ गई होगी। स्टेशनपर तो कहीं दीख नहीं रही थी," राजूने उसका एकदम समर्थन किया।

दादाजीकी रोनी सूरत देखकर मुन्नूको हंसी आने लगी। वह और जोरसे रोने लगा। राजूने उसे समझाया, "रो मत, मुन्नू... रो मत, मेरे अच्छे भैया... गाड़ी रुकने तो दे, दादाजी अभी पिंकीको मंगा देंगे।"

"मैं क्या उसे हवामेंसे पकड़ लाऊंगा?" दादाजी चीखे। समझ गए थे कि पिंकी है इसी डिब्बेमें ही। पर जब तक कि अपनी आंखोंसे वह उसे देख न लें, उन्हें विश्वास कैसे आए। घुटने टेकते हुए उन्होंने राजूसे कहा, "राजू भई, क्यों परेशान करते हो। कहां है पिंकी?"

"दादाजी, पिंकी है इसी ट्रेनमें ही। वह कहती है कि जब तक मेरी दो मांगें स्वीकार नहीं हो जातीं, मैं इस डिब्बेमें नहीं आऊंगी।"

"तो वह हमारे सामने आकर अपनी मांगें रखे," दादाजीने नया पासा फेंका, पर बच्चे उनके भी गुरु थे।

"दरअसल उन्हें अपना निर्णय बहुत जल्दीमें लेना पड़ा। जानेसे पहले वह हमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर गईं..." राजू इतने आदरसे बोला जैसे पिंकी प्रधान मंत्री हो और वह उसका सेक्रेटरी।

"कौन-सी मांगें हैं? जरा सुनूं तो।"

"खिड़कीके साथ वाली सीटपर बैठनेकी अनुमति और जब जी चाहे ताश खेलना।"

दादाजी एकदम उनकी बात स्वीकार कर लें, तो दादाजी ही किस बातके। इस बातको भूलकर कि पिंकी डिब्बेमें नहीं है वह बोले, "भई, मुझे सोचनेका समय दो।"

नई दौड़ की तैयारी

तन्मयता से पढ़ीं पुस्तकें,
हमने खूब पढ़ाई की;
तेज परीक्षा के घोड़ों पर
हमने खूब चढ़ाई की!

लंबी-चौड़ी दौड़ लगाई,
लेकिन कभी न हम हारे,
थककर चूर हुए सब घोड़े,
हांफ गए थे बेचारे!

जो भी दौड़ लगाई हमने,
वह अपने अनुकूल रही;
ढंग हमारा गलत नहीं था,
हम थे बिलकुल सही सही।

छाया है उल्लास अनूठा,
नई विजय हमने पाई,
लो, गर्मी अब तेज हो गई,
इधर छुट्टियां भी आईं!

फिर आगामी नई दौड़ के
लिए करेंगे तैयारी;
एक वर्ष के बाद इन दिनों—
आएगी अपनी बारी!

—जगदीशचन्द्र शर्मा

"सोचिए, पर जानेसे पहले वह कह गईं थीं कि यदि उनकी मांगों पर ध्यान न दिया गया, तो सोनीपत स्टेशनपर उतरकर वह चुपकेसे घरकी गाड़ी पकड़ लेंगी। ...और सोनीपत कुल दो-तीन मील दूर है!"

"अच्छा, मान लेता हूं। तुम लोग खिड़कीके पास बैठ सकते हो, पर हाथ बाहर मत निकालना। ताश खेल सकते हो, पर अधिक शोर मत मचाना। दादाजीने सरकारकी भांति शर्तें लगाकर उनकी मांगें स्वीकार कीं और अपनी लाज रखी। फिर बोले, "अब उसे बुला तो दो। दंगोंकी जड़..."

तभी धम्मसे कोई चीज ऊपर सामान रखनेके तख्तेसे दादाजीके सामने गिरी। वह चौंके। पिंकी हंसती हुई उनके सामने खड़ी थी। उसने जोरसे कहा, "दादाजी!" "जिन्दाबाद!", बच्चोंने नारा लगाया और तीनों खिड़कियोंके साथ वाली सीटोंपर बैठ गए। ●

हुप्पू क्या

"सीधी सी बात थी। बाबूजी से चांद पर जाने की ज़िद की और मोटर पर समझौता हो गया!"

"अमा, बंद भी करो यह मुंह-चढ़ाई। आज मैंने मलाई नहीं खाई।"

"समझो तो, यदि दादाजी के दांत न छिपाए तो उनके काजू-किशमिश हमें कैसे मिलेंगे?"

हुड़दंग

"ज़रूर किसी नेता की कार है. वरना इस तरह कीचड़ उछालता कौन चलता ?"

"अम्मां देखते ही पूछेंगी- कुश्ती में मिला ?"

"मुन्ने, और थोड़ी देर खेलो। पिताजी समझेंगे स्याही तुमने फैलाई.....!"

छुट्टियाँ और दिलचस्पियाँ

—अलकारानी जैन

टिकट संग्रह करनेका शौक एक ऐसा शौक है, जिसमें बहुतसे बच्चे गहरी दिलचस्पी लेते हैं। यह शौक आगे चलकर दुर्लभ टिकटोंके संग्रहके शौकमें बदल सकता है। इससे कभी बैठे-ठाले किस्मत भी बदल सकती है। लेकिन यह एक लंबी बात है। फिर भी यह एक ऐसा शौक है, जिससे संसारके विभिन्न देशोंके भूगोल और इतिहासका सहज ज्ञान हो सकता है।

कुछ बच्चोंको भ्रमणका शौक होता है। वे अपने शहरसे बाहर निकलकर देखना चाहते हैं कि उनके अपने 'कुएं' से बाहर दूसरे कुएं भी हैं और उनमें दूसरे 'मेंढक' भी निवास करते हैं। वे प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानोंको देखनेके लिए अपना दल बनाते हैं। छुट्टियोंका उपयोग वे अपने देशको निकटसे जाननेके लिए करते हैं। क्या तुम जानते हो कि हिंदीके एक प्रसिद्ध विद्वान स्व. श्री राहुल सांकृत्यायनने एक लाजवाब पुस्तक लिखी थी 'घुमक्कड़ शास्त्र'? इसमें बिना घरसे पैसा लिये (वास्तवमें घरसे भाग कर! बाप रे!) संसार घूमनेकी तरकीबें लिखी हैं। राहुलजी समझते थे कि सबसे अच्छा भ्रमणका शौकीन वह होता है, जो घरसे टिकटके पैसे भी लेकर नहीं चलता! चाहे दूसरोंकी हजामत बनाकर (इस बातको मुहावरेमें न समझ बैठना!), चाहे मेहनत-मजदूरी करके, चाहे रास्तेमें चलते हुए बैल-गाड़ियों, मोटर साइकिलों या मोटरोंपर लिफ्ट लेकर —किसी भी तरह, कितना भी समय लगे, आगे बढ़ते रहो। लोगोंको देखो, उनके साथ बरतो, दुनियाके रीति-रिवाजोंसे जान-पहचान करो—तुम्हें पता लगेगा जिंदगी वह नहीं है, जो तुम्हारे चारों तरफ 'सिमटी' हुई है। जिंदगी वह है, जो तुम्हारे चारों तरफ 'फैली' हुई है।

कुछ बच्चोंको खेल-कूदका और कसरतका शौक होता है। वे अपने स्कूल-कालिजोंकी सारी छुट्टियां अपने इस शौकको पूरा करनेमें बिता देते हैं। लेकिन बिरले ही बच्चे ऐसे होते हैं, जो इन खेल-कूदोंमें अव्वल नंबरका स्थान प्राप्त करनेके फेरमें रहते हैं। कभी कभी ऐसे बच्चे खेल-कूदमेंसे ही अपने आने वाले जीवनके लिए एक निश्चित मार्ग भी बना लेते हैं।

बच्चोंके मनको ललचानेके लिए कितनी दिलचस्पियां सब तरफ बिखरी पड़ी हैं—कहानियां और उपन्यास पढ़ना, कविता-कहानी लिखना, चित्र-कला, संगीत और नृत्य, विज्ञानके प्रयोग करना, रेडियो बनाना और सुधारना, सिनेमा, सरकस, पत्र-मित्र बनाना, मूर्ति-कला और मौडलिंग, फोटोग्राफी, कढ़ाई-बुनाई और पाक-कला व गृह-विज्ञान, तैरना और नाव खेना—इत्यादि इत्यादि।

मनोरंजनकी योजना बनाओ

इनमेंसे, या इससे बाहर भी, किसी बच्चेके एक या अनेक शौक हो सकते हैं। किसी भी कलामें उसकी दिलचस्पी हो सकती है। लेकिन प्रति वर्ष जब मैं बच्चोंको अपनी छुट्टियां बिताकर स्कूल-कालिजोंमें भीड़ लगाए देखती हूं, तो मुझे लगता है कि इनमेंसे ज्यादातर भले

जरूरतमंद विद्यार्थी छुट्टियोंमें रेडियो मरम्मतका काम कर सकते हैं

ही ताजादम होकर आए हों, शायद ही किसी बच्चेका सामान्य ज्ञान पिछले वर्षसे कुछ ज्यादा हुआ हो। उन्होंने अपनी छुट्टियोंमें कोई भी शौक पूरा किया हो, लेकिन इस बातका डर मनमें रखकर कि वे अपना समय गंवा रहे हैं।

इसके विपरीत, अगर तुम अपने मनोरंजनकी एक योजना बनाओ, अगर तुम मनमें संकल्प करो कि तुम्हारी दिलचस्पी जिस चीजमें है उसे तुम पूर्णता तक ले जानेका प्रयत्न करोगे, तो जानते हो क्या होगा? जब तुम स्कूल-

कालिजोंसे निकलकर 'चलती चक्की' में प्रवेश करोगे, तो दोनों पाट मिलकर भी तुम्हें आसानीसे पीस नहीं पाएंगे।

उदाहरणके लिए तुम घूमनेकी योजना बनाते हो। कितना अच्छा हो कि तुम घूमते समय जिन स्थानोंको देखो उनकी विशेषता और उनसे सम्बद्ध दंत-कथाओं-को अपनी डायरीमें नोट करते चलो। अगर उसके साथ तुम्हें फोटोग्राफीका भी शौक है और एक नन्हा-मोटा कैमरा तुम्हारे पास है, तो तुम उन ऐतिहासिक स्थलोंके ऐसे चित्र भी ले सकते हो, जो कुछ असाधारण दृष्टिसे लिये गए हों– सामान्य मिलने वाले चित्रोंसे कुछ अलग विशेषता रखते हों। यदि तुम्हें अपने आपको या अपनी कलाको साधारणसे कुछ अलग दिखानेका चाव है, तो तुम अपने इस भ्रमणसे कुछ पैसा भी पैदा कर सकते हो। बहुतसे साप्ताहिक और मासिक पत्र ऐसे विषयों और फोटुओंको प्राप्त करनेके लिए आंखें पसारे बैठे रहते हैं, जिनमें वे अपने लाखों पाठकोंकी दिलचस्पीका सामान देखते हैं। लेकिन ध्यान रखो, यदि तुमने 'साधारण' सामग्रीका भी भली प्रकार जायजा नहीं लिया है, तो तुम्हें अपनी साधारण चीज भी विशेष लग सकती है। इससे काम नहीं बनेगा।

लिखनेकी कला या जो कुछ तुम कहना चाहते हो उसे प्रकट करनेकी कला एक ऐसी कला है, जो तुम्हारी परीक्षाओंमें भी काम आती है। किसी विषयमें तुम्हारी जानकारी तुम्हारी लिखनेकी कलासे ही जांची जाती है। यदि तुम अपनी जानकारीको मनोरंजक ढंगसे, सिलसिलेवार स्केचों, चित्रों आदिसे कागजपर उतारनेकी कला जानते हो, तो तुम अपनी कक्षाके प्रथम श्रेणीके विद्यार्थियोंमें अवश्य होगे। इसलिए हम तो कहेंगे कि सबसे पहले और कोई शौक पालनेकी बनिस्बत तुम इसी कलाका अभ्यास करो—लेखक या कवि बननेके लिए नहीं, बल्कि जो कुछ देखते हो उसे अंकित करनेके लिए, दूसरोंकी दिलचस्पियां अपनी ओर करनेके लिए, 'पॉपुलर' बननेके लिए।

ध्यान रखो, योजनाबद्ध और सिलसिलेवार किया हुआ कोई भी काम—चाहे वह कितना ही छोटा हो—कभी बेकार नहीं जाता। यहां तक कि कहानी या उप-न्यास पढ़नेकी भी योजना बनाई जा सकती है। किसी अच्छी-सी लायब्रेरीके सदस्य बनो और छांट छांटकर भिन्न भिन्न लेखकोंकी रचनाओंको पढ़ो। साथ ही साथ नोट करते जाओ किसने क्या क्या कथानक लिये हैं, कैसे-कैसे पात्र उठाए हैं, क्या शैली अपनाई है और दूसरोंके मुकाबलेमें उसमें क्या क्या विशेषताएं या कमियां हैं। छुट्टियोंके अंतमें तुम देखोगे कि तुम्हारा यह योजनाबद्ध सामान्य ज्ञान तुम्हारे कोर्सकी पाठ्य पुस्तकोंके लिए कितना सहायक सिद्ध हो रहा है।

सिनेमा देखनेकी कला

उदाहरणके लिए मैं उन दिलचस्पियोंको ले रही हूं, जो सबसे ज्यादा बेकार समझी जाती हैं या जिनके लिए माता-पिताओंकी भौंहें वक्र-रेखाओंमें बदल जाती हैं। अपने साथियोंसे तुम्हें अक्सर ही फिल्म-स्टारोंके बारेमें कुछ न कुछ सुननेको मिलता होगा। अक्सर इन बातचीतोंमें उनके खूबसूरत चेहरोंका भाग ज्यादा रहता है—उनकी कला और एक्टिंगके बारेमें कुछ 'पासिंग' रिमार्क भर दिए जाते हैं। कितने साथी तुम्हारे ऐसे हैं, जो उनकी जीवनियोंके बारेमें, उनके संघर्षोंके बारेमें जानते हैं? कितने विद्यार्थी ऐसे हैं, जो यह जानते हैं कि तड़क-भड़कसे परिपूर्ण जो यह रंगीन दुनिया है, इसमेंसे उनके सामने सिर्फ 'परिणाम' आता है? कभी कभी हजारों

विद्यार्थियोंके लिए फोटोग्राफीकी हौबी भी बड़े कामकी है

आदमियोंके कई सालके लगातार प्रयत्न, संघर्ष, आशाओं-निराशाओं, उतार-चढ़ावके बाद एक ढाई घंटेका 'परि-णाम'—एक फिल्म उनके सामने प्रस्तुत होती है।

अगर हम यह कल्पना करें कि तुम छुट्टियोंमें सिल-सिलेवार, योजना बनाकर फिल्म जगतके आज चमकने वाले सितारोंके उस समयके जीवनका अध्ययन करोगे, जब उन्होंने संघर्ष किया था और कष्ट झेले थे, तो क्या तुम चक्कीके पाटोंके बीचसे सही-सालिम बाहर निकलनेके लिए ज्यादा बलवान नहीं बनोगे?

सिनेमा सब देखते हैं। कुछ पैसे फूंककर आ जाते हैं। फिल्म अच्छी है या बुरी इसपर चर्चाएं भी करते हैं। कुछ फिल्म-स्टारोंकी सराहना या बुराई भी करते हैं और इसके बाद दूसरी फिल्म देखने चल पड़ते हैं। यह सिनेमा देखना नहीं है– और अगर है भी, तो केवल उन लोगोंके लिए जो 'एस्टेब्लिश' हो गए हैं, जिनका ध्यान खींचनेके लिए कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण मसले इंतजार करते रहते हैं। सिनेमा देखना उनके लिए मनोरंजन है। लेकिन विद्यार्थी अगर अपनी दिलचस्पियोंको यहीं तक सीमित रखेगा—तो, भई, माफ करना—कक्षामें प्रथम आने वाले अनेक विद्यार्थी ऐसे भी निकलते हैं, जो यथार्थ जीवनमें जड़

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

कहानी

अठन्नी

—स्वतंत्र

www.kissekahani.com

उस दिन टन्नी अपने स्कूलके साथ ओखला पिकनिकपर गया हुआ था। उसका छोटा भैया छोटे भी साथ था। छोटे बहुत छोटा था—पांच सालसे भी कम का। टन्नी उससे दो वर्ष बड़ा था।

सब बच्चे निकटके बगीचेमें झूला झूल रहे थे। एक झूलेपर टन्नी और साथवाले झूलेपर रंजे और पिंटू सवार थे। दोनों पार्टियोंमें मुकाबला हो रहा था कि पेंग कौन पार्टी सबसे ऊंची पहुंचाएगी।

जैसे जैसे टन्नीकी पेंग ऊपर बढ़ती जाती, वैसे वैसे नीचे बैठे छोटेका किलसना बढ़ता जाता। वह बड़बड़ा रहा था—"तलते तलते भी मम्मीने तन्नीछे कहा था कि मुजे हमेछा अपने साथ लखे। पल जे तन्नी है ति एतदम नालायत! मम्मीती बात हमेछा तालता है। छब तुछ छुन तल बी ऐछे जूले जा लहा है मानो तानोंमें लूई छुछ लखी ओ।"

झूलते झूलते टन्नीको वृक्षोंकी ओटमेंसे पुलके पास बैठा एक खोमचेवाला दिखाई पड़ा। उसके खोमचेपर रखा आम-पापड़ोंका ढेर बहुत प्यारा लग रहा था। टन्नीके मुंहमें पानी भर आया। एक पलके लिए भी रुकना उसके लिए दूभर हो गया। उसने झूला धीमा किया। झूला अभी पूरी तरह रुका भी न था कि टन्नी झट उससे कूदकर खोमचेवालेकी तरफ दौड़ पड़ा।

छोटे टुकुर टुकुर टन्नीकी हरेक हरकतको देख रहा था। इसलिए भागते टन्नीको छोटेकी पकड़ाईमें आते देर नहीं लगी। पुलपर पहुंचकर टन्नीने झटपट जेबमेंसे एक अठन्नी निकाली और दस पैसेके दो टुकड़े आम-पापड़के लिये। एक टुकड़ा उसने अपने मुंहमें रखा और दूसरा छोटेको थमा दिया।

तब तक रंजे, पिंटू और टन्नीका एक दूसरा दोस्त बबलू भी आ गए। घबराहटने तीनोंका सांस फुला दिया था। बड़ी उत्सुकतासे वे टन्नी और छोटेको देख रहे थे।

टन्नी तो दोस्तोंसे मुंह फेरे चुसड़-चुसड़, आम-पापड़ चूस रहा था। बेचारा छोटे उन छह आंखोंमेंसे झांक रहे छह सवालोंका क्या जवाब देता! उसे खुद ही समझमें नहीं आ रहा था कि जब आम-पापड़वाला कहीं भागा नहीं जा रहा है, तो फिर इतनी तेज दौड़ लगानेका मतलब क्या था?

तीनोंने जब देखा कि उनके साथ छोटे भी टन्नीको अचरज भरी निगाहोंसे देखने लगा, तो उन्हें बरबस टन्नीसे पूछना पड़ा : "क्या हुआ?"

टन्नीने पहले तो जल्दी जल्दी आम-पापड़ चबाया। फिर बोला—"मार डाला पापड़वालेको!"

सबने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। नदीमें भी दूर तक देखा। बेचारा शायद डूब गया हो। परंतु भीड़ कहीं भी इकट्ठी नहीं हो रही थी। कोई भी अनहोनी घटना हुई नहीं दीख पड़ी।

"कहां था?" रंजेका मुंह अब भी आश्चर्यसे फटा हुआ था।

टन्नी खिलखिला पड़ा : "तुम बिल्कुल उल्लू हो!"

टन्नीको 'उल्लू' शब्दका बारबार प्रयोग करनेकी बुरी आदत थी और रंजे इस शब्दसे बहुत चिढ़ता था, इसलिए अगर उनके मित्र बीच-बचाव न करते, तो सदा की भांति आज भी रंजेके दांत भिच जाते, आस्तीनें चढ़ जातीं, और फिर दोनों गुत्थम-गुत्था हो जाते। चाहे टन्नी अथवा रंजेके हाथ-पांव टूटते या न टूटते, मगर छोटेके द्वारा रंजेके काममें बाधा डालनेके कारण उसके घुटने अवश्य फूट जाते।

टन्नी बात बिगाड़नी नहीं चाहता था। उसने रंजेके गलेमें बाहें डालीं और मित्रोंको

एक वृक्षके नीचे ले गया और वहां बने चबूतरेपर बैठकर उसने मित्रोंको बताया : "मम्मीने हमारे खर्चके लिए मुझे एक रुपया और एक अठन्नी दी थी। बहुत कोशिश की पर किसी भी खोमचेवाले-ने अठन्नी नहीं ली। सबने कहा कि खोटी है। पर इस आम-पापड़वालेको ऐसा चकमा दिया कि वह अठन्नीको उलटता-पलटता, इससे पहले ही मैंने वह उसके डिब्बेमें डाल दी। बेचारेका दस पैसेका आम-पापड़ गया, चालीस पैसेका छुट्टा गया।"

छोटेने विचारा कि वह उस महापुरुषका छोटा भैया है जो खोटी अठन्नीसे पूरा लाभ उठा सकता है। उसे अपनेमें बड़प्पनका आभास होने लगा। वह उठा और हाथ पीछे कमरसे बांध धीरे धीरे ऐसे चहलकदमी करने लगा मानो किसी विषयका बहुत बड़ा विद्वान् अपनी विकट समस्या-का समाधान खोज रहा हो।

ऊपर वृक्षपर चढ़ा नरेन शायद देश-हित-की बात विचार रहा था। नरेन टन्नीकी ही कक्षा-में पढ़ता था। मगर इन सबसे दो-तीन वर्ष बड़ा होनेके कारण वह कुछ अधिक समझदार हो गया था। जब इनकी बातें उसके लिए असह्य हो गईं, तो वह वृक्षपरसे उतर पड़ा और बोला, "तुम लोग देशके लिए बिलकुल निकम्मे हो।

तुम जैसे ठगोंको एक दिन अपनी करतूतोंका परिणाम अवश्य भुगतना पड़ेगा। तुम्हें तो. . . फौरन गोलीसे उड़ा देना चाहिए।" कुछ विचारते हुए उसने निर्णय दिया।

छोटेके पल्ले उसकी बात तो कम पड़ी, किंतु उसे इतना अवश्य पता चल गया कि नरेन उनपर रोब जमानेकी चेष्टा कर रहा है। वह बोला—"तू हमाली मम्मी बनेदा, तो हम तुजे मालेंगे।"

"मारेंगे क्या, जमुनाजीमें ही डुबो देंगे," टन्नीने कहा।

नरेनने पहले पुलके नीचे उफनती-गरजती लहरोंको देखा और फिर इस चंडाल चौकड़ीकी तरफ। उसे पता था कि इनमेंसे कोई भी सात सालसे कमका नहीं था। यदि सातको एकके नीचे एक चार बार लिखकर जोड़ा जाए, तो अट्ठाइस हो जाता है। और अट्ठाइस सालके किसी व्यक्तिसे जूझना उसके बसकी बात नहीं थी। यदि इस चार सालके छटंकीको भी सम्मिलित कर लिया जाए, तो बस भगवान ही रक्षक है। इसलिए उसने मुंह नीचाकर वहांसे चुपचाप चल देना ही उचित समझा।

खिसियाए नरेनके जलेपर नमक छिड़कने के लिए टन्नीने छोटेको हुक्म दिया—"छोटे, अठन्नी चलनेकी खुशीमें हम अपने दोस्तोंको पार्टी देंगे। जाओ, दाल-सेवके दस-दस पैसेवाले चार पत्ते ले आओ।"

छोटेको बात बातपर आदेश देनेकी टन्नीको बुरी आदत हो गई थी। कभी पानी लाओ, कभी यह करो, कभी वह करो। आज भी उसने नरेनको चिढ़ानेके लिए उसे हुक्म तो सुना दिया, परंतु तभी उसे ध्यान आया कि छोटेसे पत्ते मंगवानेका अर्थ होगा—यहां आनेसे पूर्व ही चारों पत्तोंमेंसे थोड़ा थोड़ा उसके पेटमें पहुंच जाना।

चारों मित्रोंको स्वयं कष्ट करके जाना पड़ा। उन्होंने दाल-सेवके पत्ते डटकर उड़ाए। टन्नीने छोटेको भी अपने ही पत्तेमें खिलाया।

छोटेने दाल-सेव तो खा ली किंतु आम-पापड़की चटपटाहट वह अभी भूला नहीं था। उधर सांझ हो जानेके कारण आम-पापड़वाला अपना बोरिया-बिस्तर समेटनेकी तैयारी कर रहा था। बस छोटेको मचलते देर नहीं लगी।

उधर टन्नी पूराका पूरा रुपया अपनी गुल्लकके हवालेकर देना चाहता था। रुपया टूट जानेपर उसे गुल्लकमें डालनेमें इतना मजा नहीं आएगा, जितना कि पूराका पूरा डालनेमें आता। इसी कारण टन्नीने छोटेको दाल-सेव अपने पत्तेमेंसे ही खिलाई थी।

टन्नीने छोटेको बहुतेरा समझाना चाहा। किंतु छोटेने एक न सुनी। यदि छोटेके लिए आम-पापड़ खरीदनेमें टन्नीको आधे मिनिटकी भी देरी हो जाती, तो निश्चय ही छोटे रो रोकर आसमान सिरपर उठा लेता। इसलिए उसे पांच पैसेका आम-पापड़ खरीदनेके लिए अपना रुपया तुड़ाना पड़ा।

तभी टन्नीने देखा कि एक आइसक्रीमवालेके पास खड़ा नरेन आइसक्रीम खा रहा था। टन्नी कभी यह सोच भी नहीं सकता था कि नरेन खड़ा कुछ चीज खाता रहे और वह उसका मुंह ताकता रहे। आगे बढ़कर टन्नीने भी दो ऑरेंज-बार लीं। एक छोटेको दी और दूसरी अपने पास रख ली। फिर नरेनसे आंखें मिलाते हुए उसने टन्नसे एक अठन्नी आइसक्रीमवालेकी गाड़ीपर रख दी।

आईसक्रीमवालेने अठन्नी उल्टी-पलटी। फिर बोला, "बाबूजी, यह खोटी है।"

टन्नीने उसके हाथसे अठन्नी लेकर देखी। आम-पापड़वालेसे वास्तवमें वह अठन्नी फिर उसके पास आ गई थी, जो उसने थोड़ी देर पहले आम-पापड़वालेको चकमा देकर चला दी थी।

टन्नीने आस-पास भी देखा। किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। आम-पापड़वाला अपना खोमचा उठाकर जा चुका था।

उसने देखा कि छोटे अपनी आइसक्रीम कुतर चुका है। उसने अपनी जेबें टटोलीं। पैंतालीस पैसोंके अतिरिक्त उनमेंसे एक पैसा भी नहीं निकला। तब तक उसके तीनों साथी भी खिसक चुके थे। नरेनसे आंख उठाकर बात करनेका साहस वह नहीं कर पाया। बरबस उसे अपनी आइसक्रीम आइसक्रीमवालेको लौटा देनी पड़ी।

किंतु आइसक्रीमवाला भला आदमी था। उसे पांच पैसेके पीछे टन्नीके मुंहसे आइसक्रीम छीनना अच्छा न लगा। उसने टन्नीको आइसक्रीम वापसकर उससे पैंतालिस पैसे ही ले लिए। ●

वैज्ञानिक खेल

—अवधेश

बादूकी गोलियां

यह खेल तुम्हारे मित्रोंका मनोरंजन करनेके साथ ही तुम्हारे डाइंग रूमकी शोभा भी बढ़ाएगा। इस खेलके लिए तुम्हें निम्नलिखित सामानकी जरूरत पड़ेगी :

१– कांचका गिलास
२– थोड़ा सोडा (कपड़े साफ करनेका)।
३– सिरका
४– नेफ्थलीनकी गोलियां (जो ऊनी कपड़ों-में रखते हैं)।

विधि : किसी मिट्टी या शीशेके बर्तनमें सोडेको पानीके साथ लुगदी-सी बनाकर कांचके गिलासकी तलीमें लगा दो। इसको थोड़ी देर तक सूखने दो। लगभग एक घंटा सूखने देनेके बाद गिलासको पानीसे भर दो और इसमें दो बड़ी चम्मच सिरका मिला दो। अब इसमें नेफ्थलीनकी ४–५ गोलियां डाल दो। गोलियां पहले गिलास-की तलीमें जाएंगी, फिर उसपर गैसके बुलबुले लग जानेसे ऊपर आ जाएंगी। परंतु ऊपर आते ही बुलबुले हवामें मिल जानेसे ये गोलियां फिर नीचे चली जाएंगी। इसी प्रकार यह क्रम कई घंटे चलता रहता है। यदि गिलासमें लाल, हरा या पीला रंग डाल दो, तो यह प्रयोग और भी अच्छा लगेगा।

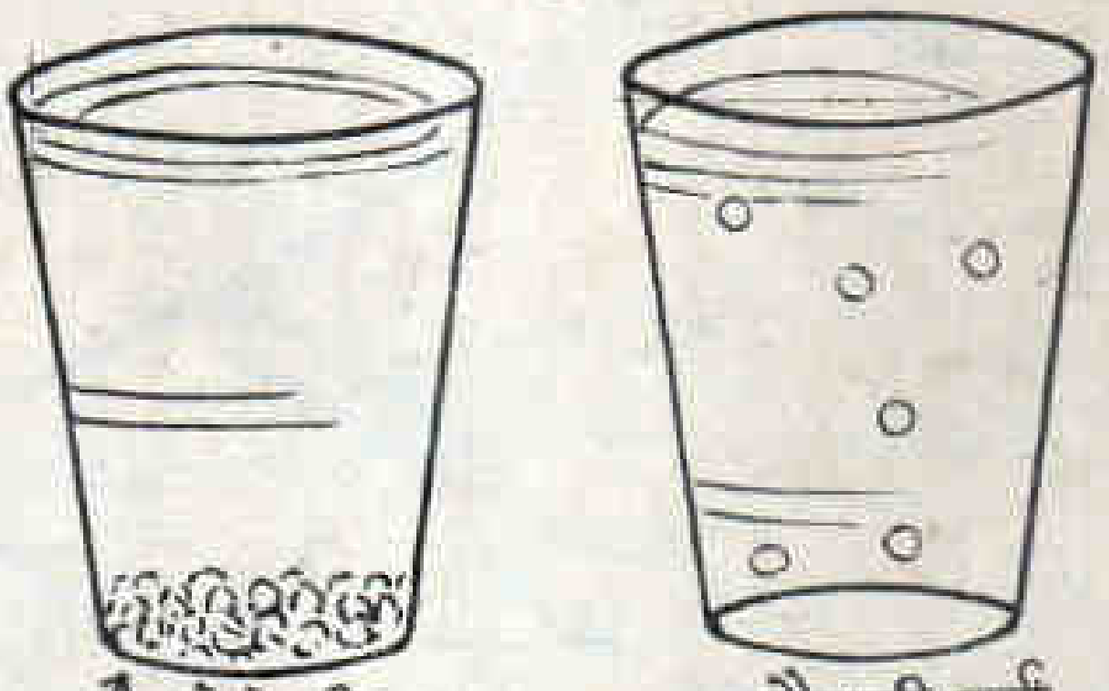

टेबल सी-सॉ

यह खेल घरमें ही खेला जा सकता है। इस खेलके लिए निम्नलिखित सामग्रीकी आवश्य-कता पड़ेगी :

१– एक लंबी मोमबत्ती
२– बड़ी सुई
३– दो उचित आधार (दो गिलासोंको भी काममें लाया जा सकता है)।
४– दियासलाई

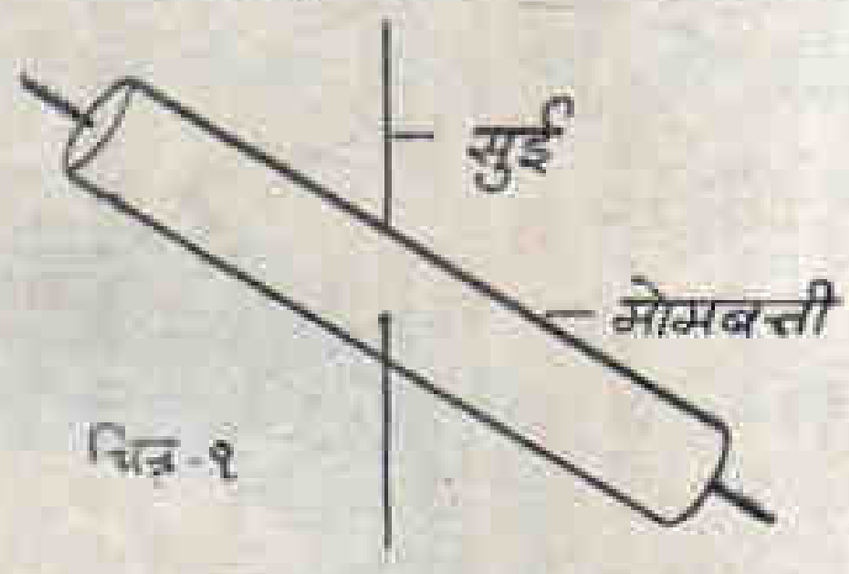

चित्र-१

चित्र-२

अब चित्र–१ के अनुसार मोमबत्तीके दोनों सिरोंसे कुछ मोम अलग हटा दो और मोमबत्तीके बिलकुल बीचमें सुई आरपार डाल दो।

मोमबत्तीके दोनों ओर निकले सुईके सिरों-को समान ऊंचाईके आधारोंपर टिका दो। अब यदि मोमबत्तीका एक सिरा झुका हुआ हो, तो उधरसे थोड़ा-सा मोम खरचकर उसे सुईपर सीधी संतुलित कर लो। अब दियासलाईसे मोम-बत्तीके दोनों सिरोंको जला दो। कुछ सैकिंड बाद मोमबत्तीके एक सिरेसे मोमकी एक बूंद गिर पड़ेगी और वह सिरा कुछ ऊपर उठ जाएगा। परंतु इसी समय दूसरे सिरेसे भी बूंद गिरनेसे वह सिरा भी ऊपर उठ जाएगा। यह क्रम चलता रहेगा। चित्र–२ की तरह यदि मोम-बत्तीकी दोनों ओर दो आकृतियां लगा दी जाएं तो यह खेल और भी अच्छा लगेगा। ●

मैंने घड़ी कानसे लगाई। "टिक. . .टिक. . . टिक. . . मैं मिलूंगी रातके ठीक बारह बजे," बड़ी सुईने छोटी सुईसे कहा।

"मेरे पांव भी छोटे हैं, मेरे कदम भी छोटे हैं, मैं भी छोटी हूं, इसलिए मैं धीरे धीरे. . ." छोटी सुई कहती रह गई, तब तक बड़ी सुई आगे जा चुकी थी। उसे तनिक भी अवकाश न था। अवकाश छोटीको भी नहीं था। छोटी सुई भी चलती ही रहती थी। मगर हाथ-पांवसे छोटी थी, अतएव छोटे छोटे कदम रखती थी। बड़ी सुई फुदक-फुदककर बड़ी तेज रफ्तारसे काफी दूर चली जाती थी।

मैं इस बातसे बड़ा परेशान था। मैंने दोनों सुइयोंको ध्यानसे देखा। दोनों ही समझदार मालूम होती थीं, तब फिर एक धीरे धीरे चलनेको ही क्यों महत्व देती है, एक तेज रफ्तारसे ही क्यों भागी चली जाती है? दोनोंमेंसे कोई तो मूर्ख है ही—मैंने सोचा।

एक घंटा पूरा हो गया, तो बड़ी सुई फिर छोटीके पास आई। मैंने झट घड़ीको कानसे लगा लिया।

"टिक. . टिक. . .टिक. . . तुम्हें कभी फुर-

वक्त

www.kissekahani.com

सत भी मिलती है?"

"नहीं," बड़ी सुईने उत्तर दिया, "मैं तेजीसे काम करती हूं।"

"तेजीसे क्या काम करती हो! तुम बारह कदम चलकर जितना काम करती हो, उतना मैं एक कदम चलकर निपटा लेती हूं।"

"क्या मतलब? बारह कदम चलना कोई मायने ही नहीं रखता?" बड़ी सुईने ललकारा। "अगर मैं बारह कदम न चलूं, तो तुम्हारा एक कदम चलना भी दुश्वार हो जाए।"

"बस बस, बड़ी सुई! रहने दो इन बातोंको। हमें मालूम है तुम कित्ते पानीमें हो!"

"हः हः हः!" बड़ी सुई हंसी। "तुम पागल हो। पानीमें न मैं हूं, न तुम हो। हम दोनों 'वाटर-प्रूफ' में हैं।"

सुनकर मुझे हंसी आ गई। छोटी सुई भी खिसियानी-सी हंसी हंसकर बोली, "फिर भी तुम जब दिन और रात भरमें चौबीस चक्कर लगा लेती हो, तब कहीं एक दिन पूरा कर पाती हो और मैं सिर्फ दो चक्करोंमें ही पूरे दिनकी परिक्रमा कर लेती हूं। अब बताओ, किसका काम महत्वका है?"

की बात

सुनकर बड़ी सुईने आंखें तरेरकर क्रोध भरी मुद्रासे देखा। उसकी आंखोंमें ऐसा भाव था जैसे कह रही हो—'बस बस, छोटी सुई, ज्यादा घमंडी न बनो। छोटे मुंह बड़ी बात अच्छी नहीं लगती!'

"अच्छा जी, तो तुम अपनी लंबाई-चौड़ाईके कारण पदवीमें भी मुझसे बड़ी हो गई?"

"फिर बताऊंगी," कहती हुई बड़ी सुई आगे बढ़ गई। जल्दीमें मालूम होती थी।

मैं समझ गया, बात बढ़ गई है। झगड़ेकी संभावना है।

जब बड़ी सुई घूम-फिरकर फिर छोटीके पास आई, तो मैंने चुपकेसे घड़ी कानके पास ले जाकर उनकी ओर देखा। इस बार मुझे अपनी बातें सुनते देखकर दोनों चौंक गईं। दोनों ही आपसी

वीरकुमार 'अधीर'

वार्त्तालापको भूलकर मुझे घूरने लगीं।

छोटी सुई क्रोधमें भरकर बोली, "क्यों जी, तुम हमारी बातें छिपे छिपे क्यों सुन रहे हो?"

मैंने कहा, "इसमें गुस्सेकी क्या बात है, छोटी सुई? मैंने सोचा, कहीं तुम बहस करते करते लड़ पड़ो, तो बीच-बचाव करा दूं, क्योंकि तुम दोनोंकी लड़ाईमें नुकसान मेरा ही होगा। मैंने तुम्हें नकद दो सौ इकसठ रुपये देकर खरीदा है। अब अगर तुम्हें कुछ हो गया, तो दो सौ इकसठ रुपये तुम जानती हो कितने दिनोंके बाद प्राप्त होते हैं? छोटी सुई, तुम्हें साठ और, बड़ी सुई, तुम्हें सात सौ बीस चक्कर लगाने पड़ते हैं और मुझे अपने दफ्तर आने-जानेके साठ चक्कर लगानेके अतिरिक्त वहीं बैठकर, बड़ी सुई, प्रतिदिन तुम्हारे आठ चक्करोंका इंतजार करना पड़ता है।"

"फिर भी, तुम्हें हम लोगोंकी बातोंमें पड़नेका कोई हक नहीं!" बड़ी सुईने यह बात जरा

गंभीरतापूर्वक बगावती अंदाजमें कही ।

मैं उसकी ललकारपर चौंक पड़ा । मैंने कहा, "बड़ी सुई, इतना रौब मत झाड़ो! मैंने बहुत बड़ी बड़ी सुइयां देखीं हैं। यदि मैं चाहूं, तो अभी तुम्हारा चलना-फिरना बंद कर दूं ।"

"जाओ जाओ," दोनों सुइयोंने एक स्वरमें मेरी उपेक्षा की । फिर कुछ रुककर बड़ी सुईने समझाया : "घमंड और शक्तिके कारण किसीपर अत्याचार करके पछताना ही पड़ता है । समय सदा किसीका एक-सा नहीं रहता। दुनिया बदलते एक मिनिट नहीं लगती है।" इतना कहकर बड़ी सुई मटकती हुई आगे बढ़ गई ।

मैं आश्चर्यसे उसे देखने लगा । मैंने उसे जाते देखकर कहा, "देखनेमें तो इतनी समझदार नहीं मालूम होती हो, बड़ी सुई!"

मगर बड़ी सुईने मेरी बात नहीं सुनी । वह मुंह फेरकर आगे बढ़ गई ।

रातके ठीक बारह बजे मेरी आंख खुल जाती है। डाक्टरोंका कहना है कि यह एक प्रकार-की बीमारीका लक्षण है। मगर अब मैं समझ पाया कि बीमारी आदिके कारण नहीं, इन सुइयोंकी चीं-चपड़ सुनकर मेरी आंख खुल जाती है । ये ही मेरी नींदमें गड़बड़ी करती हैं ।

आज जब मेरी आंख खुली, तो खुसफुसाहट-की आवाजें कानमें पड़ीं । तिरछी नजरोंसे लेटे ही लेटे देखा कि दोनों सुइयां गले मिलकर खुस-फुस प्रेममय स्वरमें बातचीत कर रही हैं ।

"तुम मुझसे नाराज न हुआ करो, बड़ी सुई, मुझे बहुत दुःख होता है ।"

"मैं तुझसे नाराज कहां हो सकती हूं, पगली!" बड़ीने खुसफुसाहटमें प्यार उंडेलकर कहा । "जहां चार बर्तन होते हैं खनकते ही हैं। महात्मा गांधी कह गए हैं, जहां प्यार होता है वहां तक-रार भी होती है ।"

"बड़ी सुई, तुम आजकल बहुत ज्ञानवर्धक बातें करने लगी हो," क्षणभर रुककर छोटी सुईने उसे प्रशंसात्मक दृष्टिसे देखते हुए कहा । "यह आदमी हमारे झगड़ेमें पड़ रहा था । अगर इसे गुस्सा आ गया, तो हमें तोड़ देगा । समझीं? ... तुम उसके मुंह मत लगो ।"

"तू तो पगली ही है, छोटी सुई! वह हमें क्या तोड़ेगा, मैं उसे ऐसा मुंह तोड़ जवाब दूंगी कि याद करेगा । हम परिश्रम करते हैं, गुलामी नहीं करते ।"

मैंने सोचा, लड़ाईकी बातचीत न बढ़ जाए, क्योंकि इन बेजान चीजोंके पास दिमाग तो होता नहीं । अतएव मैंने सिर उठाकर बड़ी सुईको संबोधित करते हुए प्रेमभरे स्वरमें कहा, "चाय पियोगी, बड़ी सुई?"

दोनोंने चौंककर मुझे देखा । बड़ी सुई बोली, "अच्छा, तो तुम जाग रहो हो!"

छोटी सुईने हंसते हुए कहा, "यह कोई चाय पीनेका समय है?"

दो बातोंका उत्तर मैं एक वाक्यमें देनेके लिए सोचमें पड़ गया । मैंने कहा, "हम लेखक हैं, बड़ी सुई। हमारे लिए समयका इतना महत्व नहीं, जितना मूडका होता है । बोलो, चाय पियोगी?"

"जी नहीं, हम लेखिका नहीं हैं," बड़ी सुईने व्यंग्यात्मक स्वरमें हंसते हुए उत्तर दिया ।

मुझे बुरा लगना स्वाभाविक ही था, मैंने कहा, "तुम लेखिका कैसे हो सकती हो? लेखिका होना क्या कोई मामूली बात है?"

"इसमें क्या मुश्किल मालूम होती है, हम तुम्हें एक चलती-फिरती ठोस कविता नहीं मालूम होतीं?"

"ठोस कविता!" मैं चौंका, मैंने कहा, "बड़ी सुई, सुंदर कविता सुनी थी, उदात्त कविता सुनी थी, और भी कई किस्मकी कविताएं सुनीं, लेकिन यह ठोस कविता किस चिड़ियाका नाम है?"

"चिड़िया भी ठोस कविता है, महाशयजी! नहीं जानते, तो सो जाओ । बड़े विद्वान् साहि-त्यकार बने फिरते हो!"

इस बार छोटी सुई बोली थी । मैं छोटोंको ज्यादा मुंह लगानेके हकमें नहीं हूं इसलिए खामोश हो गया । हालांकि इस समय छोटी सुईने मेरे स्वाभिमानपर सुई चुभोई थी और यह कार्य कोई अन्य व्यक्ति करता, तो तुरंत वाक्युद्ध छिड़ जाता ।

छोटी सुई मुझे सोचमें डूबे देखकर बोली, "सो जाओ, साहित्यकार महाशय, यह चाय पीनेका वक्त नहीं है ।"

"तुम वक्त तो बताओगी ही, छोटी सुई । लेकिन, यों बढ़-चढ़कर बातें नहीं करनी चाहिएं तुम्हें!"

दोनों सुइयां खामोश हो गईं। मेरा मूड खराब हो चुका था। मैं इसी मूडको लिये हुए न जाने कब सो गया। सोते सोते मैंने नींदमें ही इतना अवश्य सुना, बड़ी सुई छोटीसे कह रही थी, "अब मैं जाती हूं, छोटी सुई। कल इस आदमीको मजा चखाना है, ताकि यह भी समझ जाए, समयका फेर किसे कहते हैं?"

अगले दिन, कार्यालयमें पहुंचते ही मुझे बॉसने आज्ञा दी कि बॉसके बॉसके बॉसके लड़केका जन्म-दिन है, अतएव 'अलानी-फलानी बेकरी' से 'बर्थ डे केक' लेकर ठीक चार बजे उनके घर पहुंचना है। मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैंने सोचा, इस बहाने बॉसके बॉसके बॉसको खुश करनेका अवसर मिल जाएगा। मैं भी बॉसके बॉसके बॉसके लड़केके लिए कोई अच्छा-सा 'प्रेजेन्ट' सोचने लगा। आगामी वर्षोंमें अपनी तरक्कीके लिए यह आवश्यक था।

वक्त बीतता चला गया। तभी मेरे पास-वाली कुर्सीसे आवाज आई, "अरे भई, घर नहीं चलना है? पांच बज गए।"

"पांच बज गए!" मैंने घबराकर अपनी घड़ीकी ओर देखा, फिर कानों तक ले जाकर चौंक पड़ा। घड़ी बंद पड़ी थी और बड़ी सुई तीन-पर रुकी हुई थी, छोटी सुई गायब थी। फिर ध्यानसे देखा, बड़ी सुई मुझे देख देखकर मुसकरा रही थी और छोटी सुई भी उसके नीचे छिपी हुई हंस रही थी।

मैं किसीसे कुछ कहे-सुने बगैर तेजीसे दफ्तरसे बाहरकी ओर भागा और लगभग साढ़े पांच बजे 'अलानी-फलानी बेकरी' से 'बर्थ डे केक' लेकर बॉसके बॉसके बॉसके घर पहुंचा।

उसके बाद, मुझे और मेरे बॉसके बॉसको मेरे बॉसके बॉसके बॉसने डांटा और देरीसे आनेका कारण पूछा। मेरे बॉसके बॉसने मुझपर और मेरे बॉसपर गुस्सा उतार लिया और मेरे बॉसने मुझ-पर अपना क्रोध झाड़ दिया। इतना सारा बोझ लिये मैं घर लौटा। मैंने आते ही सुइयोंसे सवाल किया, "तुम्हें शर्म नहीं आती, बड़ी सुई, तुम्हारे कारण आज मुझे इतनी प्रताड़ना सहनी पड़ी है!"

बड़ी सुईने हंसकर कहा, "हम तो तुम्हें समय-

का महत्व बता रही थीं।"

मुझे और क्रोध चढ़ आया। भुना हुआ तो बैठा ही था। हाथसे घड़ी निकालकर जोरोंसे जमीनपर दे मारी। घड़ी चकनाचूर होकर पुर्जा-पुर्जा होकर बिखर गई।

छोटी सुईने दम तोड़ते हुए कहा, "चलो अच्छा हुआ, अब इसे समयका महत्व अच्छी तरह पता चल जाएगा, जब एकबार अवसर चूकनेके कारण मेरी जैसी सहचरीको प्राप्त करनेके लिए इसे साठ चक्कर लगाने पड़ेंगे।"

"बड़े मियां, हम घड़ीकी सुईयां हैं। समयके महत्वकी ओर संकेत करना हमारा फर्ज है। हम टूट जाएंगी, झुकेंगी नहीं, समझे?" इतना कहकर स्वाभिमानी बड़ी सुई भी सदा सदाके लिए मौन हो गई।

और अपने क्रोधपर बादमें मुझे काफी दिनों तक पछताना पड़ा। ●

इक्वेडोरके डाक-टिकट

-गुरुचरण वोहरा

बच्चो, तुमने चश्मेवाला भालू देखा है? चश्मेवाला भालू चश्मेवालोंकी दूकानके चक्कर नहीं लगाता अतः उसे वहां नहीं देखा जा सकता। यह चश्मा स्वयं प्रकृतिने उसे दिया है। काले शरीरपर केवल आंखोंकी चारों ओर गोल गोल सफेद धारियां ऐसी लगती हैं, जैसे भालू महोदयने चश्मा लगा रखा हो (देखो सामनेके पृष्ठ पर चित्र सं. १४)। वह चश्मेवाला भालू इक्वेडोर नामक देशमें पाया जाता है।

इक्वेडोर दक्षिणी अमेरिका महाद्वीपके उत्तर पश्चिममें एक छोटा-सा देश है (देखो चित्र सं. ३)। पश्चिममें प्रशान्त महासागर इस नन्हे देशके चरण धोता है। उत्तरमें कोलम्बिया और दक्षिण तथा पूर्वमें पीरू नामक देश है।

इक्वेडोर भूमध्य (विषुवत्) रेखापर स्थित है। भूमध्य रेखाको अंग्रेजीमें 'इक्वेटर' कहते हैं। 'इक्वेटर' पर स्थित होनेके कारण इसका नाम इक्वेडोर पड़ा।

इक्वेडोरमें वर्षा बहुत होती है। देशमें नदियां, पर्वत और घने जंगल अधिक हैं (देखो चित्र सं. १)। जंगलोंमें अनेक प्रकारके पशु, हिंसक जंतु, सुंदर चिड़ियां, तोते, रंग-बिरंगी तितलियां और फल-फूल बहुत होते हैं।

इक्वेडोरका राष्ट्रध्वज पीले, नीले और लाल रंगका है (देखो चित्र सं. २)। इनके डाक-टिकट भी सुंदर और सुरुचिपूर्ण होते हैं। प्रथम डाक-टिकट १८६५ में जारी हुआ था। यहां अब तक लगभग १२०० टिकट जारी हो चुके हैं।

पक्षियोंकी टिकटमाला (देखो चित्र ४ से ७) १९५८ में प्रसारित हुई थी। दस सैण्टेवोके टिकटपर तोता, २० सैं. पर टूकन नामी उष्ण कटिबन्धीय पक्षी, ३० सैं. पर करगस नामी दक्षिण अमेरिका-का बड़ा गीध और ४० सैं. पर भनभनाने वाले पक्षी अंकित किए गए हैं। उड़ते समय इन पक्षियों-के परोंकी फड़फड़ाहटसे भन-भनकी गूंज उत्पन्न होती है। इस मालामें 'इक्वेडोर' सफेद रंगमें लिखा है। उसी वर्ष पक्षियोंके टिकट पुनः छापे गए (देखो चित्र ८ से ११)। इस मालामें देशका नाम काले रंगमें लिखा गया। २० सैं. के टिकटपर लाल मुनिया, ३० सैं. पर गिरि-कपोत, ५० सैं. के टिकटपर कस्तूरक नामी एक गायक पक्षी और ६० सैण्टेवोके टिकटपर तोते अंकित थे।

जंतुओंकी दो टिकट-मालाएं १९६० और १९६१ में जारी की गई थीं (देखो चित्र १२ से १९)। पहली मालामें २० सैं. के टिकटपर 'चींटी-भक्षी', ४० सैं. पर जलतुरग नामक स्तन-पायी पशु, ८० सैं. के टिकटपर 'चश्मेवाला रीछ' और १ सक्रीके टिकटपर एक पहाड़ी बिलाव, जिसे 'गिरि बिडाल' कहते हैं, चित्रित थे। दूसरी मालामें भी चार टिकट थे (देखो चित्र १६ से १९)। १० सैं. के टिकटपर सूअर, २० सैं. पर ग्राहिलम नामक जंतु, ८० सैं. पर चीता और एक सक्रीके टिकटपर उदरनास नामक मांसाहारी जानपर अंकित थे।

सन् १९६१ में ही एक और टिकटमाला जिसपर विभिन्न प्रकारकी तितलियां अंकित थीं जारी की गई (देखो चित्र २०-२३)। टिकट संग्रह करनेके शौकीनोंने इन टिकटोंका बड़े चाव-से स्वागत किया। फलस्वरूप इक्वेडोरको तित-लियोंकी इस टिकटमालाका पुनर्मुद्रण करना पड़ा। दूसरी बार टिकटोंकी पार्श्वभूमिको भिन्न रंगोंमें छापा गया (देखो चित्र संख्या २० और २१)।

१९५४ में १०, २०, ३०, ४० और ५० सैण्टेवोके टिकटोंपर इक्वेडोरने फूल और फल (केला) अंकित किए थे। सब टिकट चित्र सं. २४ के समान थे। केवल रंग प्रत्येकका भिन्न था।

इक्वेडोरके टिकट संग्रहकर्त्ताओंमें बड़े लोकप्रिय हैं किंतु अन्य देशोंके टिकटोंसे किंचित महंगे और दुष्प्राप्य जरूर हैं। ●

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

वैज्ञानिकों की कथा

सर आइज़क न्यूटन

— शीला इन्द्र

बच्चो, शायद तुमने यह कहानी पढ़ी या सुनी होगी कि एक साहबके पास दो बिल्लियां थीं—एक छोटी और दूसरी बड़ी। दोनों ही बड़ी नटखट थीं। कभी कमरेके अंदर आतीं, कभी बाहर जातीं। तब उन साहबने परेशान होकर बढ़ईको बुलाकर दरवाजेमें एक बड़ा और एक छोटा छेद बनानेको कहा। ताकि उन्हें अपना आवश्यक काम छोड़कर बिल्लियोंके लिए बारबार दरवाजा खोलनेकी जहमत न उठानी पड़े। बढ़ई था समझदार, उसने केवल एक बड़ा छेद बना दिया। वह साहब बड़े नाराज हुए कि छोटी बिल्लीके लिए छोटा छेद क्यों नहीं बनाया गया। यह मामूली-सी बात कि दोनों ही बिल्लियां एक ही बड़े छेदमेंसे निकल जाएंगी, उस बढ़ईको प्रदर्शन द्वारा समझानी पड़ी। कितना बेअकल समझ रहे होगे तुम उन साहबको।

किंतु तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि वह साहब और कोई नहीं संसारके महान् वैज्ञानिक सर आइजक न्यूटन थे। इनका जन्म क्रिसमसके दिन २५ दिसंबर सन् १६४२ में लंकाशायरके एक छोटेसे गांव वूल्सथोर्पमें हुआ था।

अभी न्यूटन छोटा बालक ही था कि उसके पिताका देहांत हो गया और उसकी मां दूसरा विवाह करके नार्थविथाम चली गई। नन्हा न्यूटन अपनी प्यारी दादीके पास रह गया।

बचपनमें यद्यपि न्यूटनने पढ़ाई-लिखाईमें कोई विशेष प्रतिभाका परिचय नहीं दिया था, तथापि तरह तरहकी कारीगरीमें वह बहुत चतुर था। उसने अपने हाथोंसे तरह तरहकी न जाने कितनी आरियां, हथौड़े तथा अन्य औजार बना रखे थे, जिनकी सहायतासे वह विभिन्न खिलौने आदि बनाया करता था।

उसके पड़ोसी उसकी बनाई इन चीजोंकी बड़ी प्रशंसा करते और उसकी दादी तो अपने पोतेके गुणगान करते अघाती नहीं थी।

कुछ हितैषियोंने दादीको समझाया कि न्यूटनको किसी घड़ीसाजके यहां काम सीखनेको भेजा जाए। चूंकि एक कुशल कारीगर होनेके साथ साथ न्यूटनकी रुचि गणितमें भी थी, इसलिए सबकी मान्यता थी कि न्यूटन बहुत बढ़िया घड़ीसाज साबित होगा।

और सचमुच न्यूटनने एक ऐसी घड़ीका निर्माण किया जिसके बारेमें पहले कभी किसीने सोचा भी नहीं था। यह घड़ी पहियों और भारोंसे नहीं चलती थी, वरन् एक प्यालेसे बूंद बूंद टपकते पानीकी सहायतासे चलती थी। इसी प्रकार उसने एक धूप-घड़ी भी बनाई, जिसका डायल आज भी सुरक्षित है और आज भी वह उसी प्रकार समय बताती है, जिस प्रकार अपने निर्माणके पहले दिन बताती थी।

पवन-चक्की का निर्माण

एक बार न्यूटनके घरसे थोड़ी दूरपर ही एक पवन-चक्कीका निर्माण हो रहा था और अब न्यूटनका अधिकतर समय वहीं व्यतीत होने लगा। वह मिलके बड़ेसे बड़े और छोटेसे छोटे औजार और कार्योंको बड़े ध्यानसे देखते रहते थे।

एक दिन उनकी दादी और कई पड़ोसियोंने देखा कि न्यूटनने एक छोटी-सी पवन चक्की तैयार कर ली है। यह चक्की केवल एक साधारण खिलौना मात्र नहीं थी, बल्कि वास्तविक चक्की थी, जिसमें पवन-चक्कीके पूरे पूरे कल-पुर्जे लगे थे। जब इस छोटी पवन-चक्कीको बाहर हवामें लाकर रखा जाता, तो इसके पंख तेजीसे घूमने लगते थे। इन पंखोंको घूमनेके लिए मुंहसे फूंक मारना ही काफी था। और सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि यदि इसमें एक मुट्ठी अनाज डाला जाता, तो थोड़ी देरमें आटा पिस जाता था।

न्यूटनके मित्र बड़े प्रसन्न हुए। एक दिन एक मित्रने कहा : "न्यूटन इसमें एक चीजकी कमी रह गई है।"

"वह क्या?"

"चक्की चलाने वाला कहां है?"

"अरे हां, उसकी तो याद ही नहीं रही!" न्यूटन ने कहा। "अच्छा मैं खोज निकालूंगा।"

अब न्यूटनकी सूझ तो देखो कि एक दिन एक चूहे

महाशय चूहेदानीमें फंस गए और न्यूटनने उन्हीं चूहे महाशयको पवन चक्कीमें तैनात कर दिया। मिस्टर मूषक बड़ी तत्परतासे अपनी नई नौकरीमें जुट गए। लेकिन एक ही बाधा थी कि जब चक्कीमें एक मुट्ठी अनाज डाला जाता, तो आधी मुट्ठी आटा ही वापस मिलता। बाकी मूषक महाशयके टमें जाता। फिर भी न्यूटनने उसे नौकरीसे बर्खास्त नहीं किया, क्योंकि उन्हें कोई दूसरा ईमानदार काम करने वाला मिला ही नहीं।

जैसे जैसे न्यूटन बड़े होते गए उन्हें लगने लगा कि उनके मस्तिष्कमें पवन-चक्की जैसे छोटे-मोटे खिलौने बनानेकी अपेक्षा कहीं बड़ी बड़ी योजनाएं हैं। और वह अपने समयको बड़ी समस्याओंके मनन और गणित तथा प्रकृति-दर्शनमें ही व्यतीत करने लगे।

बहुधा वह सारी सारी रात आकाशमें बिखरे इन अनगिनत तारोंको देखनेमें ही काट देते। और सोचते रहते कि वह कौन-सी शक्ति है जिससे यह तारे या यह समस्त ब्रह्मांड अपनी परिधि और सीमामें विचरण करते रहते हैं।

संभवत: आइजक न्यूटनको इस बातका पूर्व आभास हो गया था कि वह अपने जीवन-कालमें इन सब प्रश्नोंका यथेष्ट उत्तर पा लेंगे।

जब न्यूटन चौदह वर्षके थे, तो उनके दूसरे पिताका भी देहांत हो गया। अब उनकी मांने इच्छा व्यक्त की कि वह अपनी पढ़ाई छोड़कर फार्मकी व्यवस्था करें। एक-दो वर्षों तक उन्होंने अपनेको फार्मके काममें जुटानेका प्रयत्न भी किया, किंतु जब उनकी मांने उनकी रुचि अध्ययनकी ओर बहुत अधिक देखी, तो उन्हें फार्मसे हटाकर स्कूलमें भेज दिया और बादमें कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटीमें भी पढ़ने भेजा।

सेब से नया ज्ञान

तुम लोग संभवत: सेबकी उस शैतानीके बारेमें अवश्य जानते होगे जिसने पेड़से न्यूटनके सिरपर गिरकर आइजक न्यूटनको गुरुत्वाकर्षणकी शक्तिके बारेमें खोज करनेको बाध्य किया था। गुरुत्वाकर्षण जिससे समस्त-ब्रह्मांड-पृथ्वी-चांद-तारे अपनी अपनी परिधिमें घूमते रहते हैं। अब जब एक बार उन्होंने आकर्षण शक्तिकी खोज कर ली, तो फिर उन्होंने अपने मस्तिष्कको कभी चैन नहीं लेने दिया, जब तक कि उन्होंने सारे ग्रहों व उपग्रहों और नक्षत्र-मण्डलके बारेमें खोज न कर ली कि वे किस प्रकार इस महाशून्यमें परिचालित हैं।

और यह सब काम सरल नहीं था। न दो-चार दिनका ही काम था। इसके लिए उन्होंने न जाने कितनी रातें जागकर नक्षत्रोंका अध्ययन करनेमें काट दीं। इस अध्ययनके लिए वह आकाशमें नक्षत्रोंको एक बहुत शक्तिशाली दूरवीक्षण-यंत्रकी सहायतासे देखा करते थे। इस प्रकार उन्होंने अपने जीवनका एक बहुत बड़ा भाग उन वस्तुओंके साथ बिताया जो उनसे करोड़ों-मील दूर थीं।

और अब हम तुम्हें उनकी विशाल हृदयताकी भी कहानी सुनाते हैं, जिसकी मिसाल अन्य कहीं ढूंढ़ेसे भी नहीं मिलती :

जब न्यूटन पचास वर्षके थे तो एक दिन थोड़ी देरके लिए अपनी प्रयोगशालासे बाहर गए हुए थे। मेजपर बीस वर्षोंकी कड़ी मेहनतका परिणाम बहुतसे लिखित कागजोंके रूपमें फैला पड़ा था। न्यूटनका प्यारा कुत्ता डायमंड, जो मालिकके जाते समय सोया पड़ा था, उठकर मेजपर चढ़ गया। मेजपर रखे दीपककी मोमबत्ती गिर पड़ी और उसने बड़ी क्रूरतासे न्यूटनके बीस वर्षके परिश्रमको कुछ क्षणोंमें राख कर दिया।

जब न्यूटन लौटे और उन्होंने जो कुछ देखा, तो उनकी क्या दशा हुई होगी! दूसरा कोई होता तो उसी समय कुत्तेको गोली मार देता, परंतु न्यूटनने डायमंडके सिरको थपथपाकर दुखी स्वरमें इतना ही कहा, "डायमंड...ओह डायमंड...तुम नहीं जानते कि इस समय तुमने क्या कर डाला!"

न्यूटनने काफी आयु पाई और यथेष्ट मान-सम्मान

दूरवीक्षण यंत्र

और प्रसिद्धि भी। वह पार्लियामेंटके सदस्य भी रहे और सम्राटसे उन्होंने 'नाईट' की पदवी भी पाई। किंतु उन्होंने कभी भी सांसारिक सुखोंको महत्व नहीं दिया, न कभी अपने अध्ययन और विद्वताका ही गर्व किया। इस अहंकार रहित विद्वत्ताका पता हमें उनके इस कथनसे मिलता है :

"ज्ञानका समुद्र अथाह है, जिसमें न जाने कितने अनमोल रत्न भरे पड़े हैं... पर मैं तो अभी इस समुद्रके किनारे रेतमें छोटे बच्चों की भांति सीप और घोंघे बीनता फिर रहा हूं। यह सागर तो अभी मेरे सम्मुख अगम्य व दुर्लभ ही है।"

२० मार्च सन् १७२७ में जब न्यूटन ८५ वर्षके थे, उनका स्वर्गवास हो गया। आकाशके तारोंकी खोज करता करता धरतीका एक प्रकाशमान तारा चला गया। लगता है वह अब भी तारोंके बीचमें बैठा उनके अध्ययनमें लीन होगा। और अब भी शायद हर रातको आकाशमें घूमते तारे अपनी अनगढ़ लिपिमें अपने उस अनन्य मित्रका नाम लिख देते हैं। ●

www.kissekahani.com

दो बालक अपने अपने शहरकी तारीफके पुल बांध रहे थे। पहला बोला, "हमारे शहरमें यातायात-की ऐसी सुंदर व्यवस्था है कि एक छोरपर बसमें बैठो, तो दूसरे छोर तक पहुंचने-में दो घंटे लगते हैं।"

दूसरेने कहा, "और हमारे यहां ऐसी मोटरें हैं कि एक छोरपर बैठो, तो दो घंटे बाद तुम अपनेको उसी छोरपर पाओगे!"

•

बसके कंडक्टरने बच्चेसे पैसे मांगे। बच्चेने आतुरतासे अपनी जेबें टटोलीं। बच्चेको रुआंसा देखकर उसने पूछा, "बेटा, क्या बात है?"

"मेरी जेबमें अठन्नी थी और वह खो गई है।"

"कोई बात नहीं। मैं तुम्हें दस पैसेका टिकट अपने पाससे दिए देता हूं। अब तो खुश?"

"वह तो ठीक," बच्चेने संतोषकी सांस लेते हुए कहा, "लेकिन मेरे बाकी ४० पैसे?"

•

"मेरे पिताजीकी याददाश्त बड़ी खराब है!"

"क्यों? तुम्हारी सारी बदमाशियां भूल जाते हैं क्या?"

"नहीं, एक एक याद रखते हैं!"

•

अब यह सिद्ध कर दिया गया है कि मूर्खता भी और-गुणोंकी तरह पैतृक होती है," एक वक्ताने भाषणके दौरान कहा।

"अपने पिताको ऐसा कहते हुए आपको शर्म आनी चाहिए!" एक श्रोता बोल उठा।

•

संगीत शिक्षक— "क्या तुम्हारे पिताजीने बहरेपनकी दवा करा ली?"

छात्र —"नहीं, हमारी संगीत-शिक्षा पूरी हो जानेपर ही करेंगे!"

चुनावके दिनोंमें एक नेता एक गांवमें जा पहुंचे। वहां एक ग्वालेकी लड़कीको गाय दुहते देखकर पूछ बैठे—"तुम लोगोंको कोई तकलीफ तो नहीं?"

आवाज सुनकर लड़कीकी बूढ़ी मांने अंदरसे पूछा—"किससे बात कर रही है? चल अंदर घरमें!"

"कोई नहीं, अम्मा, एक नेता हैं।"

"तब गाय और बाल्टी भी बाहर मत छोड़?" बुढ़िया घबराकर बोली।

•

डायरेक्टर—"तुम अपना पता छोड़ जाओ, मैं तुम्हें अपने चित्रमें बुढ़ियाका पार्ट करनेके लिए बुला लूंगा।"

"बुढ़ियाका पार्ट," लड़कीने आश्चर्यसे कहा, "मैं तो अभी बहुत छोटी हूं, स्कूलमें पढ़ती हूं।"

"पर जब तक मैं तुम्हें बुलाऊंगा, तुम बुढ़िया हो ही जाओगी!" डायरेक्टरने हंसकर जवाब दिया।

•

एक यात्री, "भई, मुझे सर्किट हाउस उतरना है।"

दूसरा यात्री, "ठीक है, जहां मैं उतरूं, उससे पहले वाले स्टॉपपर तुम उतर जाना!"

•

"शक्तिके अपव्ययका कोई उदाहरण दो, योगेश।"

"गंजेको बाल खड़े कर देने वाली रोमांचक घटना सुनाना!"

•

ग्राहक महिला (दूकानदारसे): "देखो, भई, अगर तुम्हारी मूंगकी दाल अच्छी न हुई, तो पकी-पकाई वापस कर जाऊंगी।"

दूकानदार : "फिर तो आप सेर-दो सेर आटा भी ले जाइए और अच्छा न होनेपर पकी-पकाई चपातियां दे जाइएगा!"

अर्चना

दो स्कूली दोस्त रौब जमानेके मामलेमें एक दूसरेको मात देनेका हमेशा मौका ढूंढ़ते रहते थे। उनमेंसे एक हाल हीमें मामाके पास दिल्ली जाकर लौटा था। लौटनेपर उसने अपने दोस्त-को बताया, "वहां मेरे मामा मुझे प्रधान मंत्री-से मिलाने ले गए थे। प्रधान मंत्रीने मेरी खूब खातिर की। फिर संसद भवन ले जाकर वहां अपने साथ ही मुझे बैठाया।"

"मुझे इसका पता है," दूसरेने नहलेपर दहला लगाते हुए कहा, "अपने पिछले पत्रमें प्रधान मंत्रीने मुझसे इसका जिक्र किया था!"

•

अर्थ-शास्त्री किसे कहते हैं?" अध्यापकने पूछा।

"वह आदमी जो धनके बारेमें उन व्यक्तियों-से ज्यादा जानता है, जिनके पास धन होता है!"

•

एक फिल्म-निर्माताने सात चित्र बनाए, सभी बुरी तरह फेल हुए और वह कंगाल हो गया। बादमें उसने एक पुस्तक लिखी—'सफल कैसे बना जा सकता है' और यह पुस्तक इतनी बिकी कि वह मालामाल हो गया।

•

बहसके दरम्यान एक साहब दूसरे साहबसे—

"कहावत मशहूर है कि गधेके सिरपर सींग नहीं होते।",

"जी हां, आपको देखकर तो यह सच ही लगता है!"

•

एक घोंघा एक आमके पेड़पर चढ़ रहा था। तभी एक गुबरैलेने उसे देखा और कहा, "अरे घोंघे भाई, उस पेड़पर क्यों चढ़ रहे हो? अभी तो उसमें फल आए ही नहीं हैं।"

"जानता हूं," घोंघेने चढ़ते चढ़ते उत्तर दिया, "लेकिन जब तक मैं ऊपर पहुंचूंगा, तब तक फल अवश्य आ जाएंगे!"

•

रमेश : "मेरा अनभव है कि जब मैं बसपर बैठता हूं, तो मेरे विचारोंकी गति दूनी हो जाती है।"

सुरेश : "फिर तो तुम्हें हमेशा हवाई जहाज-से सफर करना चाहिए!"

•

एक विद्यार्थी (परीक्षा हालमें) : "अरे यार, बताना जरा कालिदासकी शकुंतला किसने लिखी थी?"

दूसरा : "यह तो मुझे मालम नहीं, पर तू तो बता कि प्रसादकी कामायनीका लेखक कौन है?"

•

"तुम मजाक कर रहे हो! ये घड़ियां तुम दस रुपयेमें कैसे बेचते हो?"

"साहब, मैं ठीक कह रहा हूं," दूकानदारने कहा।

"फिर तुम्हें फायदा क्या होता है?"

"फायदा! बहुत फायदा होता है। क्योंकि इन घड़ियोंको बार बार मरम्मतके लिए लोगोंको मेरे पास ही लाना पड़ता है!"

•

"मैं अपने बड़े भाईके कुछ भी कहनेका विरोध नहीं करता। पांच मिनिट तक उनकी बातें सुनता हूं और तब तक वह अपनी सभी बातोंका खंडन करने लग जाते हैं!"

•

"तांगेवाले, हाईस्कूल चलोगे?"

"चलेंगे, साहब।"

"कितने पैसे लोगे?"

"आठ आने।"

"एक रुपया दूंगा। मगर चलते चलते तुम्हें आज प्रतियोगितामें मैं जो भाषण करने वाला हूं वह सुनना पड़ेगा!"

•

छुट्टियां और दिलचस्पियां (पृष्ठ ३५ से आगे)

होकर रह जाते हैं। सामान्य जनोंसे हटकर उनमें कोई विशेषता नहीं मिलती

लेकिन मुख्य बात यह है कि कुछ 'विशिष्ट' बनना तुम चाहते भी हो या नहीं? अगर नहीं चाहते, तो जो घिस-पिटकर 'विशिष्ट' बन चुके हैं उनसे कभी ईर्ष्या न करने, उनके साथ होड़ न लगानेका संकल्प तुम्हें करना होगा और साथ ही 'कोई शिकायत नहीं' का साइन बोर्ड अपने माथेपर लगाना होगा। मुश्किल यह है कि यह बोर्ड आजकल किसीके माथे पर मुश्किलसे ही दिखाई देता है!

झींकनेकी कला

कुछ बच्चोंकी समझमें शायद यह शब्द न आए—'झींकना'! इसका मतलब है दूसरोंके सामने अपनी बदकिस्मतीका बार बार, अत्यंत दुखित भावसे बयान करना। अक्सर इस तरहके लोग 'बोर' करनेके माहिर होते हैं। ये लोग अपना समय 'काटने' के फेरमें तो रहते ही हैं, साथ ही साथ दूसरोंके समयको दोनों हाथोंसे आरा चलाकर 'काटते' हैं। घंटों तुम्हारे पास बैठे रहेंगे—लेकिन जब बिदा होंगे, तो तुम्हें महसूस होगा कि इतना वक्त इस गधेके बच्चेने बरबाद कर दिया।

और तुम्हें ताज्जुब होगा कि झींकना कुछ लोगोंकी हौबी होती है! यही नहीं, वे इस कलासे कुछ उपार्जन भी कर लेते हैं। कुछ लोग उनपर दया खाकर उन्हें या तो कुछ देते हैं या उनका कोई लाभप्रद काम कर देते हैं।

तुम अपनी छुट्टियोंमें अगर इस तरहके किसी साथीसे बच गए, तो समझना कि तुम्हारे पास एक लंबा समय है, जिसे तुम्हें 'काटना' नहीं है। अगर तुमने उसे काटा, तो वह तुम्हें मारेगा—बेमौके मारेगा! इसलिए आज ही बैठ जाओ, अपनी दिलचस्पियोंका सिलसिलेवार जायजा लो, उनमेंसे कुछ पर निशान लगाओ और संकल्प करो कि अगले वर्ष—यानी छुट्टियोंके अंतमें तुम एक ज्यादा अकलमंद विद्यार्थीके रूपमें नई कक्षामें प्रवेश करोगे।

मैं उन माता-पिताओंके पक्षमें नहीं हूं, जो छुट्टियोंको बच्चोंके कोसोंकी कच्चाई निकालनेका स्वर्ण अवसर समझते हैं। जो बच्चे साल भरकी मेहनतमें अपनी कच्चाई नहीं निकाल पाए उनका एक साल फेल हो जाना बेहतर है— आर्थिक दृष्टिसे उनके माता-पिताओंके लिए भी हितकर है। थर्ड डिवीजनमें पास हुए बच्चोंके लिए यथार्थ जीवनमें कोई सम्मान पूर्ण स्थान मिल पाना दुष्कर है। हां, जिन लोगोंको सिफारिशोंमें अटूट विश्वास होता है और दुर्भाग्यसे वे जब-तब सफल भी हो जाते हैं, उनकी बात जाने दो। यदि जिंदगी ही तीसरी श्रेणीमें, तीसरी श्रेणीकी भावनाओंके साथ, जीनेका किसीका इरादा हो, तो उसे जीनेकी कलाकी आवश्यकता ही नहीं है।

हौबी और पैसा

हमारे देशमें विद्यार्थी-कालमें धन अर्जित करनेका रिवाज अभी नहीं बढ़ा। जरूरतमंद विद्यार्थी अधिकसे अधिक छोटी कक्षाओंके बच्चोंको ट्यूशन पढ़ाने तक बढ़ पाते हैं। लेकिन पीछे जो हौबीज हम गिना आए हैं वे और उनके अलावा भी अनेक ऐसी हैं, जिनमें यदि विद्यार्थी थोड़ी अच्छी समझ या कुशलता प्राप्त कर ले, तो वह ऐसे अनेक जरूरतमंद ग्राहक पा सकता है, जो अपनी कीमती चीज बिना भरोसेके लोगोंको देना पसंद नहीं करते। खुद हमारी बिल्डिंगमें एक रेडियो मैकेनिक लड़का एक बार आया था और वह दो-चार दिनोंमें ही पूरी बिल्डिंगके रेडियो सेट ठीक कर गया। किसीसे पांच, किसीसे दस रुपए मिले और आज तक बिल्डिंगके लोग उसकी सेवाओंको तरसते हैं।

अनेक परिवार ऐसे होंगे, जो अपने घरके ही वातावरणमें अपने पूरे परिजनोंके फोटो खिंचवानेके लिए तैयार हो जाएंगे। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसे उद्यमी विद्यार्थियोंको जरूर टटोलना चाहिए।

अब तक शायद तुम समझ गए होगे कि आने वाली छुट्टियां तुम्हारे लिए क्या क्या संभावनाएं लेकर आ रही हैं। छुट्टियोंके अंतमें हमें लिखना तुमने क्या क्या किया। ●

शरारत (पृष्ठ ११ से आगे)

सैयद : उड़ गया?

हमीद : कैसे उड़ गया?

अजरा : बहनजीकी सहेलीने पिंजरेका दरवाजा खोल दिया।

हमीद : धीरज धरो, अजरा बहन।

अमजद : एक साथ दो मुसीबतें आई हैं।

हमीद : तुमपर क्या मुसीबत आ पड़ी?

अमजद : जब मैं घर गया, तो अलमारीमें मेरे चाकलेटोंका डिब्बा नहीं था।

हमीद : तो ये चाकलेट?

अमजद : क्या करता, अजरा बहनको अलमारीमेंसे ले आया था।

अजरा : मेरी अलमारीमेंसे?

अमजद : और क्या करता?

(अमजद, हमीद और सैयद हंस पड़ते हैं।)

अजरा : मेरे चाकलेट! मैं अभी जाकर मम्मीसे कहती हूं!

हमीद : और मैं भी मम्मीसे कहूंगा तोतेवाली बात।

अजरा : खुदा करे तू फेल हो जाए! यह तेरी ही शरारत है!

हमीद (ऊंची आवाज में) : बोलो शरारत का जवाब :...

सैयद और अमजद (एक साथ ऊंची आवाज में) : शरारत है...!

(परदा गिरता है।)

(उर्दूसे अनुवाद : सुरजीत)

अनोखा खेल

—अरुणकुमार

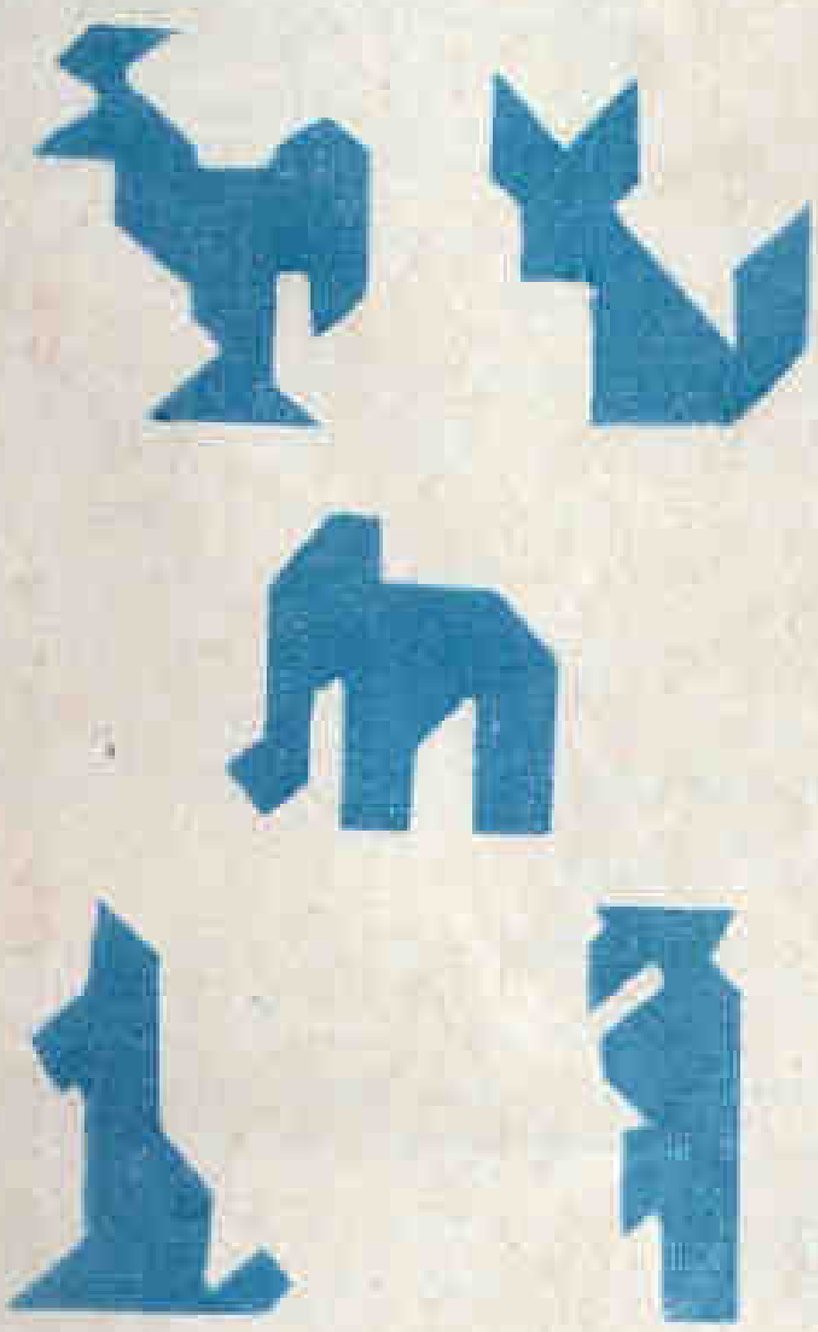

लो, बच्चो, छुट्टियोंमें तुम्हारा और तुम्हारे नन्हे-मुन्ने बहन-भाइयोंका मनोरंजन करनेके लिए हम इस बार एक ऐसा मजेदार खेल दे रहे हैं, जिसे जापानी बच्चे बड़े चावसे खेलते हैं।

यहां शीर्षकके साथ जो तसवीरें दी हुई हैं, इन्हें थोड़ी थोड़ी आंखें मींचकर ध्यानसे देखो।

देखा? इनमें पहला चित्र मुर्गेका है, दूसरा कुत्ता-सा लगता है। तीसरा हाथी, चौथा बिल्ली और पांचवां—क्या? — तोता!

एक काम करो। सामनेके पृष्ठपर दिए हुए टुकड़े काट लो। इन्हें किसी भी गत्तेपर चिपकाओ और किताबोंके बीच दबाकर सूखनेके लिए छोड़ दो। टुकड़े सामने दिए हुए साइजके ही कटने चाहिएं। चाहो तो चिपकानेकी भी जरूरत नहीं। अगर सामनेके पूरे पृष्ठको एक सेंटीमीटरका हाशिया छोड़कर काट लो और इन्हें गत्तेके

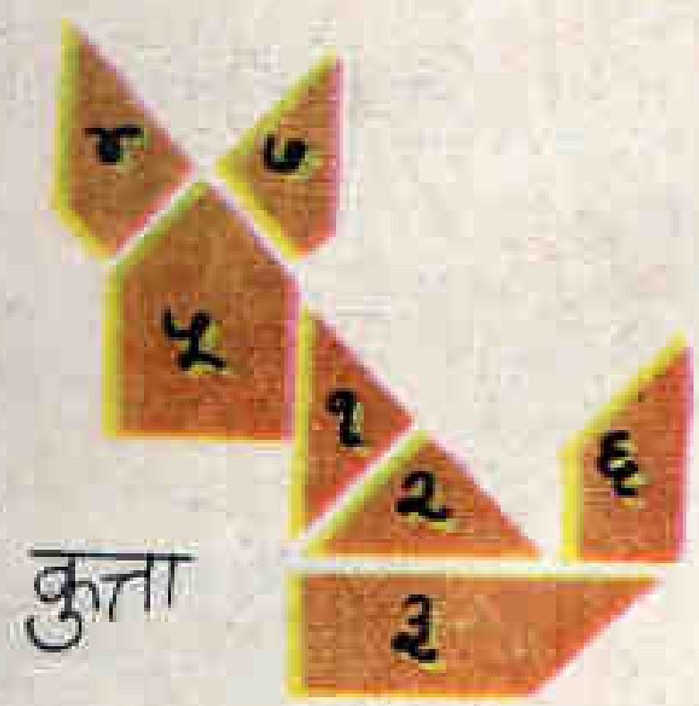

शेर का पंजा (पृष्ठ १९ से आगे)

है अब उसकी चालाकी काम कर सकती है।

अंधेरेमें थोड़ा थोड़ा डर लग रहा था, लेकिन जितना ज्यादा डर अगली बातका था, उससे यह डर मालूम नहीं पड़ रहा था। इतनेमें दरवाजे पर ताला खुलनेकी आवाज आई। गिरीश आहिस्ता आहिस्ता जाकर दरवाजेके पीछे छिप गया। केहर टटोलता-टटोलता अंदर घुसा। गिरीश चुपकेसे बाहर खिसक लिया।

गिरीश अब आजाद था, उसने बाहर एक टैक्सी खड़ी देखी। समझ गया जरूर केहर उसे ले जानेके लिए लाया है यह टैक्सी।

उसे किधर जाना है, यह बात वह नहीं जानता था। सड़क इतनी उजियाली थी जिसपर दिन होनेका धोखा हो जाए। लेकिन उसे यह उजाला अच्छा नहीं लग रहा था। वह कहीं छिपकर बैठना चाहता था। वह जानता था केहर जब उसे वहां नहीं पाएगा तो भूखे शेरकी तरह अपने कमरेसे बाहर निकलेगा। माना वह शेरके पंजेसे निकल आया है लेकिन शेर कभी भी छलांग लगाता हुआ आकर उसे दबोच सकता है।

बेचैनी उसकी अभी दूर नहीं हुई थी। चलते चलते आकर अब जहां वह खड़ा हुआ था वहांसे चार तरफ रास्ते गए थे। किस ओर जाए और कहां जाए, वह खड़ा यही सोच रहा था। पता पोस्टकार्ड पर लिखा था, वह भी उससे छिन चुका था। क्या करे?

गिरीश खड़ा खड़ा यही सब सोच रहा था कि एकाएक उसे अपने कंधेपर किसीका हाथ महसूस हुआ। उसने घूम कर देखा, सामने केहर खड़ा था।

बात यह हुई कि जब केहरने कमरेमें माचिस की तीली जलाकर अच्छी तरह देख लिया कि छोकरा गायब है, तो वह लपककर बाहर आया। टैक्सी ड्राइवरने उसे बताया कि अभी अभी एक लड़का इधरसे गया है। वह टैक्सीपर सवार हो यहां आ पहुंचा।

गिरीश पर जैसे बिजली गिर पड़ी। शेरके पंजेने आखिर आ ही दबोचा। सड़क सुनसान थी। रात काफी बीत चुकी थी शायद। सुनसान सड़क पर गिरीश खड़ा था। और उसके कंधे पर हाथ रखे केहर खड़ा था। केहरने कहा, "वाह बेटे, कहीं इस तरहसे भागा जाता है। नहीं रहना चाहते थे, तो कह देते। मुझे फिक्र हो गई कि कहीं परेशानीमें न फंस जाओ।"

केहरकी मीठी बातोंमें गिरीश आने वाला नहीं था। लेकिन सुनसान सड़कपर, वह जानता था, केहर कहीं ज्यादा ताकतवर है और वह बेहद कमजोर। इसलिए उसने ऐसा भाव दिखाया जैसे उसे केहरपर अविश्वास न हो। बोला, "नहीं, चाचा, दरअसल मैं बंद कमरेमें सोया सोया उकता गया था। सोचा, थोड़ा-सा घूम आऊं। वैसे मुझे आपके यहां बहुत आराम है।"

"अब तो घूम चुके, चलो वापस चलें।"

"हां, चाचा, चलो चलें।" वह केहरके साथ चल पड़ा। फिर चलते चलते रुककर बोला, "चाचा, पेटमें दर्द हो रहा है, यहां सोडावाटर मिलेगा कहीं?"

केहर उसे एक होटलमें लिवा ले गया। होटल भी करीब करीब सुनसान था। केवल दो-तीन लोग बैठे थे। वे सूरतसे ऐसे डरावने लग रहे थे कि गिरीश सिहर उठा। बाप रे, इनसे तो देखने में केहर ही अच्छा है, कमसे कम डर तो नहीं लगता। वह जानबूझकर दरवाजेके पास बैठा। बोला, "चाचा, यहां तो मुझे बहुत डर लग रहा है।"

केहर समझ गया, दूसरे लोगोंके काले काले कपड़े और चेहरे देखकर गिरीश डर रहा था। उसने हिम्मत बंधाई, "तभी तो तुम्हें घरसे चला गया देख मैं फिक्रमें पड़ गया था। रातमें भले आदमी नहीं घूमते। तुम डरो मत, मैं जो तुम्हारे साथ हूं।"

गिरीश सोडावाटर पी रहा था और सोच रहा था, क्या करे, कैसे केहरके पंजेसे निकले। दिन होता, तो शोर मचा कर भीड़ इकट्ठी कर लेता। इस रातमें किसीका भी भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसा न हो कि कहीं आसमानसे टपककर खजूरमें अटक जाए। नहीं, शोर मचानेसे कोई फायदा नहीं। कोई और ही तरकीब लड़ानी होगी।

केहर उसपर नजर टिकाए बैठा था। गिरीश मन ही मन तरकीब सोच रहा था। न चाहते हुए भी सोडावाटरकी बोतल खाली हो चुकी थी। बैरा आया। केहर उसे पैसे देनेमें लगा। गिरीशने झटपट तय किया, एक कोशिश और, जो हो सो हो। और वह एक झपाटेमें बाहर निकल आया। उसके बाद उसने जो दौड़ लगाई वह हिरन भी मुश्किलसे ही लगाता होगा। केहर काफी पीछे छूट गया। वह रुका नहीं, एक बार पीछे घूमकर देखता और दुगुनी तेजीसे भागने लगता।

केहरके साथ एक कठिनाई थी। अगर वह भागता, तो लोगोंका ध्यान उसकी तरफ खिंचता। इससे लोगोंको शक हो जाता। केहर नहीं चाहता था कि लोगोंके सामने गिरीश पकड़ा जाए और वह सारी पोल खोल दे। इसलिए दौड़में उसे पीछे रह जाना पड़ा।

तभी गिरीशने भागते भागते पीछे मुड़कर दूरसे देखा, केहर एक टैक्सीमें बैठ रहा था। गिरीशके छक्के छूट गए। अब कोई उपाय नहीं। इस बार फंदेमें फंसा, तो छुटकारा मिलना मुश्किल हो जाएगा। कोई चालबाजी और कोई तरकीब काम नहीं करेगी। सड़क सीधी चली गई थी। कोई गली भी नहीं थी जिसमें घुस जाता। उसकी नजर एक पेड़ पर पड़ी। वह उसपर फुर्तीसे चढ़ गया। यह तो उसका पुराना खेल था।

और सचमुच जब केहरकी टैक्सी बहुत दूर चली गई, तब गिरीशकी जानमें जान आई। (क्रमशः)

खेल और रेल

ग्रांड ट्रंक, तूफान मेल-सी,
घरर-घरर घहराती,
चली जा रही रेल हमारी,
सरपट दौड़ लगाती!
खेल खेल में हम बच्चों का,
हो जाता है मेल;
और मेल से चलने लगती,
छक-छक करती रेल!

—भीष्मसिंह चौहान

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे सुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

पढ़ूं भला क्या?

टन्-टन् टन्-टन् घंटी बोली,
चूहों का स्कूल!
बूढ़ा चूहा है कुर्सी पर,
लिये हाथ में रूल!

टीकू पुस्तक रखकर बोला,
"छुट्टी दें, गुरुदेव!
पढ़ूं भला क्या, मुंहमें पानी,
पाकिट में है सेव!"

—विष्णुकान्त पाण्डेय

बेसूँड़ हाथी

जो जेब न होती कुरते में,
तो पैसे भला कहां धरते?
जो घास न होती धरती पर,
तो गदहे-घोड़े क्या चरते?

जो हवा न होती यहीं कहीं,
तो गुब्बारे में क्या भरते?
जो सूंड़ न होती हाथी के,
तो हाथी का हम क्या करते?

बेसूंड़ न हाथी खा पाता,
बेसूंड़ न हाथी पी पाता,
कहने को हाथी कहलाता,
पर बिना हाथ का हो जाता!

वह मुंह ललचाता रह जाता,
दो दांत दिखाता रह जाता,
फायदा फकत इतना होता—
उसको कि जुकाम न हो पाता!

—रघुवीर सहाय

अनोखा घोड़ा!

अजब, अनोखा मेरा घोड़ा,
अंदर-बाहर सरपट दौड़ा;
इसे पछाड़ा, उसको छोड़ा,
पहुंचेगा सीधे अल्मोड़ा!

खाता घास न दाना-पानी,
नहीं मुझे होती हैरानी,
इसके ऊपर लगे न काठी,
यह है नानाजी की लाठी!

—सुधाकर दीक्षित

मज़े का काम! मुफ़्त इनाम! लड़के लड़कियों के लिए

कोलिनॉस रंग भरने की प्रतियोगिता

पू-१३ वर्ष के बच्चों के लिए

१६,००० रुपये के

नकद इनाम

इनाम

५-७ वर्ष

पहला इनाम—२,००० रुपये
दूसरा इनाम—१,००० रुपये
और २५ समाश्वासक इनाम—
प्रत्येक इनाम १०० रुपये

८-१० वर्ष

पहला इनाम—२,००० रुपये
दूसरा इनाम—१,००० रुपये
और २५ समाश्वासक इनाम—
प्रत्येक इनाम १०० रुपये

११-१३ वर्ष

पहला इनाम—२,००० रुपये
दूसरा इनाम—१,००० रुपये
और २० समाश्वासक इनाम—
प्रत्येक इनाम १०० रुपये

प्रवेश के लिए: अपने विक्रेता से छपा हुआ प्रवेश प्रपत्र लीजिए। उस पर दिए हुए चित्र में रंग भरिए। आप जलरंग, पोस्टर-रंग, खड़िया, रंगदार पेन्सिलें, जो चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं। रंग भरने के बाद प्रवेश प्रपत्र को पूरा भरिए। और कोलिनॉस टुथपेस्ट (सुपरवाइट या क्लोरोफ़िल) के किंग साइज या जायन्ट साइज के एक खाली डिब्बे, और या लार्ज साइज के दो खाली डिब्बों के साथ अपना प्रवेश प्रपत्र इस पते पर भेजिए: कोलिनॉस कलरिंग कॉन्टेस्ट, पोस्ट बैग नं. १००४६, बम्बई—१।

परिणाम: सब से सुन्दर रंग भरे हुए चित्रों को इनाम दिए जाएंगे। एक स्वतंत्र निर्णायक मंडली विजेताओं को चुनेगी। और उसका निर्णय अन्तिम और बन्धनकारी होगा। परिणाम की घोषणा इसी पत्रिका में की जाएगी, और प्रत्येक विजेता को व्यक्तिशः सूचित किया जाएगा।

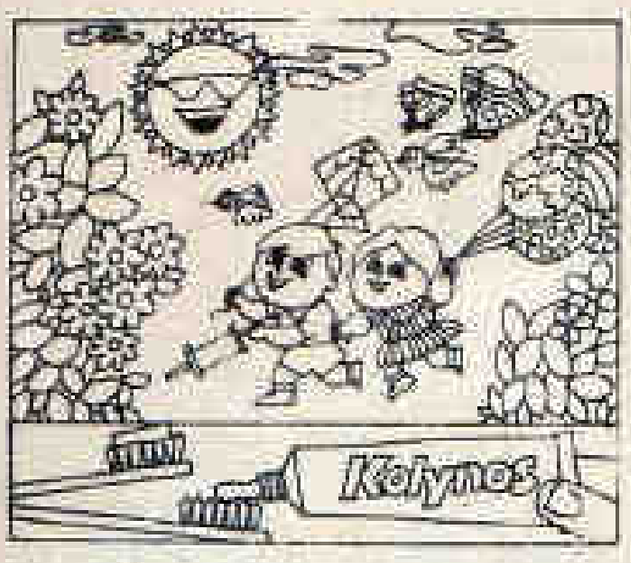

इस चित्र में रंग न भरिए
आपको अपने विक्रेता से पूरे साइज़ का चित्र मिलेगा।

अन्तिम तारीख़ :
१५ जून, १९६७

छुट्टियों को मनोरंजक बनाइए—आज ही अपने बच्चों को प्रवेश प्रपत्र दिलवाइए

ASP/GM/K-14/67 HN

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-६१

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० मई तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजनेका पता : **संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ६१) पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।**

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन
'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-६१

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

www.kissekahani.com

इतना अच्छा कि,
इस का यह मूल्य भी हो सकता है !

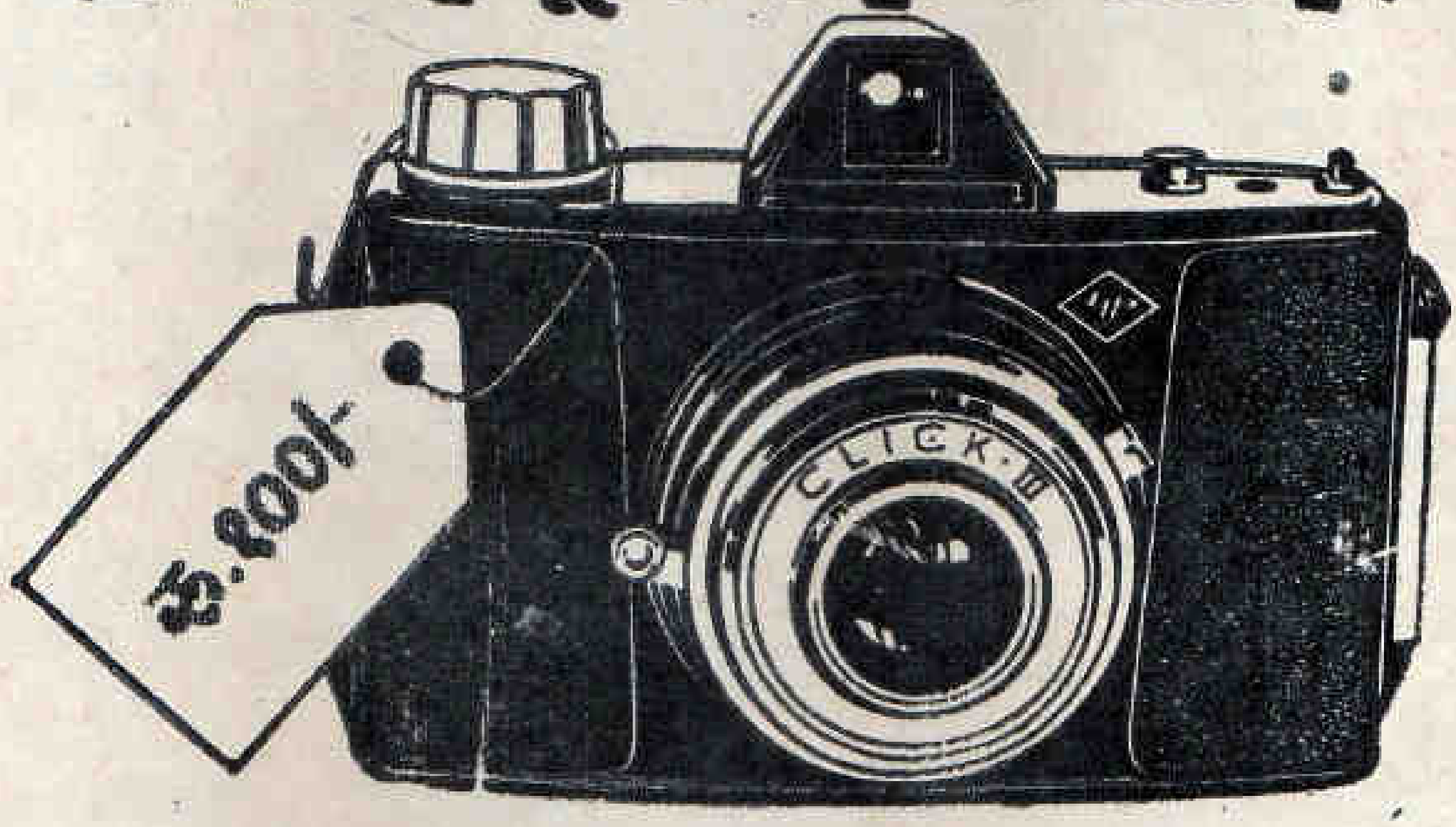

परन्तु फिर भी इस की असली कीमत रु. ५० से कम है।

कीजिये, एक अत्यंत कमाल और अति उपयोगी कैमरा प्रस्तुत है। यह पहिले ही दिन से आप को लगातार फोटोग्राफर बना देगा। आप को केवल इच्छित दृश्य की ओर इस का मुख कर के टिच कर देना है – न किसी हिसाब किताब की जरूरत और न ही कोई खिलाड़ी। और '१२०' साइज की रोलफिल्म भर कर ६×६ सेंटीमीटर जितनी बड़ी १२ फोटो खींच सकते हैं। आप को केवल रु. ४६.५० (स्थानीय कर अतिरिक्त) देने होंगे। संतोषजनक उपयोगिता के लिए आगफ़ा क्लिक III खरीदिये। सभी अच्छी फोटो की दुकानों पर मिलता है।

भारत में निर्माता: दि न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड, बड़ौदा

एकमेव वितरक:

आगफ़ा - गेवर्ट इण्डिया लिमिटेड

बम्बई - नई दिल्ली - कलकत्ता - मद्रास

Agfa®

क्लिक III

कम खर्च में
१२ - फ़ोटो का
विश्वविख्यात कैमरा

CMAI-85 HIN

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५८ का परिणाम

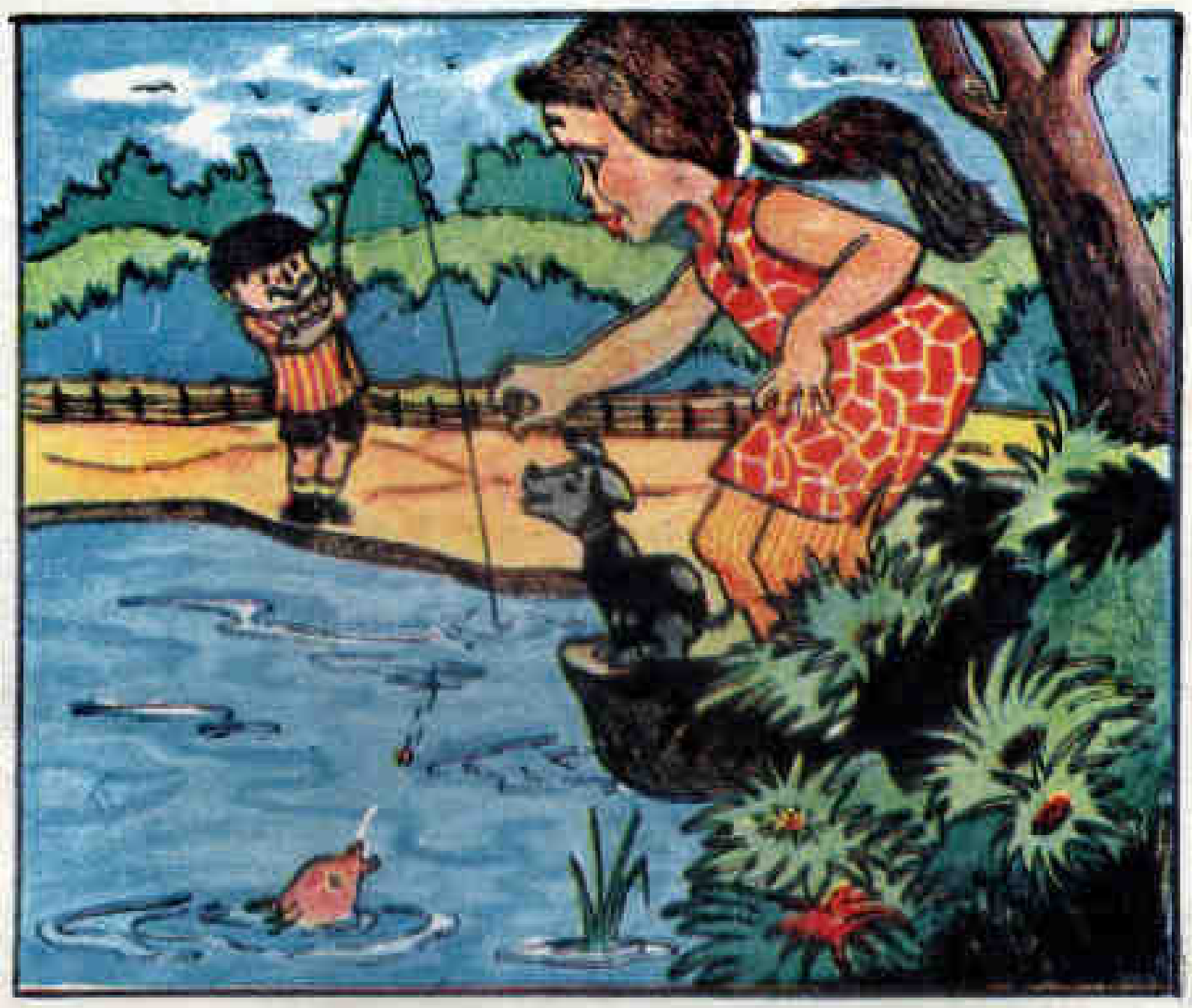

'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ५८ में जिस प्रतियोगीने सबसे बढ़िया रंग भरकर भेजे, उसका नाम है कुमारी अलका लक्ष्मण पेडणेकर, लेकिन उसके चित्रको हम पुरस्कृत नहीं कर सकते, क्योंकि उसे प्रतियोगिता नं. ५०, ५३, और ५७ में पुरस्कार मिल चुके हैं और हम अपनी घोषित नीतिके अनुसार तीनसे अधिक बार पुरस्कार नहीं देते। इसलिए कुमारी अलका लक्ष्मण पेडणेकरके बादके जिन तीन प्रतियोगियोंके चित्रोंको पुरस्कारके लिए चुना गया, उनके नाम और पते इस प्रकार हैं:

● कुमारी विनीता श्रीवास्तव, द्वारा श्री चन्द्रकुमार श्रीवास्तव, एस. डी. ओ, पी. डब्ल्यू. डी., बेरीनाग, अल्मोड़ा (उ. प्र.)।

● कुमारी आभा श्रीवास्तव, द्वारा श्री पी. सी. श्रीवास्तव, सी–२९, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ (उ. प्र.)।

● ज्ञानचन्द्र पोरवाल, द्वारा श्री गु दीन रंगवाले, हटिया बाजार, कानपुर–१ (उ. प्र.)।

इनमेंसे पहले दोनों प्रतियोगियोंके चित्रोंको यहां छापा जा रहा है। दोनोंने ही अपनी अपनी कल्पनासे मूल चित्रमें कुछ न कुछ जोड़ा है और मेल खाते रंगोंका चुनाव किया है।

शेष जिन बच्चोंके प्रयास सराहनीय रहे, उनके नाम ये हैं:

प्रदीपकुमार धवन, देहरादून; विश्वनाथ मिश्र, लखीमपुर खीरी; अशोककुमार दुलीचंद, बम्बई–२; कुमारी श्यामा सूद, नई दिल्ली–१; प्रदीपकुमार ऐरी, नई दिल्ली–१६; अशोककुमार, पटना–१; कुमारी तिलोत्तमा खंडलवाल, दुर्ग; नवीनानन्द नौटियाल, देहरादून; प्रभाकर नामदेव तामोरे, डहाणू; सुरेशकुमार शर्मा, अहमदाबाद–८; राबिन्स मार्क, देहली–६; रामचन्द्र मदान, रामपुर; हरपाल ढिल्लन, कानपुर–१० और हुकुमचंद गोयल, उज्जैन। ●

आपके राजा बेटे की प्रतिभा

भले ही किसी अन्य क्षेत्र में चमके, लेकिन आप तो उसे बढ़ावा देना ही चाहेंगे !

इसी तरह उसे बचपन ही से पैसे की नियमित रूप से बचत करने के लिए बढ़ावा दीजिए। पैसे की बचत के लिए **बैंक ऑफ इन्डिया** में विशेष सुविधाएँ हैं:

सेविंग्ज़ बैंक एकाउण्ट :—

- ४% प्रतिवर्ष ब्याज
- पैसा निकालने के लिए कोई नोटिस की ज़रूरत नहीं
- साल में १५० चेक
- १२ साल से ऊपर के बच्चे निजी खाता खोल सकते हैं

मियादी डिपॉज़िट :—

- ७% प्रतिवर्ष तक ब्याज

दी बैंक ऑफ इन्डिया लि

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

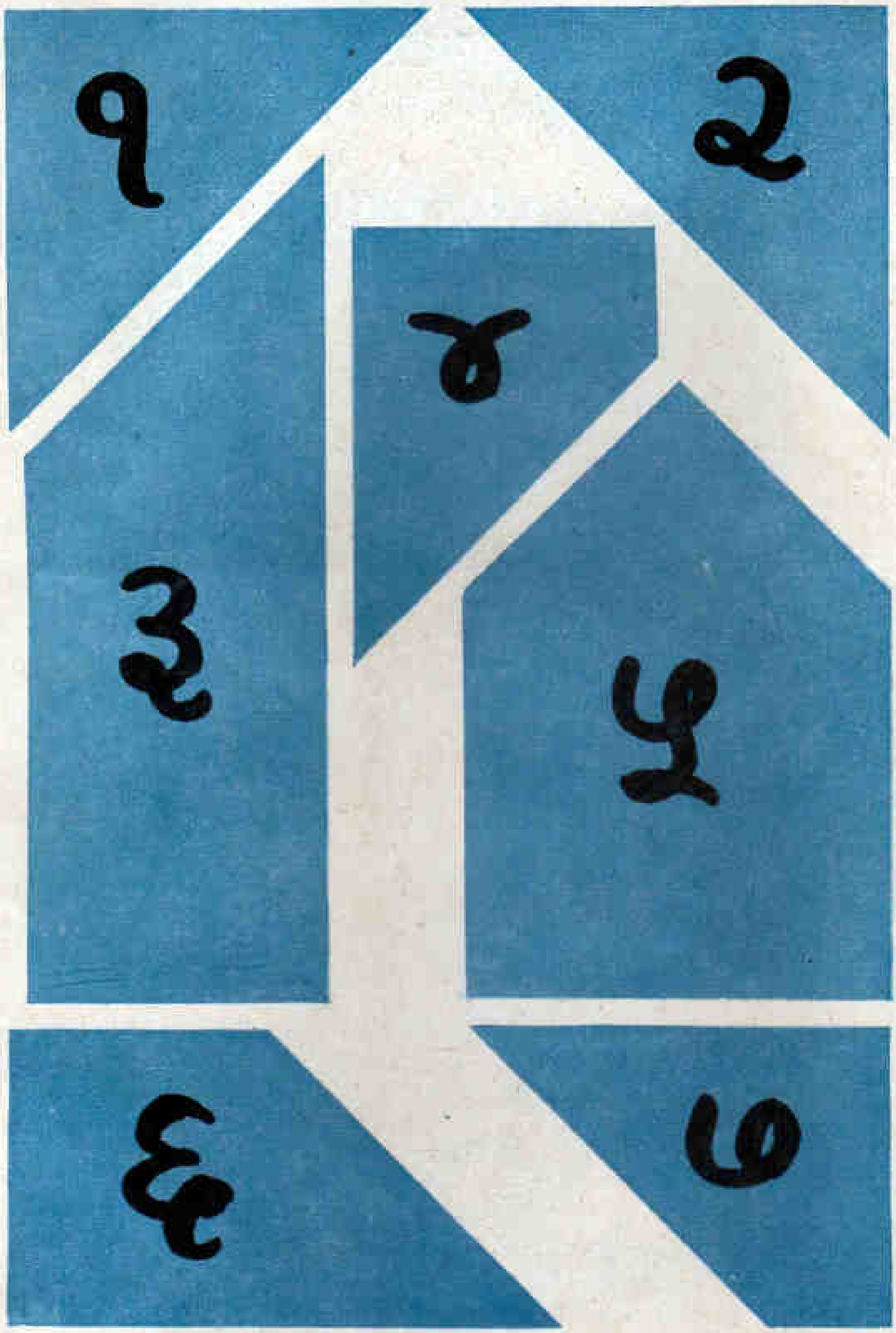

ऊपर ट्रेस करके गत्तेके टुकड़े अलग अलग काटो, तो लेई लगाने और सुखानेकी भी जरूरत नहीं।

इन टुकड़ोंको दोनों ओरसे, और किनारोंसे भी, किसी भी सुंदर रंगमें रंग लो और उनपर ऊपरवाले टुकड़ोंकी तरह ही नंबर डाल लो। टकड़ोंके दोनों तरफ नंबर पड़ने चाहिएं।

अब सामनेके पृष्ठपर नंबर पड़े हुए चित्रोंको देखो। पांच जानवरोंके चित्र बनानेके लिए टुकड़ोंको जिस क्रमसे रखना पड़ेगा वे क्रम इन चित्रोंमें दिए हुए हैं। अब 'पराग' बंद कर दो और फिरसे ये चित्र बनानेकी कोशिश करो। देखो बनते हैं या नहीं। इसी प्रकार तुम कुछ और भी ऐसे पशु-पक्षी बना सकते हो, जो यहां नहीं दिए हुए हैं। अपने भाई-बहनोंके साथ बारी बारीसे पांच पांच मिनिटका समय देकर यह खेल खेलो। जो अपने समयमें ज्यादा चित्रोंकी आकृतियां बना दे वही जीतेगा।●

आइए,
ऐसे पैसे का
सेवन करें
जो मन को
तृप्ति प्रदान
करदे।
GOLD
SPOT
गोल्ड
स्पॉट
Creative Unit-GS-87

शेर का पंजा (पृष्ठ १९ से आगे)

है अब उसकी चालाकी काम कर सकती है।

अंधेरेमें थोड़ा थोड़ा डर लग रहा था, लेकिन जितना ज्यादा डर अगली बातका था, उससे यह डर मालूम नहीं पड़ रहा था। इतनेमें दरवाजे पर ताला खुलनेकी आवाज आई। गिरीश आहिस्ता आहिस्ता जाकर दरवाजेके पीछे छिप गया। केहर टटोलता-टटोलता अंदर घुसा। गिरीश चुपकेसे बाहर खिसक लिया।

गिरीश अब आजाद था, उसने बाहर एक टैक्सी खड़ी देखी। समझ गया जरूर केहर उसे ले जानेके लिए लाया है यह टैक्सी।

उसे किधर जाना है, यह बात वह नहीं जानता था। सड़क इतनी उजियाली थी जिसपर दिन होनेका धोखा हो जाए। लेकिन उसे यह उजाला अच्छा नहीं लग रहा था। वह कहीं छिपकर बैठना चाहता था। वह जानता था केहर जब उसे वहां नहीं पाएगा तो भूखे शेरकी तरह अपने कमरेसे बाहर निकलेगा। माना वह शेरके पंजेसे निकल आया है लेकिन शेर कभी भी छलांग लगाता हुआ आकर उसे दबोच सकता है।

बेचैनी उसकी अभी दूर नहीं हुई थी। चलते चलते आकर अब जहां वह खड़ा हुआ था वहांसे चार तरफ रास्ते गए थे। किस ओर जाए और कहां जाए, वह खड़ा यही सोच रहा था। पता पोस्टकार्ड पर लिखा था, वह भी उससे छिन चुका था। क्या करे?

गिरीश खड़ा खड़ा यही सब सोच रहा था कि एकाएक उसे अपने कंधेपर किसीका हाथ महसूस हुआ। उसने घूम कर देखा, सामने केहर खड़ा था।

बात यह हुई कि जब केहरने कमरेमें माचिस की तीली जलाकर अच्छी तरह देख लिया कि छोकरा गायब है, तो वह लपककर बाहर आया। टैक्सी ड्राइवरने उसे बताया कि अभी अभी एक लड़का इधरसे गया है। वह टैक्सीपर सवार हो यहां आ पहुंचा।

गिरीश पर जैसे बिजली गिर पड़ी। शेरके पंजेने आखिर आ ही दबोचा। सड़क सुनसान थी। रात काफी बीत चुकी थी शायद। सुनसान सड़क पर गिरीश खड़ा था। और उसके कंधे पर हाथ रखे केहर खड़ा था। केहरने कहा, "वाह बेटे, कहीं इस तरहसे भागा जाता है। नहीं रहना चाहते थे, तो कह देते। मुझे फिक्र हो गई कि कहीं परेशानीमें न फंस जाओ।"

केहरकी मीठी बातोंमें गिरीश आने वाला नहीं था। लेकिन सुनसान सड़कपर, वह जानता था, केहर कहीं ज्यादा ताकतवर है और वह बेहद कमजोर। इसलिए उसने ऐसा भाव दिखाया जैसे उसे केहरपर अविश्वास न हो। बोला, "नहीं, चाचा, दरअसल मैं बंद कमरेमें सोया सा या उकता गया था। सोचा, थोड़ा-सा घूम आऊं। वैसे मुझे आपके यहां बहुत आराम है।"

"अब तो घूम चुके, चलो वापस चलें।"

"हां, चाचा, चलो चलें।" वह केहरके साथ चल पड़ा। फिर चलते चलते रुककर बोला, "चाचा, पेटमें दर्द हो रहा है, यहां सोडावाटर मिलेगा कहीं?"

केहर उसे एक होटलमें लिवा ले गया। होटल भी करीब करीब सुनसान था। केवल दो-तीन लोग बैठे थे। वे सूरतसे ऐसे डरावने लग रहे थे कि गिरीश सिहर उठा। बाप रे, इनसे तो देखने में केहर ही अच्छा है, कमसे कम डर तो नहीं लगता। वह जानबूझकर दरवाजेके पास बैठा। बोला, "चाचा, यहां तो मुझे बहुत डर लग रहा है।"

केहर समझ गया, दूसरे लोगोंके काले काले कपड़े और चेहरे देखकर गिरीश डर रहा था। उसने हिम्मत बंधाई, "तभी तो तुम्हें घरसे चला गया देख मैं फिक्रमें पड़ गया था। रातमें भले आदमी नहीं घूमते। तुम डरो मत, मैं जो तुम्हारे साथ हूं।"

गिरीश सोडावाटर पी रहा था और सोच रहा था, क्या करे, कैसे केहरके पंजेसे निकले। दिन होता, तो शोर मचा कर भीड़ इकट्ठी कर लेता। इस रातमें किसीका भी भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसा न हो कि कहीं आसमानसे टपककर खजूरमें अटक जाए। नहीं, शोर मचानेसे कोई फायदा नहीं। कोई और ही तरकीब लड़ानी होगी।

केहर उसपर नजर टिकाए बैठा था। गिरीश मन ही मन तरकीब सोच रहा था। न चाहते हुए भी सोडावाटरकी बोतल खाली हो चुकी थी। बैरा आया। केहर उसे पैसे देनेमें लगा। गिरीशने झटपट तय किया, एक कोशिश और, जो हो सो हो। और वह एक झपाटेमें बाहर निकल आया। उसके बाद उसने जो दौड़ लगाई वह हिरन भी मुश्किलसे ही लगाता होगा। केहर काफी पीछे छूट गया। वह रुका नहीं, एक बार पीछे घूमकर देखता और दुगुनी तेजीसे भागने लगता।

केहरके साथ एक कठिनाई थी। अगर वह भागता, तो लोगोंका ध्यान उसकी तरफ खिंचता। इससे लोगोंको शक हो जाता। केहर नहीं चाहता था कि लोगोंके सामने गिरीश पकड़ा जाए और वह सारी पोल खोल दे। इसलिए दौड़में उसे पीछे रह जाना पड़ा।

तभी गिरीशने भागते भागते पीछे मुड़कर दूरसे देखा, केहर एक टैक्सीमें बैठ रहा था। गिरीशके छक्के छूट गए। अब कोई उपाय नहीं। इस बार फंदेमें फंसा, तो छुटकारा मिलना मुश्किल हो जाएगा। कोई चालबाजी और कोई तरकीब काम नहीं करेगी। सड़क सीधी चली गई थी। कोई गली भी नहीं थी जिसमें घुस जाता। उसकी नजर एक पेड़ पर पड़ी। वह उसपर फुर्तीसे चढ़ गया। यह तो उसका पुराना खेल था।

और सचमुच जब केहरकी टैक्सी बहुत दूर चली गई, तब गिरीशकी जानमें जान आई। (क्रमशः)

खेल और रेल

ग्रांड ट्रंक, तूफान मेल-सी,
घरर-घरर घहराती,
चली जा रही रेल हमारी,
सरपट दौड़ लगाती!
खेल खेल में हम बच्चों का,
हो जाता है मेल;
और मेल से चलने लगती,
छक-छक करती रेल!

—भीष्मसिंह चौहान

www.kissekahani.com

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

पढ़ूं भला क्या?

टन्-टन् टन्-टन् घंटी बोली,
चूहों का स्कूल!
बूढ़ा चूहा है कुर्सी पर,
लिये हाथ में रूल!

टीकू पुस्तक रखकर बोला,
"छुट्टी दें, गुरुदेव!
पढ़ूं भला क्या, मुंहमें पानी,
पाकिट में है सेब!"

—विष्णुकान्त पाण्डेय

बेसूँड़ हाथी

जो जेब न होती कुरते में,
तो पैसे भला कहां धरते?
जो घास न होती धरती पर,
तो गदहे-घोड़े क्या चरते?

जो हवा न होती यहीं कहीं,
तो गुब्बारे में क्या भरते?
जो सूंड़ न होती हाथी के,
तो हाथी का हम क्या करते?

बेसूंड़ न हाथी खा पाता,
बेसूंड़ न हाथी पी पाता,
कहने को हाथी कहलाता,
पर बिना हाथ का हो जाता!

वह मुंह ललचाता रह जाता,
दो दांत दिखाता रह जाता,
फायदा फकत इतना होता—
उसको कि जुकाम न हो पाता!

—रघुवीर सहाय

अनोखा घोड़ा!

अजब, अनोखा मेरा घोड़ा,
अंदर-बाहर सरपट दौड़ा;
इसे पछाड़ा, उसको छोड़ा,
पहुंचेगा सीधे अल्मोड़ा!

खाता घास न दाना-पानी,
नहीं मुझे होती हैरानी,
इसके ऊपर लगे न काठी,
यह है नानाजी की लाठी!

—सुधाकर दीक्षित

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-६१

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० मई तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजनेका पता : संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ६१) पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-६१

नाम और उम्र ----------

पूरा पता : ----------

यहां से काटो

www.kissekahani.com

'आख़िर यह इतनी अधिक सफ़ेदी आती कहाँ से है!'

टिनोपाल
सबसे अधिक सफ़ेदी आती है।

आख़िरी बार कपड़े खँगालते समय बस ज़रा-सा टिनोपाल मिलाइए; फिर देखिए, आपके सफ़ेद कपड़ों में कैसी चमकदार सफ़ेदी आ जाती है! शर्ट्स, साड़ियाँ, तौलिये, चद्दरें यानी सभी कपड़े और भी अधिक सफ़ेद हो उठते हैं। और इस अधिक सफ़ेदी के लिए आपका ख़र्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं। एक चौथाई छोटा चम्मचभर टिनोपाल बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करने के लिए काफ़ी है।

वैज्ञानिक विधि से बनाया गया व्हाइटनर, टिनोपाल हमेशा इस्तेमाल कीजिए। यह वस्त्रों को किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहुँचाता।

टिनोपाल अब सुहरबन्द एल्युमिनियम फॉइल पैकेट में भी मिलता है।

एक पैकेट बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करता है। इस्तेमाल करने में आसान, इस पैकेट से न कोई फ़ज़ूलख़र्ची होती है, न कोई झंझट।

टिनोपाल सी. आर. गायगी, एस. ए. बाल स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।
मुद्रित गायगी लिमिटेड, पो. आ. बॉक्स ५६४, बम्बई-१ बी आर

Shilpi SG 223 A Hin.

बनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साहू द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित तथा ज्ञानप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस ३, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३ / १ और १३ / २, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट
लन्दन ऑफिस: ३, अल्ड माल स्ट्रीट, इंग्लैण्ड १

REGD. No. MH 468

आभार :
डा. देशदीपक